इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 19 ■ 1-15 अगस्त, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❒ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❒ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❒ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली 110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

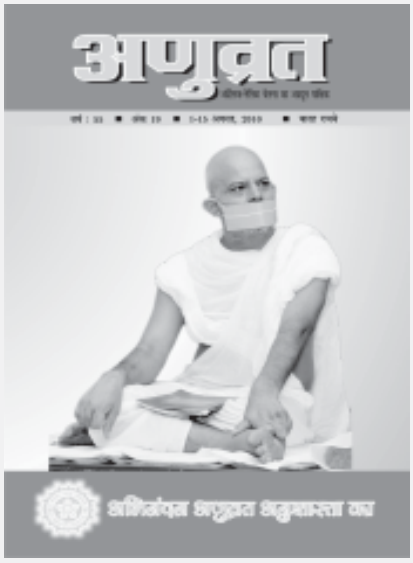

◆ सपना वसुधैव कुटुम्बकम् का	*आचार्य महाप्रज्ञ*	3
◆ *स्वस्थ लोकतंत्र*	*आचार्य महाश्रमण*	5
◆ यह कैसी आजादी ?	*डॉ. मदन डांगी*	8
◆ बापू के शिष्य	*सुरेश आनन्द*	10
◆ वैश्विक परिदृश्य : सवाल हमारी अस्मिता का	*हरिश्चन्द्र व्यास*	12
◆ साम्प्रदायिक सौहार्द	*कृष्णचंद्र टवाणी*	15
◆ अपेक्षा है राष्ट्रीय चेतना की	*मुनि चैतन्यकुमार 'अमन'*	16
◆ बिन पानी सब सून	*जसविंदर शर्मा*	17
◆ बोतलबंद पानी	*स्वामी वाहिद काज़मी*	18
◆ यशलिप्सा की पीड़ा	*अशोक सहजानन्द*	19
◆ सिसकते सामाजिक सरोकार	*सुषमा जैन*	20
◆ ....अब कचरे की भी होगी लूट	*आशीष वशिष्ठ*	22
◆ श्वास रोग और प्रेक्षा चिकित्सा : 2:	*मुनि किशनलाल*	26
◆ मेहनत-मजदूरी को मजबूर	*डॉ. अनामिका प्रकाश*	28
◆ उलझे सवाल	*कृष्ण कुमार वर्मा*	30
◆ आचार्य महाश्रमण : एक विरल सत्यान्वेषक	*डॉ. बच्छराज दूगड़*	40

■ स्तंभ

◆ संपादकीय	2
◆ प्रेरणा	6
◆ कविता	7
◆ राष्ट्र चिंतन	24
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	29
◆ अणुव्रत आंदोलन	33-39

www.terapanthinfo.com

शताब्दी वर्ष के मायने : 2 :

आजादी के समय के तत्कालीन जर्जर सामाजिक ढांचे को बदलने की दिशा में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने अणुव्रत-आंदोलन एवं नया मोड़ के माध्यम से नई दिशा दी जिसके फलस्वरूप रूढ़िग्रस्त समाज बदला, पर्दाप्रथा टूटी, विवाह-जन्म-मृत्यु से संबंधित रूढ़ियों के चक्रव्यूह से आम आदमी को निजात मिली, बाल विवाह, अनमेल विवाह के विरुद्ध आवाज उठी, प्रदर्शन-आडम्बर का ग्राफ नीचे आया, मृत्युभोज बंद हुआ और आचार्य तुलसी के आह्वान पर समाज ने सामाजिक क्रांति की दिशा में चरण न्यास किया।

आचार्य तुलसी के आह्वान को सुन तत्कालीन अभिजात्य वर्ग चौंका लेकिन तुलसीजी ने अर्थ-सम्पन्न एवं अर्थ-विपन्न लोगों के बीच एक सामंजस्य स्थापित करते हुए उन्हें बदलने को प्रेरित किया। यह आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं सक्षम नेतृत्व का ही प्रभाव था कि आडम्बर एवं प्रदर्शन की होड़ टूटी, संयम ही जीवन है का स्वरनाद गूंजा और नारी समाज घूँघट छोड़ कर पर्दे से बाहर आया। तुर्की के कमाल पाशा ने बंदूक की नोंक पर मुस्लिम महिलाओं से बुर्का और पुरुषों के सिर से तुर्की टोपी छुड़वाई थी पर आचार्य तुलसी ने बिना बंदूक के, बिना भय के, हृदय परिवर्तन का दिशा सूत्र देते हुए हजारों-हजार महिलाओं के घूँघट और विधवाओं के काले परिधान को बदलवाया जो सामाजिक क्रांति का गौरवमयी पृष्ठ है। प्रारंभ में अर्थ सम्पन्न वर्ग इससे सहमत नहीं था पर आचार्य तुलसी के दिशा बोध के साथ धीरे-धीरे अर्थ सम्पन्न एवं अर्थ विपन्न वर्ग ने हवा के रुख को पहचाना और संघर्ष के मार्ग को छोड़ परिवर्तन के मार्ग को स्वीकार किया।

समाज आज पुनः पुरानी स्थितियों की तरफ बढ़ रहा है। लम्बा अवकाश पाकर विवाह एवं अन्य सामाजिक अवसरों पर वृहत्भोज एवं आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन की प्रक्रिया पुनः चल पड़ी है। यह बढ़ती हुई आर्थिक स्पर्द्धा का परिणाम है। अतः समाज एवं सामाजिक व्यवस्थाओं पर पुनर्चिंतन करना आवश्यक हो चला है। स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति स्वस्थ हो और इसके लिए उन सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव हो जिनके कारण व्यक्ति भ्रष्ट आचरण करता है। आज धनी एवं चापलूस लोग हमारे आदर्श बन बैठे है जिनकी कथनी और करनी में भारी अंतर है। इसी कारण सामाजिक संस्थाओं में क्लब-संस्कृति हावी होती जा रही है और समाज में अपेक्षित बदलाव के स्थान पर एक ठहराव-सा आ गया है। मात्र भौतिक संसाधनों की चकाचौंध को ही विकास माना जा रहा है। इस चकाचौंध में समाज की आधारभूत इकाई 'व्यक्ति' खो गया है और हम पुनः वर्ग संघर्ष की तरफ बढ़ रहे है।

समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि संस्थागत एवं समाजगत व्यवस्थाओं में बदलाव आएं। इसके लिए स्वाभिमानी एवं सिद्धांतवादी लोग ही सक्षम है जो परिवर्तन की धारा बहाते है और समाज बदलता है। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने सिद्धांतवादी कार्यकर्त्ताओं एवं अमीर वर्ग के बीच एक सेतुबंध बना, सामंजस्य स्थापित कर समाज में परिवर्तन की धारा प्रवाहित की। परिस्थितियां आह्वान कर रही है कि हम पुनः एक सामाजिक क्रांति की दिशा में कदम बढ़ाये। तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष का मायना यही है कि समाज सुधार की दिशा में कदम उठे। इस दृष्टि से समूचा समाज अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण की ओर निहार रहा है और उनके क्रांतिकारी कदमों की प्रतीक्षा कर रहा है।

अणुव्रत अनुशास्ता पदाभिनंदन के अवसर पर आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ की यशस्वी परम्परा में आचार्य महाश्रमण की भावभरी अभिवंदना।

• **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

सपना वसुधैव कुटुम्बकम् का

आचार्य महाप्रज्ञ

समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने की आकांक्षा अनेक व्यक्तियों में है। परिवर्तन के लिए अनेक कल्पनाएं, विकल्प और संकल्प हैं। सबका फलितार्थ लगभग समान है। अहिंसक समाज की रचना, स्वस्थ समाज की रचना, आध्यात्मिक समाज की रचना, समाजवादी अथवा साम्यवादी समाज की रचना। जिस समाज में चोरी, डकैती, लूट-खसोट जैसी अपराध की प्रवृत्तियां न हों, जिसमें सबको अपनी प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने की सुविधा प्राप्त हो, जिसमें सबको सम्मान से जीने का अधिकार उपलब्ध हो, उस समाज रचना का सपना स्वर्गीय सुख की कल्पना से कम नहीं है किन्तु मानवीय स्वभाव का अध्ययन करने पर निष्कर्ष निकलता है। इस सपने को पूरा करना सरल कार्य नहीं है। श्री के. पी. गुप्ता ने सुझाव दिया है 'मेरे तुम्हारे धन का भेद खत्म हो जाए तो ऐसे समाज में धन छीनने का सवाल ही खत्म हो जाएगा, हिंसा भी समाप्त हो जाएगी। क्या ऐसा समाज संभव है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ऐसा ही समाज है जिसमें तेरे मेरे धन का भेद नहीं है।'

वसुधैव कुटुम्बकम्-यह आध्यात्मिक भूमिका का अनुचिन्तन है। अध्यात्म के शिखर पर पहुँचने वाले व्यक्ति के लिए कोई अपना और पराया नहीं होता। तब मम का भेद समाप्त हो जाता है। इस भूमिका की अनुभूति और उसकी अभिव्यंजक शब्दावली को हम समाज की भूमिका पर सीधा नहीं उतार सकते। समाज की भूमिका पर जीने वाले व्यक्तियों में अध्यात्म का जीवन जीने वाले पाँच या दस प्रतिशत से अधिक नहीं होते। शेष नब्बे प्रतिशत लोग काम और अर्थ को प्रधान मान कर जीते हैं। जहाँ काम और अर्थ की चेतना प्रबल है वहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एक आकर्षक सूक्त के रूप में जीवित रहता है, समाज व्यवस्था को बदलने में वह सफल नहीं होता। समाज व्यवस्था पहले मस्तिष्क में बदलती है, फिर स्थूल जगत में बदलती है। समाज व्यवस्था में परिवर्तन चाहने वाले अच्छे सिद्धांतों, वचनों और प्रवचनों को सामने रखकर इतिश्री मान लेते हैं। सिद्धांत और विचार आकार लिए बिना ही निरंजन-निराकार बन जाते हैं।

हम यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर व्यास के शब्दों का पुनरुच्चार करें ऊर्ध्वबाहु विरोम्येष, न च कश्चित् श्रृणोति माम्।

व्यास ने जिस असफलता का अनुभव किया, वह असफलता उन सबके सामने है, जो अपनी बात जनता को सुनाना चहाते हैं। जनता इसिलए नहीं सुन रही है कि श्रवण का नियमण करने वाला मस्तिष्क सुनने का निर्देश नहीं दे रहा है। वह सुनने का निर्देश इसिलए नहीं दे रहा है कि उससे सुनने का अनुरोध नहीं किया गया है, उसे प्रशिक्षित नहीं किया गया है।

हमारे सामने एक बड़ा प्रश्न है हम प्रशिक्षण और परिवर्तन दोनों का योग क्यों नहीं बिठा पा रहे हैं?

काम, संग्रह, अधिकार की भावना-ये मनुष्य की मौलिक मनोवृत्तियां हैं। सुविधावाद, सम्मान, प्रतिष्ठा, अहं ये उसके वैयक्तिक अथवा सामाजिक मूल्य हैं। इन मौलिक मनोवृत्तियों और मूल्यों का सामाजिक स्तर पर परिष्कार हुए बिना कोई भी परिवर्तन स्थायी नहीं बन सकता। सैनिक-क्रांति या जन-क्रांति के रूप में विश्व में अनेक क्रांतियां हुई हैं। क्रांति के काल में जो आमूलचूल बदलने की भावना होती है, वह धीमे-धीमे मंद होने लग जाती है। दीप में तेल न उड़ेला जाए तो एक समय के बाद ज्योति मंद होने लगती है। बैटरी को चार्ज न करने पर जो स्थिति बनती है, वही स्थिति इन परिवर्तनों और क्रांतियों की होती है। अगली पीढ़ी में तो मंदता आती ही है पर परिवर्तन लाने वाली वर्तमान पीढ़ी भी उससे बच नहीं पाती। उससे बचने का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपाय है प्रशिक्षण। प्रशिक्षण का क्रम सतत चलता रहे, व्यवस्था और दण्ड संहिता के साथ हृदय-परिवर्तन की संहिता का प्रयोग होता रहे तो परिवर्तन में स्थायित्व लाया जा सकता है।

मानव स्वभाव में परिवर्तन हो सकता है, उसका दृष्टिकोण बदल सकता है, इसमें संदेह नहीं है। संदेह इसमें है कि उच्चासन पर विराजमान लोग विधान, विचार और प्रचार के आधार पर समाज की व्यवस्था को बदलना चाहते हैं, गरीबी को मिटाना चाहते हैं, आर्थिक समानता को लागू करना चाहते हैं। हृदय परिवर्तन विहीन यह चिन्तन खतरे से खाली नहीं है। जो परिवर्तन लाना चाहते हैं, सबसे पहले उनका हृदय परिवर्त होना चाहिए। इतिहास सामने है आर्थिक समानता का प्लुत उच्चारण करने वाले अर्थ-संग्रह, सुविधावाद तथा

www.terapanthinfo.com

भोगविलास में लिप्त पाए गए हैं। अर्थ विषयक मामलों में बड़े-बड़े घोटाले अधिकार संपन्न व्यक्तियों ने किऐ हैं। यदि वे लोग मस्तिष्कीय प्रशिक्षण अथवा मस्तिष्कीय परिवर्तन की बात अधिकार के बाद अधिकार पर आते तो शायद ऐसा नहीं कर पाते।

उत्पादन और वितरण की संतुलित प्रणाली का विकास होने पर समाज की विषमता पूर्ण व्यवस्था को बदला जा सकता है, यह सिद्धांत अनेक चिन्तकों ने निरूपित किया है। विषमतापूर्ण समाज व्यवस्था को बदलने के लिए यह एक उपयुक्त कदम है। इसे अस्वीकृति देने की अपेक्षा नहीं है। सापेक्षता की दृष्टि से इसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। कारण की समग्रता होने पर ही कार्य की निष्पत्ति होती है। समग्रता के लिए मानवीय दृष्टिकोण, चिन्तन और वृत्तियों का परिवर्तन बहुत आवश्यक है। समानतापूर्ण समाज व्यवस्था की चाह अल्पकालिक नहीं है। बहुत लम्बे समय से अनेक चिंतनशील व्यक्ति इस दिशा में सोचते रहे हैं, उपाय सुझाते रहे हैं, प्रयोग करते रहे हैं फिर भी निष्पत्ति सामने नहीं है। आखिर रहस्य क्या है? इष्ट क्यों नहीं मिल रहा है?

कारण की खोज करने पर तीन तथ्य सामने आते हैं

मानव स्वभाव की विचित्रता।

साधन-सामग्री की अल्पता।

मानवीय स्वभाव को बदलने की अप्रयत्न, मस्तिष्कीय प्रशिक्षण अथवा हृदय परिवर्तन की उपेक्षा।

सत्ता पर आरूढ़ लोग दंड-शक्ति में विश्वास करते हैं, इसलिए वे हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया में विश्वास नहीं करते। समाज के प्रमुखजनों की स्थिति भी लगभग सत्तासीन जैसी है। धर्म के गुरु समाज से मुक्त हैं, इसलिए वे समाज की व्यवस्था को बदलने में कम रुचि लेते हैं। शिक्षक, साहित्यकार, लेखक और पत्रकार, जो प्रबुद्ध वर्ग है, वह अपने जीवन की समस्या में उलझा हुआ है। इसलिए प्रबुद्ध वर्ग द्वारा समाज व्यवस्था को बदलने की बात शब्दों तक सीमित है। वह वाङ्मय की सीमा का अतिक्रमण कर कर्म की सीमा में उतर नहीं पाती। सोचना मन का कार्य है इसीलिए हर मनस्वी व्यक्ति चिन्तन करता है। हर बुद्धिमान आदमी अच्छे बुरे का विवेक करता है। हर कर्मशील व्यक्ति अच्छा व्यक्ति अच्छी स्थिति का निर्माण करना चाहता है किन्तु मूल समस्या नहीं सुलझा पा रहा है। सबका समन्वय नहीं हो रहा है। मानवीय स्वभाव की विचित्रता है इसलिए प्रथम चरण में दण्ड शक्ति का अस्वीकार व्यावहारिक नहीं होगा। व्यावहारिक भले न हो किन्तु केवल दंड शक्ति के आधार पर साम्यपूर्ण समाज व्यवस्था की संरचना नहीं की जा सकती इसलिए हमें मस्तिष्कीय प्रशिक्षण अथवा हृदय परिवर्तन की प्रविधियों पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इस दिशा में कोई भी एकल प्रयत्न सफल नहीं होगा। अपेक्षित यह है कि समाज के विविध व्यवस्थाओं से जुड़े हुए लोग नव-निर्माण की उपनिषद् आयोजित करें। चिन्तन और क्रियान्विति-दोनों की मशाल हाथ में लेकर अंधकार को उजाले में बदल दें।

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए

संकल्प करें

❒

मैं रिश्वत नहीं दूंगा।

मैं व्यवहार और व्यवसाय में प्रामाणिक रहूँगा।

आवाज़ उठाओ, भ्रष्टाचार मिटाओ

अणुव्रत आन्दोलन

www.terapanthinfo.com

स्वस्थ लोकतंत्र

आचार्य महाश्रमण

लोकतंत्र प्रशासन की एक सुंदर प्रणाली है। यह प्रणाली प्रायः अहिंसा पर आधारित है। लोकतंत्र में अनेक लोग होते हैं, इसलिए कभी वैमत्य भी हो सकता है और ऐकमत्व भी हो सकता है। किन्तु सरकार में स्थिरता रहनी चाहिए। वैमत्य के कारण अथवा पारस्परिक विद्वेष के कारण सरकार गिर जाती है तो कठिन स्थिति पैदा हो जाती है। पाँच वर्षों के लिए एक सरकार सत्ता संभालती है, किन्तु जब बीच में ही चुनाव की स्थिति बन जाती है तो हमें न जाने राष्ट्र की कितनी शक्ति खर्च हो जाती है। इस मध्यावधि चुनाव की स्थिति को अच्छा नहीं माना जा सकता। पाँच वर्षों तक एक सरकार नहीं चलने का प्रमुख कारण है कि लोकतंत्र में अनेक दल हो जाते हैं और वे स्थिति को खराब कर देते हैं। जहाँ अनेक दल साथ हों, वहाँ राष्ट्रहित की भावना हो, अनपेक्षित विरोध न करने की भावना हो और अगर विरोध भी हो तो सत्य के लिए, देशहित के लिए हो तो वह विरोध भी लाभदायी बन सकता है। जो विरोध मात्र सत्ता पर आसीन सरकार को गिराने के लिए ही किया जाता है, वह विरोध राष्ट्र के लिए अहितकर बन जाता है।

मैं कई बार सोचता हूँ कि एक पार्टी मजबूत आ जाए तो सरकार निर्विघ्न रूप से चल सकती है। अनेक दल हो और साथ में अनेकांत हो तो कोई कठिनाई वाली बात नहीं लगती। किन्तु अनेकांत के अभाव में अनेक दलों का होना लाभदायी नहीं लगता। अनेकांतविहीन अनेक पार्टियों के हो जाने से सरकार की मजबूती में अंतर आ जाता है। लोकतंत्र में गिरावट भी आ सकती है। अनेक दलों की व्यवस्था में जब स्वार्थपूर्ति में खतरा दिखाई देता है तो लगाम खींच ली जाती है और सरकार गिरा दी जाती है।

कुछ दलों के आधार पर सरकार का पतन भी हो सकता है और कुछ दलों के आधार पर सरकार बनी भी रह सकती है। जहाँ इस प्रकार की स्थिति होती है, वहाँ सरकार को जैसे-तैसे बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। ऐसी स्थिति राष्ट्र के लिए हितकारी और मंगलकारी नहीं हो सकती।

13 अगस्त, 2002 को भूतपूर्व महामहिम राष्ट्रपति महोदय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अहमदाबाद में प्रवासित युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ के दर्शन किए। वार्तालाप के दौरान आचार्यप्रवर ने कहा 'अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने धर्म और सम्प्रदाय की समस्या के संदर्भ में कहा था कि धर्म को पहले स्थान पर और सम्प्रदाय को दूसरे स्थान पर रखा जाए। तभी देश का भला हो सकेगा और समस्याओं का समाधान हो सकेगा। वर्तमान संदर्भ में मैं इस बात को इस प्रकार बदल कर कहना चाहता हूँ कि राष्ट्र का स्थान पहला हो और दल का स्थान दूसरा हो, तभी देश की समस्याओं का समाधान हो सकेगा।' यह बात सुनते ही राष्ट्रपति महोदय अत्यन्त भाव-विभोर होकर बोले 'आचार्यजी! आप सम्प्रदाय से ऊपर उठे हुए हैं। आपके पास जो भी नेता आएं, उन्हें यह बात जरूर बताएं।

लोकतंत्र में कर्त्तव्यपरायणता नहीं होती, अनुशासनबद्धता नहीं होती, तो लोकतंत्र का देवता विनाश अथवा मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। लोकतंत्र में कर्त्तव्यपरायणता हो, अनुशासन-बद्धता हो और राष्ट्रहित की भावना हो तो लोकतंत्र बहुत अच्छा काम कर सकता है।

लोकतंत्र में प्रशासक जनता ही होती है। जनता के द्वारा निर्वाचित व्यक्ति ही शासन संभालता है। जनता के द्वारा ही जनता का शासन होता है। ऐसी स्थिति में प्रशासन करने वाले व्यक्ति अच्छे आएं, उनका स्तर ऊंचा हो, तो देश का भला हो सकता है।

सरकार के लिए दो बातें आवश्यक हैं स्थिरता और स्वच्छता। गतिशीलता को भी स्थिरता का आधार अपेक्षित होता है। स्थिरताविहीन गतिशीलता हो ही नहीं सकती। यदि गति करना है तो किसी स्थिर तत्त्व का आलम्बन लेना ही होगा। चक्का घूमता है, कील स्थिर रहती है। कील की स्थिति चक्के की गति में सहयोगी बन जाती है। आदमी सीढ़ियां चढ़ता है, गति करता है, किन्तु सीढ़ियां स्थिर रहती हैं इसलिए आदमी ऊपर चढ़ने में सफलता प्राप्त कर लेता है। सरकार में यदि अस्थिरता रहती है तो वह देश के लिए नुकसानदेह बन सकती है और स्थिरता होती है तो वह जनता के विकास में सहयोगी बन जाती है। सरकार में यदि स्थिरता है, किन्तु अस्वच्छता है तो भी विचारणीय बात हो जाती है। इसलिए स्थिरता भी हो और स्वच्छता भी हो, दोनों तत्त्वों का समावेश हो तो कुछ हित की बात हो सकती है। जैसे पानी में अस्थिरता हो और मलिनता

www.terapanthinfo.com

हो तो पानी के भीतर क्या है, देखा नहीं जा सकता है। वैसे ही सरकार में अस्थिरता और अस्वच्छता हो तो देशहित की बहुत आशा नहीं की जा सकती। इसलिए देश के हित के लिए, व्यक्ति के हित के लिए लोकतंत्र स्वस्थ हो, अनेकांत और अहिंसा पर आधारित हो, एक-दूसरे को गिराने का लक्ष्य न हो, बल्कि सहयोगपरक दृष्टिकोण हो तो लोकतंत्र देश के लिए वरदायी बन सकता है। हमारा हिन्दुस्तान विकासशील देश से विकसित देशों की श्रेणी में आ सकता है।

नदी के दोनों किनारों पर दो नगर बसे हुए थे। एक नगर की प्रजा बहुत सुखी थी, राज्य का बहुत विस्तार हो रहा था, चारों तरफ उसकी यशोकीर्ति फैल रही थी। दूसरे नगर की प्रजा दुःखी थी, राज्य का विस्तार भी नहीं था और उपद्रव भी फैल रहे थे। पहले नगर के अधिकारी से सुख-सम्पन्नता का कारण पूछने पर उसने कहा मेरे पास चार चौकीदार हैं 1. सत्य, 2. प्रेम, 3. न्याय, 4. त्याग।

पहला चौकीदार मुझे कभी भी असत्य बोलने नहीं देता, जिसके कारण मैं प्रजा का विश्वासपात्र बना हुआ हूँ। दूसरा चौकीदार मुझे घृणा और तिरस्कार से बचाता है, जिसके कारण मैं सबके साथ प्रेम से बोलता हूँ। इसलिए प्रजा मुझे बहुत स्नेह, सत्कार और सहयोग देती है। मेरा तीसरा चौकीदार मुझे अन्याय से दूर रखता है। नीतिपूर्वक कमाई के कारण मेरे राज्य में धन की बहुत वृद्धि हुई है। चौथा चौकीदार मुझे हमेशा स्वार्थ-चेतना से ऊपर उठाए रखता है। इसलिए मेरा यश चारों दिशाओं में फैल रहा है।

भारत की जनता में भी सत्य के प्रति आस्था हो, प्रेमपूर्ण व्यवहार हो, न्यायमार्ग पर चलने का साहस हो और त्याग के पथ पर बढ़ने का संकल्प हो तो देश का बहुत विकास हो सकता है।

प्रेरणा

परमवीर चक्र

रीमा पठानिया अपने पति संजय पठानिया का परमवीर चक्र प्राप्त कर भारी कदमों से पिछली पंक्ति में आ बैठी। अभी दो वर्ष पूर्व वह संजय के साथ इसी 15 अगस्त की परेड देखने आई थी। बात-बात में संजय हर सैन्य टुकड़ी के गुजरते कह रहे थे ''देखा रीमा, कितनी अलग शान होती है फौज की, क्या चाल है, क्या शान है, अरे क्या व्यक्तित्व।'' उनकी खुशी देखकर रीमा कितनी खुश थी, कितनी गौरवान्वित महसूस कर रही थी। घर जाकर दूरदर्शन पर फिर परेड देखने बैठ गये थे। समय का चक्र! दूसरे महीने संजय को अपनी सैन्य टुकड़ी लेकर कारगिल जाने के आदेश प्राप्त हुए। संजय ने घर आकर रीमा को बताया कि वह यहीं लखनऊ में रहेगी और कुछ दिन बाद वह लौट आयेगा। कारगिल का नाम सुनते ही रीमा का दिल जोर से धड़कने लगा। चेहरे की हवाइयां उड़ गईं, परन्तु स्थिति संभालते ही संजय ने कहा, ''अरे सैनिकों की पत्नियां तो उनसे भी बहादुर होती हैं, वो ही तो उनमें वीरता, साहस भरती हैं और तुम.....'' रीमा ने साहस बटोर कर संजय का सामान बांधा, उससे रात भर ढेरों बातें कीं, कई हिदायतें दीं, रात भर दोनों सो नहीं पाये, रीमा मां बनने वाली थी। संजय चले गये। हर रोज़ शाम को दोनों की मोबाइल पर बात होती। वह शाम जब, मोबाइल का नम्बर मिल ही नहीं रहा था। रीमा परेशान थी। न जाने कितनी बार कॉल लगा चुकी थी। उसने हारकर रात 10 बजे संजय के मित्र अवस्थी जी को फोन लगाया। पता चला संजय की तबियत ठीक नहीं है। संजय सैन्य अस्पताल में है। शाम को दुश्मनों के एक ठिकाने का पता चला गया था। संजय अपनी टुकड़ी के साथ वहाँ पहुँच गये थे, दुश्मनों के साथ लगातार ढाई घंटे लड़ाई चली। इस बीच संजय को दो गोलियां लग चुकी थी। फिर भी खुद को घसीटते हुए दुश्मनों को खत्म करने पर तुला संजय पीछे नहीं हटा। उसने दुश्मनों के ठिकाने को नष्ट कर दिया और अकेले ही 14 आदमियों को मार गिराया था। सैन्य अस्पताल तक आते-आते संजय के जख्मों से बहुत खून बह चुका था। सुबह होने तक संजय सबको छोड़ चुके थे। उन्हें लखनऊ लाया गया। गार्ड ऑफ ऑनर के साथ उनका अंतिम संस्कार हुआ। उनकी कोठी के सामने कितना बड़ा हुजूम उन्हें अंतिम विदाई देने आया था और अभी महीना भर पहले ही रीमा को संजय के परमवीर चक्र का ये सम्मान पत्र प्राप्त हुआ। इतने में गोद में सोया विपुल रो पड़ा। रीमा का ख्वाब टूटा। उसने विपुल को कसकर सीने से लगाया और परमवीर चक्र को दिखाते हुए बोली, ''बेटा जीना तो ऐसे जीना, देख आज सम्पूर्ण भारतवर्ष तुम्हारे पापा के साथ हर्षित है, गर्व है मुझे कि मैं उनकी पत्नी हूँ जो कभी मर ही नहीं सकते।

◆ **शबनम शर्मा**, *नवाब गली, नाहन (म.प्र.)*

मुक्तक

सोचा! नेता अपने-अपनी भेदभाव की खाई पाट रहे हैं।
पर ये तो रेवड़ी अपने-अपनों को ही बांट रहे हैं।।
संभल सको तो संभलो ओ! भारत माँ के बेटों।
ये नेता देश को यहाँ दीमक बन चाट रहे हैं।।

सितारे टूट कर गिर रहे ये कैसा संत्रास है।
लोकतंत्र बेक़फन पड़ा टूट गया विश्वास है।।
कैसे पूरी हो संकल्पना शोषणमुक्त समाज की,
जन नेता अमर बेल बन गये अफसर गाजर घास है।।

मेरा कातिल से कत्ल हुआ खून बोलेगा वन्दे मातरम्।
जालिम के जुल्मो सितम सह के सब बोलेंगे वंदेमातरम्।।
काट देने से कटी है कभी तहरीर की इबारत - यहाँ,
शिवा की शमशीर बोलेगी जेल की जंजीर बोलेगी वंदेमातरम्।।

◆ **बंशीलाल 'पारस'**
ओशो कुंज, ट–14, बापू नगर, भीलवाड़ा (राजस्थान)

महीना अगस्त का

महीना अगस्त का
आते ही, हवा में सीलन
बदन में तपिश,
और रूह में कंपन
महसूस होती है।
सीने पत्थरों के भी
पसीजने लगते हैं
रो पड़ते हैं मेरे
घर के सामने वाले
पहाड़ भी,
याद करके उन वीरों को
जिन्होंने हमें ये खुली हवा में
सांस लेने का सुअवसर दिया,
उन्हें रहती दुनिया तक
मेरा, सम्पूर्ण विश्व को
शत-शत प्रणाम।

◆ **शबनम शर्मा,** ***नवाब गली, नाहन (म.प्र.)***

बापू का सपना

देख हिन्द की आज दशा
होता मन में दुख अपार,
कोई ठहाके लगा रहा है,
कोई रो रहा जार-जार।

एक ओर तो बने हुए
दीर्घ, भव्य 'औ' सजे महल,
बिलख रहे हैं खड़े पास में,
भूखे, अधनंगे निर्बल।

कहीं मजे से पकवानों के
थाल सजाए जाते हैं,
कुत्ते से छीनी रोटी को
कहीं झगड़कर खाते हैं।

कोई बन जाता हत्यारा
उदर की आग बुझाने को
अखबारों से बदन ढक रही
नारी लाज बचाने को।

बोझा ढोते भारी भरकम,
नन्हें-मुन्ने सड़क किनारे,
वहीं पास में लगे हुए,
सुन्दर बाग रम्य फव्वारे।

हिन्दवासियों तनिक विचारो
नहीं मिली सच्ची आजादी,
रोटी, कपड़ा घर हो सबका
और मिले शिक्षा बुनियादी।

तब जाकर सफल होगा
सत्यम् लोकतंत्र अपना,
सच हो जायेगा बापू का
रामराज्य लाने का सपना।

◆ **सत्यदेव सिंह चारण**
'सत्यार्थी सदन', मुपो–खेजड़ला,
वाया – पीपाड़ शहर, तहसील–बिलाड़ा,
जिला – जोधपुर (राजस्थान) 342601

यह कैसी आजादी ?

डॉ. मदन डांगी

15 अगस्त 1947 की अर्द्ध रात्रि को जब सारी दुनिया सो रही थी, हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुई। अंग्रेजों की हुकूमत से निजात पा अपने ही हाथों हमें देश संचालन की बागडोर प्राप्त हुई। उस रात देश आजादी का जश्न मना रहा था, अपार खुशी का माहौल था। लालकिले की प्राचीर पर इस देश के सपूत जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा फहराया। जवाहर का उस समय दिया गया उद्‌बोधन एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। महात्मा गांधी एवं देश के अन्य सपूतों द्वारा चलाये गये लम्बे आंदोलन से यह हमें सब कुछ प्राप्त हुआ, जो सारी दुनिया के लिए एक आश्चर्य की बात है। बिना खून-खराबे से यह हासिल करना एक विलक्षण बात थी, जिससे आने वाले वर्षों में अन्य कई देश जो पूर्व में गुलाम थे, आजाद होने की प्रेरणा ले मुक्ति की ओर अग्रसर हुए।

इस आजादी के जो सुखद सपने हमारी पूर्व की पीढ़ियों एवं नेताओं ने देखे एवं संजोये क्या हम पूरा करने में सफल हुए हैं। यह समय आजादी प्राप्ति के 63 वर्षों बाद विश्लेषण एवं मूल्यांकन का है। आजादी के प्राप्त होने के पूर्व हमने सुराज का राम राज्य की कल्पना की थी, जहाँ देश के सभी वासी धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग, लिंग, प्रान्त के नाम पर एक होंगे। सभी को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं का समान रूप से उपलब्ध होगी। न कोई ऊंचा न कोई नीचा, अमीर-गरीब सब कर्त्तव्यनिष्ठ देशवासी होंगे। देश एवं राष्ट्रीयता सर्वोपरि होगी। यह सभी लोगों का व्यक्तिशः एवं समूह में देश निर्माण में एक अपूर्व सहयोग होगा, क्योंकि विकास की अंधी आंधी ने देश में मानवीय मूल्यों को नेस्तानाबूत कर दिया है। हमारे नैतिक मूल्यों एवं मान्यताओं का हरण हुआ है, जो अकल्पनीय है।

आजादी के साथ ही इस देश का विभाजन हुआ। एक हिस्सा पाकिस्तान कहलाया एवं दूसरा हिन्दुस्तान। विभाजन एवं आजादी के बाद दोनों देशों में जो दंगे हुए, खून की नदियां बहाई गई उसके जख्म आज भी विद्यमान हैं। जो विष देश की समरसता में उस समय घोला गया उसने इस मुल्क का फिर विभाजन करवाया है। राजनेता अपने तात्कालिक लाभ के लिए इसे वोट बैंक की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं, झूठे आश्वासनों से उनका विकास अवरुद्ध हुआ है, जो देश की बड़ी समस्या बन गई है।

देश ने आजादी के बाद भौतिक विकास के कई नये आयाम छुए हैं, जिसका फायदा सामान्य आदमी तक नहीं पहुँच पाया है। गरीब एवं अमीर की खाई बढ़ती जा रही है, जीवन के शाश्वत मूल्यों का अवमूल्यन हुआ है। क्या हमारे पुरखों ने इसी आजादी की कल्पना की थी, जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर प्राण दिये और हम एक आजाद मुल्क के नागरिक बने।

आजादी के बाद संविधान में आरक्षण व्यवस्था कुछ समय के लिए निर्धारित की गई थी, जिससे पिछड़े वर्ग को विकास का मौका मिले। यह मांग हर वर्ग, अगड़ा-पिछड़ा, दलित-वंचित, विकलांग, परित्यक्ता एवं धर्म के नाम पर बराबर चल रही है। इस आरक्षण नीति का देश को बहुत नुकसान हुआ है। जो जातियां किसी गांव शहर में संगठित, स्नेहपूर्ण एवं समरसता से रहती थीं, वे आज एक-दूसरे की दुश्मन बन गई हैं। यह व्यवस्था राष्ट्र, राज्य, जिला एवं गांव तक घातक सिद्ध हो रही है। ऐसा लगता है कि यह देश अलग-अलग जातियों, समुदायों एवं धर्मों का हो गया है। जो समाज एक डोर-सूत्र में बंधा था वह जर-जर होता जा रहा है। देश की प्रतिभाओं का पलायन बढ़ा है, जो लोग पात्र होने पर अपनी प्रतिभाओं को उजागर करने से वंचित हैं, कुंठित हैं। आरक्षण का लाभ जिन जातियों, व्यक्तियों को मिला है वे दो तीन पीढ़ी से लाभान्वित हुए हैं। उनके मूल वर्ग एवं जाति में एक नये वर्ग को जन्म दे दिया है।

देश में जितना विकास हुआ एवं आर्थिक सम्पदा की वृद्धि उसका लाभ कुछ ही परिवारों या लोगों को मिला है। आज भी देश की आधी से अधिक आबादी गरीबी की रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। उनके पास न सिर छिपाने को छत, न पहनने को वस्त्र, न क्षुधा मिटाने को दो जून की रोटी उपलब्ध है। वे लोग सड़क पर ही पैदा हो अपना जीवन पूरा कर लेते हैं। चिकित्सा सेवाएं अनुपलब्ध, रोजगार के

लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं। अनेकों गंदी नालियों एवं कचरे से अनुपयोगी सामान एकत्रित कर जीवन यापन कर रहे हैं। उनके लिए भीख मांगना एक प्रिय काम हो जाता है। वे गैर कानूनी काम-धंधों में लिप्त हो अपराधी बनने को मजबूर हैं, उन्हें शिक्षित करने के सारे प्रयास असफल हो रहे हैं।

जब हम आजाद हुए, विभाजित देश की आबादी 36 करोड़ थी जो अब बढ़कर 115 करोड़ पार कर गई है। हम विश्व में आबादी के लिहाज से दूसरे नंबर पर हैं। जनसंख्या नियंत्रण के जो प्रयास किये गये वे अब तक असफल ही रहे हैं। हमें कोई सार्थक नीति बना इस पर नियंत्रण करना होगा। ऐसा न होने पर रोजी-रोटी एवं आवास की समस्या भयंकर रूप लेगी और इस देश को तहस-नहस कर देगी।

देश की आधी जनसंख्या महिलाओं की है। महिलाएं शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार की दृष्टि से अपेक्षित विकास नहीं कर पाई हैं। पुरुष एवं महिला के बीच की खाई बढ़ती रही है। लिंगानुपात में बहुत कमी आ रही है, जो चिंतनीय है। बलात्कार एवं भ्रूण हत्या, दहेज हत्या एवं अन्य अपराधों में निरंतर वृद्धि हो रही है। स्त्री वर्ग किसी भी वय में महफूज नहीं है। समाज एवं पुलिस दोनों असंवेदनीय बन गये हैं। लोकसभा, विधानसभाओं में आरक्षण लम्बित है। पंचायती राज संस्थाओं में यद्यपि 50 प्रतिशत आरक्षण क्रियान्वित हो चुका है पर वहाँ पर पुरुषों का दखल बदस्तूर जारी है एवं महिलाएं स्वेच्छा एवं निष्ठापूर्वक कार्य करने से वंचित है।

देश में गांव उजड़ रहे हैं, क्योंकि वहाँ रोजगार के नगण्य अवसर, जीवन जीने के मूलभूत आवश्यक साधनों का अभाव उपयोगी मूल्यपरक शिक्षण संस्थाओं का अभाव जो युवकों को गांव में ठहराव के लिए अपर्याप्त है। वे शहरों के लिए पलायन करते हैं एवं वहाँ का नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं, फिर भी जो रोजगार उपलब्ध हो जाता है। वे वहाँ पर कई बीमारियों से संक्रमित हो इस संक्रमण को अपने गांवों एवं परिवारजनों तक पहुँचाते हैं जो महामारी का रूप ले लेती हैं। एड्स जैसी महामारी इसका दुष्परिणाम है।

देश के कोने-कोने में कुकुरमुत्ते की तरह भ्रष्टाचार फैल चुका है। सरकारी या गैर सरकारी कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है एक रिपोर्ट के अनुसार हम विश्व के भ्रष्ट देशों की सूची में तीसरे स्थान पर है। राजीव गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में कहा था कि जो केन्द्र से रुपया सहायतार्थ दिया जाता है उसमें से केवल 15 पैसे ही जरूरतमंद लोगों तक पहुँचता है। अब तो वह 5 पैसा ही रह गया है। भवन, सड़कें, बांध आदि जनोपयोगी निर्माण कार्यों में घटिया सामग्री काम में लेकर दुर्घटनाएं आमंत्रित की जा रही हैं। जिससे समाज असुरक्षित बन गया है। ऐसी घटनाओं से जो जान एवं माल की हानि हुई है वह कल्पना से परे है। हालत यह है कि कोई भी राजकार्य बिना घूस के पूरा नहीं हो सकता, जिससे व्यक्ति का धन एवं समय बर्बाद होता है।

धर्म एवं जाति के नाम पर हमने इस अहिंसक देश को हिंसक बनाने का एक घृणित काम किया है। मंदिर, मस्जिद, चर्च एवं गुरुद्वारे के नाम पर जो राजनीति एवं अत्याचार किये हैं वे विश्व में समग्र मानव जाति के लिए कलंक है। धर्मगुरुओं का अनैतिक कार्यों में लिप्त होना, भोली-भाली जनता का दुरूपयोग एवं शोषण, आजादी के बाद की एक बहुत बड़ी देन है। धर्म स्थलों का आतंककारी गतिविधियों, तस्करी, प्रतिबन्धित व्यवसायों को उपयोग में लेना आज देश की एक भयंकर समस्या बन गई है। पिछले तीस वर्षों से माओवादियों द्वारा नक्सली हिंसा का सूत्रपात आज देश की बहुत बड़ी चुनौती है। अपने ही भाई जब अपने दुश्मन बन जायें तब यह देश कैसे सुरक्षित रह सकता है? राजनेताओं का अपने क्षुद्र स्वार्थ प्राप्ति हेतु लिप्त होना एक दुखद पहलू है।

संसद एवं विधानसभाओं में आये दिन हुड़दंग, गतिरोध, तोड़फोड़, मारपीट एवं आसन के साथ बदसलूकी जैसी घटनाओं से इस महान देश का विश्व में क्या संदेश जाता है। समय बर्बाद कर जनता की गाढ़ी कमाई को मुफ्त में तहस-नहस किया जा रहा है। पैसे लेकर प्रश्न पूछना अनैतिक आचरण, कबूतर-बाजी, अपने भत्तों की हर बार वृद्धि, विधायक एवं सांसदों का अप्रिय व्यवहार जन-आक्रोश वृद्धि में सहायक हो रहा है। वह सब सहने को हम मजबूर हैं और अन्य कोई विकल्प नहीं होने से एक विडम्बना ही है। देश के 60 प्रतिशत राजनेता, सांसद, विधायक अरबपति-करोड़पति हैं। यह बेशुमार दौलत इन्होंने राजनीति में आने के बाद ही अर्जित की है। शौध का विषय है।

देश ने आजादी के बाद भौतिक विकास के कई नये आयाम छुए हैं, जिसका फायदा सामान्य आदमी तक नहीं पहुँच पाया है। गरीब एवं अमीर की खाई बढ़ती जा रही है, जीवन के शाश्वत मूल्यों का अवमूल्यन हुआ है। क्या हमारे पुरखों ने इसी आजादी की कल्पना की थी, जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर प्राण दिये और हम एक आजाद मुल्क के नागरिक बने। यह गांधी के सपनों का भारत नहीं हो सकता, जहाँ कोई भी महफूज नहीं है। यह देश महान है, जिसका गौरवपूर्ण अतीत फिर एक नई क्रान्ति का सूत्रपात कर आमूलचूल परिवर्तन कर एक खुशहाल, राष्ट्रप्रेम, सर्वदोष मुक्त भारत का निर्माण करेगा। जहाँ सर्वहारा संस्कृति होगी।

आमेट, राजस्थान

बापू के शिष्य

सुरेश आनन्द

हमारे देश को स्वतंत्रता मिले 62 वर्ष बीत चुके हैं। इतना ही नहीं 15 अगस्त 2010 को आजादी के 63 वर्ष समाप्त होकर 64वां वर्ष प्रारंभ हो जाएगा।

अब प्रश्न यह है क्या हम वास्तव में महात्मा गांधी के शिष्य हैं? हम तो निरंतर ही उनका नाम रटते रहे हैं। उनके ही नाम पर चुनाव भी लड़ते रहे हैं। उनके ही नाम पर अनेक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। सत्याग्रह, नमक आंदोलन भी किया। स्वदेशी भावना भी जागी और खादी मूलमंत्र बनाया। इतना ही नहीं वे भारतीय जो अभी भी इस देश की नागरिकता में उलझे रहते हैं, वे महात्मा गांधी को ऐसे मान्यता देते रहे हैं, उनके कार्यक्रमों में उपदेशक बनकर या उद्घाटन करते हैं जैसे भारत में बापू के पूर्व जन्म उन्होंने ही लिये थे? या उन्होंने ही भारतीय आजादी का शंखनाद किया, जैसे वे बापू से पूर्व जन्मे थे?

भारतीय या विदेशी भारतीय राजनीतिज्ञ तो महात्मा गांधी को विस्मृत कर पूंजीपति भी बनते जा रहे हैं। वे अपना रूप ऐसे धारण करते हैं जैसे महात्मा गांधी को उनकी ऊंगली पकड़कर उन्होंने ही चलाया हो और वे त्यागी, तपस्वी, दरिद्रनारायण ही बने हुए हैं? पर वास्तव में ऐसा नहीं है तभी तो यह प्रश्न उठता है, क्या हम वास्तव में बापू के शिष्य हैं।

महात्मा गांधी ने 27 नवंबर 1944 को कहा था "जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं, वैसे ही दूसरे धर्म को भी दें। मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है।" लेकिन आज हमारे राजनीतिज्ञ उनके इस कथन को भूल बैठे हैं? वे सिर्फ चुनाव लड़ने के लिए ही धर्मों की माला जपते हैं। वे धर्म को तो सिर्फ चुनाव वोट के लिए मानते हैं? क्या धर्म का अर्थ सिर्फ चुनाव वोट ही है? इसके लिए राजनीतिज्ञ धर्म का सहारा लेकर उसका चोगा धारण करके आचार-संहिता बनाते हैं या उसका गुणगान करते हैं। इस तरह धर्म निपेक्षता का धर्म और राष्ट्रीयता का आडंबर रचते रहे हैं। जोड़-तोड़ और तोड़-फोड़ तक करते हैं। कोई अगर वोट की खातिर अपने धर्म को दूसरे धर्म में मिलाते हैं तब परस्पर विष-घोलना शुरू कर देते हैं। देखने में आता है कि महात्मा गांधी का उपदेश आज कितना पीछे छूट गया है? यह कितना हास्यास्पद है। राजनीतिज्ञ अपनी इसी करतूत को धर्म निरपेक्षता कहते हैं और महात्मा गांधी के नाम पर अनैतिक कार्य करते हैं?

महात्मा गांधी ने 21 जनवरी 1945 को कहा था "जमीन का मालिक तो वही है जो उस पर मेहनत करता है।"

हम चिंतन करें आजादी के छह दशकों में हमारे सत्तासीन लोग क्या कर रहे हैं? विकास के नाम पर तमाम कृषकों से जमीन ले ली गई है और पूंजीपतियों को दे दी है। महानगर बसाए जा रहे हैं। औद्योगिक नगरी भी बसी हैं। किसान-मजदूरों पर गोलियां चलीं हैं। निर्धन लुटे हैं। किसान भूमि हीन होता जा रहा है और कुछ घराने औद्योगिक पूंजीपति बन रहे हैं। महात्मा गांधी ने कहा था भारत की आत्मा गाँव में बसती है। लेकिन इन छह दशकों में देश के राजनीतिज्ञ, इसके विपरीत कहते हैं कि "भारत की आत्मा पूंजीपतियों के घर में बसती है।"

महात्मा गांधी ने 6 अप्रैल को कहा था आज का दिन स्वर्णाक्षर में लिखने योग्य है। क्योंकि 6 अप्रैल 1919 को ही हिन्दुस्तान ने अपने को पहचाना था।"

तात्पर्य यह है कि हमने सन् 1919 को ही इसी दिन नमक को धरती से उठाकर नमक सत्याग्रह किया था। यही नमक भारत में दरिद्र को जगा रहा था। सस्ता मिलता था। पर आजादी के पश्चात हमारी सरकार ने पूंजीपतियों को जगाया और उन्होंने नमक हथिया लिया। सरकार उनके साथ हो चली। स्वास्थ्य मंत्रालय उनके साथ हो लिया। यह कितना आश्चर्य है तमाम पूंजीपति चिकित्सक भी उनके साथ हो लिए और महात्मा गांधी स्वर्ग में कौतूहल से इन दरिद्र-नारायणों को देख रहे हैं। आज महात्मा गांधी होते तो अपनी बद-किस्मती पर आंसू बहाते। अब यही स्वर्णाक्षर काले अध्याय से जुड़ गया है?

महात्मा गांधी ने 20 नवम्बर 1944 को कहा था "ईश्वर के नाम तो अनेक हैं लेकिन एक ही नाम ढूंढे तो वह सत् सत्य है। इसीलिए सत्य ही ईश्वर है।"

इसी आधार पर जब हम अपनी स्वतंत्रता और देश के राजनीतिज्ञ चाणक्यों को देखते हैं तो लगता है बापू का सत्य कहीं दूर-दूर तक नज़र नहीं आता। राजनीतिज्ञ हो या शासक-प्रशासक या मंत्री वे किसी भी ईश्वर या बापू के सत्य में यकीन नहीं करते। सत्य को मानने से ये सत्तारूढ़ और उनके अनुयायी सत्ता और पूंजी के नशे में सब कुछ भूल चुके हैं।

इसी तरह महात्मा गांधी ने 16 सितंबर 1946 को कहा था "जो जीवन सेवा में व्यतीत होता है वही फलदायी है।"

लेकिन हम स्वतंत्रता के साठ दशकों में महसूस कर रहे हैं कि बापू ने जीवन में सेवा का जो उपदेश दिया था वह दूर-दूर तक नज़र नहीं आता है। यहाँ

तक कि वरिष्ठ जन, वृद्ध, किसान, दरिद्रनारायण, दलित, अबला इनके किसी के जीवन में बापू के उक्त कथन अनुसार कोई परिवर्तन नहीं हुआ है? अनगिनत किसान आत्महत्याएं कर चुके हैं। मात्र राजनीतिज्ञ, सत्तारूढ़ शासक-प्रशासक पूंजीपति, नेता, अभिनेता, अभिनेत्री और उद्योगपति ही अपने आपको धन्य मान रहे हैं। वे ही करोड़ों-करोड़ों के हकदार हो रहे हैं? महात्मा गांधी ने तो कभी नहीं चाहा था कि समाज में ऐसी असमानता हो? स्वतंत्रता पश्चात समानता और असमानता दो धुरी बन गहरे फासले में तब्दील हो गए हैं। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री राज्यपाल अन्य मंत्री सभी लार्ड वायसराय के समान पूंजीपति हो गए हैं। सिर्फ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने महात्मा गांधी की सीख मानी थी? पता नहीं महात्मा गांधी की विचारधारा को क्यों नहीं माना जा रहा है? महात्माजी ने 29 मई 1946 को कहा था ''अगर आदर्श को कभी न छोड़ा जाए तो आदर्श हमें कभी नहीं छोड़ेगा?''

उनके इस कथन पर अगर हम चिंतन करें तो स्पष्ट है कि महात्मा गांधी के आदर्श को ही मान्य नहीं किया गया है। जब राम वनवास गए तब भरत स्वतः राजगद्दी पर नहीं बैठे। वे तो राम की खड़ाऊ लेकर आए और राजगद्दी पर रख दी। यही राजतंत्र का आदर्श था।

क्या यही एक हमारे जनतंत्र का आदर्श है? लोकसभा विधानसभा में मारधाड़ होती है। कुर्सियां व माईक फैंके जाते हैं। रिश्वत, भ्रष्टाचार खूब फला-फूला। दस्यु नादान विस्तारवादी अन्यायी हर कोई राजगद्दी की पवित्रता पर बैठा? इस तरह विगत छह दशकों में महात्मा गांधी के आदर्श को तिलांजलि दे दी गई है और तमाम सत्तारूढ़ों ने स्वतः अपने-अपने आदर्श पकड़कर गांधीवाद को विदा कर दिया है? क्या स्वर्ग में इससे बापू प्रसन्न हुए होंगे?

इसी तरह महात्मा गांधी ने 18 अप्रैल 1946 को कहा था ''जब मनुष्य अपने को पहचानता है तब मुक्त है।'' परन्तु हमारे यहाँ राजनीतिज्ञों को इतना समय ही कहाँ है कि वे अपना चिंतन-मनन करें। आम आदमी पहचानने की चिंता करें? जीवन भर राजसत्ता पर बैठने से अपने आपको मुक्त करें?

इसी तरह महात्मा गांधी ने 19 नवंबर 1945 को भी कहा था ''बंदूक का भय बंदूक छूटने पर मिट जाता है। प्रेम का बंधन बढ़ता ही जाता है फिर भी बंधन ही नहीं लगता।'' लगता है उनका आशय था कि बंदूक लेने से सदैव ही भय बना रहता है। बंदूक से मुक्त होने पर प्रेम का बंधन सदैव बढ़ता ही रहता है। व्यक्ति कभी भी भयभीत नहीं रहता। देश में महावीर, गौतम, गांधी के अहिंसा परमोधर्म का ग्राफ तभी तो बढ़ता रहा है।

लगता है महात्मा गांधी ने गरम दल और नरम दल का यही तो अर्थ बताया था। गरम दल वाले ही तो फांसी पर चढ़े थे और नरम दल वाले ही तो कारावास गए थे। इस तरह पराधीनता में महात्मा गांधी का गहरा चिंतन सूझ-बूझ वाला था। तभी तो आजादी मिली।

खेद है छह दशकों की स्वतंत्रता में हम महसूस करते हैं महात्मा गांधी के चिंतन-मनन को कोई भी स्वीकार नहीं कर रहा है। राष्ट्र भले ही स्वतंत्र हो गया हो पर आम आदमी और तमाम शासक सभी पराधीनता की लकीरें पीट रहे हैं। हर शासक भय, हिंसा, क्रोध, क्रूरता, स्वार्थ सभी को तो प्रोत्साहित करते रहे हैं। क्या हम बापू को समझ पाए हैं? पूरा राष्ट्र अहिंसा परमोधर्म की बात करता है पर स्वतंत्र राष्ट्र में हिंसा अपराध, बलात्कार, गलाघोटना, हत्या, आत्महत्या के सिवा और क्या शेष रहा है?

प्रतिदिन मीडिया सीरियल, टी.वी., पुलिस यही तो कहती हैं? क्या भारत ने कभी स्वतंत्रता के लिए इसी तरह संघर्ष किया था? क्या लोकतंत्र में हम भी वही करेंगे जो मुगलों ने, अंग्रेजों ने किया था? फिर महात्मा गांधी की आजादी का तात्पर्य क्या रहेगा?

महात्मा गांधी ने 13 दिसंबर 1945 को कहा था हिंसा दुर्बल का शस्त्र है, अहिंसा सबल है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद हो क्या रहा है? वर्तमान में जो राजगद्दी पर बैठते हैं या बैठे थे उनके अनुचर ही तमाम फल लूट रहे हैं? अपने आपको ही धैर्य का अधैर्यता का राजा, संत महात्मा, पालनहार मानते हैं और तमाम धन-सम्पदा को अपने आधिपत्य में लिए हुए हैं। तमाम मधपान, तमाम जल, तमाम विद्युत, तमाम धूम्रपान सभी व्यसनयुक्त चीजों को अपनी सम्पदा बताते हैं? वहीं महात्मा गांधी के दरिद्रनारायणों को देखते रहते हैं वे टुकर-टुकर ही निहारते रहते हैं? क्या हमने महात्मा गांधी को माना है या मान्य किया है?

हमने तो महात्मा गांधी को नहीं माना और स्त्री को अबला ही मान्य किया है? पुरुष ही नहीं तमाम राजनीतिज्ञ भी उसको अधिकार भी देना नहीं चाहते? आश्चर्य तो यह है कि आजादी के छह दशकों में भी अहिंसा छोड़कर हमारा राष्ट्र हिंसात्मक बनता जा रहा है? आश्चर्य तो यह है फिर भी महात्मा गांधी के शिष्य बनने का ढोंग करते रहते हैं? अनेकों उनके अनुयायी और राजनीतिज्ञों, सांसदों, विधायकों को भी बंदूक, पिस्तौल की आवश्यकता पड़ती है? क्या इसी तरह किसी का शिष्य बनाया जा सकता है?

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन इसी तरह उपदेशों की गंगा-जमुना रही है। जो अपने मन में बैठाए तो वे व्यक्ति अभिभूत हो सकते हैं। परन्तु किसी ने ऐसा नहीं किया है। फिर भी आश्चर्य है शासक उनकी आवश्यकता पड़ने पर उनके उपदेश देने लगते हैं? अब सोचने का विषय सिर्फ यही है कि क्या हम वास्तव में बापू के शिष्य हैं?

आनंद परिधि, एल–62,
पं. प्रेमनाथ डोगरानगर,
रतलाम – 457001 (म.प्र.)

वैश्विक परिदृश्य : सवाल हमारी अस्मिता का

हरिश्चन्द्र व्यास

विश्व में अनेक देश हैं, जिनके हित किसी-न-किसी प्रकार एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। आज की दुनिया में अलग-थलग रह कर कोई देश आगे नहीं बढ़ सकता। यह भूमण्डलीकरण का युग है; मुक्त-बाजार व्यवस्था का युग है; संचार क्रांति का युग है। आपसी संबंधों के अनेक घटक हुआ करते हैं जैसे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आदि। मुक्त-बाजार व्यवस्था ने आयात-निर्यात को नई गति दी है। उधर विश्व के किसी भी कोने में होने वाली घटना का समाचार पलक झपकते ही सभी जगह प्राप्त हो जाते हैं और फिर शुरू हो जाता है प्रतिक्रियाओं का व्यापक सिलसिला। एक प्रकार से देखा जाए तो हम एक ऐसी दुनिया के वाशिन्दे हैं जो अब टापूनुमा इकाइयों में अलग-थलग नहीं रह सकते। दुनिया एक वैश्विक ग्राम जैसी हो गई है।

आजादी की नई लहर

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ। 1947 से लेकर 1960 तक जो देश, विदेशी दासता से मुक्त हुए उनमें उत्तरी व दक्षिणी कोरिया, इज्राइल, श्रीलंका तथा म्यांमार (बर्मा) 1948 में, आस्ट्रिया 1955 में, ट्यूनिसिया 1957 में, गिनी (कांगो) 1958 में, कैमरून, गैबन, चाड, टोगो, नाइजीरिया, माली व साइप्रस 1960 में, अल्जीरिया और रूमोआ 1962 में, युगांडा 1963 में, सिंगापुर 1965 में, मालदीव 1965 में, स्विटजरलैंड 1968 में तथा माइजर 1970 में आजाद हुए। 1970 के बाद विदेशी दासता से मुक्त होने वाले देश हैं बहरीन व वक्तर 1971 में, संयुक्त अरब अमीरात 1972 में, ग्रेनेडा 1974 में, अंगोला, पपाऊम्यूगिनी व मोजम्बिक 1975 में, डोमेनिया 1978 में, सोवियत संघ के विघटन के बाद लिथुआनिया, तुर्कमेनिस्तान, अजरबेजान, उक्रेन व उज्बेकिस्तान 1991 में तथा जार्जिया व तजाकिस्तान 1992 में आजाद हुए।

सदियों तक ब्रिटेन, पुर्तगाल, हॉलैण्ड, फ्रांस एवं रूस आदि के आधिपत्य से आजाद होकर इन सभी देशों ने अपनी-अपनी राष्ट्रीयता के ज्वार व देशभक्ति के जज्बे के कारण आजादी प्राप्त की। इसे हम राष्ट्रीयता की विश्वव्यापी विजय की संज्ञा दे सकते हैं। साम्राज्यवादी मन्सूबों को ध्वस्त करने में बीसवीं शताब्दी अग्रणी रही है।

आतंकवाद, सैन्य तानाशाही एवं अशांति

हम मित्र बदल सकते हैं पर भौगोलिक कारणों से पड़ौसी नहीं बदल सकते। हमारे पश्चिम में पाकिस्तान, पूर्व में बांग्ला देश, नेपाल व बर्मा तथा दक्षिण में श्रीलंका है। दूर पूर्व में चीन है। भारत किसी न किसी प्रकार से इन देशों की घटनाओं से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। श्रीलंका की अशांति को मिटाने के लिए भारत ने जब शांति सेना भेजी तो होम करते हुए हाथ जलने वाली बात हो गई। हमारे सद्भाव की न तो शासक दल ने कोई खास प्रशंसा की और न ही लिट्टे के उग्रवादी उस कदम से दब पाए। उल्टे हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। लिट्टे के मानव बम के कारण एक भयानक त्रासदी ने जन्म लिया और हमें शांति के नाम पर क्षति उठानी पड़ी।

बांग्ला देश का गठन तो भारत की सेना द्वारा पाकिस्तानी सेना को पराजित करने एवं हजारों पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा आत्मसमर्पण के कारण हुआ था। शेख मुजीबुर्रहमान को सत्तासीन करने में भारत ने ऐतिहासिक भूमिका का निर्वाह किया। बांग्लादेश की क्षत-विक्षत आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए करोड़ो रुपयों की सहायता दी। जर्जर पुलों, सड़कों, बांधों के पुनर्निर्माण में सहयोग दिया। अहसान फरोशी का उदाहरण देखना हो तो बांग्लादेश के सैनिक शासकों का दृष्टांत दिया जा सकता है। पता नहीं उनमें भारत के प्रति रह-रह कर शत्रुभाव क्यों उदित होता रहता है। भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है जबकि पड़ौसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश व म्यांमार में जब कभी प्रजातंत्र रहा भी तो सैनिक सत्ता को दबा नहीं पाया। मौका मिलते ही सेना हावी हो जाती है, चुने हुए जनप्रतिनिधियों को कैद में डाल दिया जाता है या फिर मौत के घाट उतार दिया जाता है। नेपाल में भी वहाँ के महाराज ने सैनिक तंत्र के बल पर कई वर्षों तक निरंकुश शासन किया है। इन स्थितियों में सम्बन्धित देशों में तो राष्ट्रीयता को आघात लगता ही है पर पड़ौस में होने के कारण भारत भी अप्रभावित नहीं रह सकता।

चीन की राजधानी बीजिंग वैसे तो हमसे काफी दूर है पर कई स्थानों पर चीन की सीमाएं भारत के भू-भाग से मिलती हैं। हमारे तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मैत्री भाव से तिब्बत को चीन का भाग मान लिया। कुछ वर्षों तक पंचशील व हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा भी चला पर बाद में साम्राज्यवादी लिप्सा ने भारत पर युद्ध थोपने का कार्य किया। चीन में भारत की तरह का प्रजातंत्र नहीं है। रिपब्लिक राष्ट्र चाहे उसके (चीन) के साथ जुड़ा हो पर वहाँ दल विशेष, विचारधारा विशेष और समूह विशेष का निरंकुश शासन है। आणविक शक्ति सम्पन्न चीन और (अब तो पाकिस्तान भी) हमारे लिए सतत् खतरे की संकेतिकाओं के समान हैं। अंध देश भक्ति, धार्मिक

कट्टरता या थोपी हुई भावनाएं राष्ट्रीयता का सही विकल्प या पर्याय भी नहीं हो सकती। देश का प्रेम तो भीतर से उपजा करता है; सांस्कृतिक विरासत से पल्लवित होता है और मानवीय गरिमा से प्रभावान होता है। भारतीय राष्ट्रीयता के सामने आस-पड़ौस के देशों की स्थितियां चिंताएं पैदा करती हैं। ऐसे में हमें भीतर से शक्ति संजोनी पड़ेगी। चट्टान बनकर सामना करना पड़ेगा पर यह फौलादी ताकत तभी आ पाएगी जब हम जाति-पाँति-वर्ग-वर्ण-भाषा-क्षेत्र-सम्प्रदाय आदि से ऊपर उठकर देश केवल भारत के लिए स्वयं को समर्पित करना सीखेंगे। स्वस्थ व बलवान शरीर पर रोग आक्रमण नहीं करते, जबकि कमजोर व कृषकाय शरीर में सौ रोग उत्पन्न हो सकते हैं। इसी प्रकार भीतर से बलवान राष्ट्र पर आँख उठाने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसा दुःसाहस करने वाले भावी परिणामों को भी जानते हैं।

परवान चढ़ती राष्ट्रीयता

1962 में चीन ने तथा 1965, 1971 एवं 2002 में पाकिस्तान ने भारत पर अकारण हमले किये। युद्ध तो सैनिक लड़ रहे थे, प्राण हथेली पर रखकर मातृभूमि की रक्षा सैनिक कर रहे थे हमलावरों के हौसले पस्त करने का काम भी सैनिक कर रहे थे पर क्या नागरिक मूक दर्शक बने हुए थे? नहीं। कदापि नहीं। उन दिनों देशभक्ति का जज्बा देखने योग्य था। राष्ट्रीय रक्षाकोश के लिए धन, गहने व अन्य सम्पति; घायल सैनिकों के लिए रक्तदान, सैनिक परिवारों के कल्याण के लिए चौकस सेवाएं, रात्रि-गश्त, सेना में भर्ती होने की होड़, आत्मरक्षा के लिए सैनिक प्रशिक्षण आदि सभी क्षेत्रों में लोक सक्रिय थे। कवियों ने राष्ट्रभक्ति के गीत बनाये, नागरिकों ने लाखों-करोड़ों कंठों से भारत माता की जय बोली व महिलाओं ने राष्ट्र-रक्षार्थ महिला शक्ति समितियों का गठन किया। हमारी राष्ट्रीयता ने सिद्ध कर दिया कि भारत के लोग प्राणप्रण से भारत के लिए समर्पित हैं। युद्ध के दिनों में फिर से वे ही भाव जाग्रत हो जाते हैं जो कभी स्वतंत्रता आंदोलन के समय विद्यमान थे। तब भारत के लोग अपने को पंजाबी, हरियाणवी, राजस्थानी या महाराष्ट्रियन मानने से पूर्व भारतीय मानकर चलते हैं। राष्ट्रीयता जब-जब कसौटी पर चढ़ी है, शुद्ध सोना ही सिद्ध हुई है।

बाढ़ हो, लहरों ने ताण्डव मचाया हो, भूकम्प के कारण हजारों लोग बेघरबार हो गये हों, भयंकर अग्निकांड में लोग जिंदे ही जल गये हों, अकाल की विभीषिका ने भूख-प्यास के महाकाल की रचना की हो या महामारी के कारण जन-धन व पशु-धन की भयानक हानि हुई हो, ऐसे समय भी भारतीय राष्ट्रीयता की शक्ति देखते ही बनती है। प्रधानमंत्री राहत कोष, मुख्यमंत्री राहत कोष, दैनिक पत्रों द्वारा चलाये गये जनमंगल कोष, संस्थाओं के अपने कोष जनसहयोग से भर जाते हैं। सैकड़ों-हजारों ट्रकों में, रेलों में टैन्ट, दवाइयां, खाद्य-सामग्री, कम्बल और जीवनोपयोगी वस्तुएं जमा करके पीड़ास्थल पर पहुँचाई जाती हैं। चिकित्सक निःशुल्क सेवाएं देते हैं और स्वयंसेवी संस्थाएं पीड़ित मानवता के लिए शिविरों का आयोजन करती हैं। उस समय न कोई मात्र हिन्दू होता है या मात्र मुसलमान - ईसाई-सिख अथवा जैन; हर पीड़ित केवल इंसान होता है ऐसा इंसान जिसे साथी इंसानों की सहायता की दरकार है। यह है राष्ट्रीयता का करिश्मा। यह है राष्ट्रीयता का अंतर्निहित जादू।

भारतीय संस्कृति और हमारी राष्ट्रीयता सहस्रों वर्षों तक कायम नहीं रहती। हमने भारत को सदैव देव भूमि माना व इसकी मिट्टी को चंदन की प्रतिष्ठा दी। गंगा-यमुना की पवित्रधारा से अभिसिंचित हमारा देश फिर से विश्व में पुरातन प्रतिष्ठ प्राप्त करे, ऐसी कामना करना स्वाभाविक है तथा हर भारतीय का पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस धरातल पर खरा उतरे।

सावधान राष्ट्र, सबल राष्ट्र

20वीं शताब्दी साक्षी है कि पूंजीवादी व साम्राज्यवादी ताकतें कभी चुप नहीं बैठा करती। उनके पास भेड़िया न्याय है। मौका पाते ही निर्बल मेमने पर कोई-न-कोई आरोप लगाकर उसे खा जाने वाला न्याय। आरोप लगाने वाले भी वे तथा निर्णय घोषित करके, दण्ड देने वाले भी वे। विश्व युद्ध से पहले जर्मनी, इटली व उधर जापान ने अच्छी खासी धमाचौकड़ियां मचाई थीं। वे लगातार एक देश के बाद दूसरे देश पर कब्जा करते जा रहे थे। कमजोर राष्ट्र आसानी से शिकार हो जाते हैं। उनके पास न तो सैन्य शक्ति होती है और न इतने संसाधन कि वे लम्बे समय तक आक्रमणकारियों का सामना कर सकें। ऐसे में उनको साम्राज्यवादियों के आगे समर्पण करना ही पड़ता है। पर जहाँ राष्ट्रीयता की भावनाएं कूट-कूट कर भरी हों, वे देश भूखे-प्यासे रह कर भी सामना करते हैं फिर चाहे जो परिणाम क्यों न हो।

उज्जवल और धूमिल रेखाएं

राष्ट्रीयता का उज्जवल पक्ष नागरिकों के कर्त्तव्यबोध, उनकी उपलब्धियों तथा विदेशों में उनके द्वारा किये गये सकारात्मक कार्यों में झलका करता है। विश्व ने भारतीय मेधा की पहचान की है यह हमारे लिए गौरव की बात है। चाहे वैज्ञानिक उपलब्धियां हों या प्रौद्योगिकी का विकास, औद्योगिक उन्नति हो या सांस्कृतिक पक्ष का प्रतिनिधित्व, हर क्षेत्र में भारतीय युवकों व अनुभवी नागरिकों ने पूरे विश्व में अपनी पैठ जमा कर सभी को विस्मित किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति यदि अपने देश के युवकों को सलाह देने को विवश हो जाएं कि या तो वे जागरूक होकर विज्ञान, गणित एवं प्रौद्योगिकी में अपना वर्चस्व स्थापित करें अन्यथा प्रतियोगिता-आधारित इस व्यवस्था में भारतीय एवं चीनी युवक सबको पीछे

छोड़ देंगे तो हम आश्वस्त हुए बिना नहीं रहते कि हमारी राष्ट्रीय भावना परवान चढ़ रही है। भारत आज तीसरे विश्व की महान हस्ती बनकर उभर रहा है। हमारे युवक एवं युवतियां कला, मानवीकि, व्यापार-उद्योग, विज्ञान एवं विधि-क्षेत्रों में कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। शिक्षा क्षेत्र में तो आज भारतीय युवकों की सर्वत्र मांग है। अमेरिका में, कनाड़ा में, फ्रांस में तथा यूरोप के कई अन्य देशों में भारतीय युवक-युवतियां ऊंचे पदों पर हैं। हमारे विद्वानों में दुनिया के कई श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में भाषण देने हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। स्टील उत्पादन के क्षेत्र में आज भारतीय युवा विश्व की प्रतिष्ठित कंपनियों को खरीदने की क्षमता हासिल कर चुके हैं। हमारा निर्यात दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है। कम्प्यूटर विज्ञान में तो भारतीयों ने इतनी अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त की है कि दुनिया के कई विशेषज्ञ आंध्र प्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में जाकर उनकी उपलब्धियों पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं। योग विज्ञान में अभी रामदेव ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की है। उन्होंने कई दिनों तक लंदन में रह कर हजारों लंदनवासियों को योगाभ्यास का प्रशिक्षण दिया और इस तरह भारत की प्राचीन विरासत का मूर्त रूप उन्हें दिखाया।

अरुन्धती राय जैसे कई भारतीय लेखकों ने साहित्यिक क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता का प्रदर्शन किया है। अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर होकर विश्व के देशों में नियति की स्थिति तक पहुँचना, राष्ट्रीय आय में निरंतर वृद्धि होना, लोगों के जीवनस्तर में सुधार होना तथा टैंकों, हवाई जहाजों, पनडुब्बियों, आणविक अस्त्रों व रॉडार आदि उपकरणों के उत्पादन में श्रेष्ठता सिद्ध करना ऐसी बातें हैं जिन पर गर्व किया जा सकता है। भारतीय महिलाओं ने भी अनेक क्षेत्रों में श्रेयष्कर काम किया है। विश्व भर के पर्यटकों को भारत के प्रति रुझान निरंतर बढ़ता जा रहा है। इससे हमारे विदेशी मुद्रा कोष में वृद्धि होना स्वाभाविक है। गत वर्ष जब सुनामी विभीषिका हुई थी तो अनेक देशों की सहायता की पेशकश के बावजूद भारत ने किसी भी देश से किसी भी प्रकार की मदद नहीं ली तथा अपने संसाधनों से ही इस विराट त्रासदी का सामना किया। हमारे देश के गौरव और हमारी राष्ट्रीय भावना को विश्वस्तर पर प्रतिस्थापित करने के लिए यह एक उदाहरण ही पर्याप्त है। अन्य ढेर सारे उदाहरण है तभी तो आज विश्व में भारत को एक शक्ति के रूप में स्वीकारा जाने लगा है।

इतनी सारी उपलब्धियों के बावजूद यह नहीं कहा जा सकता कि राष्ट्रीयता की भावना को पूरी तरह से आत्मसात कर लिया गया है। एक अरब दस करोड़ लोगों के देश पर यदि लांछन लगे कि भ्रष्टाचार के मामले में विश्व के देशों में भारत का काफी ऊँचा स्थान है तो सिर शर्म से झुक जाता है। जिस देश में गबन, भ्रष्टाचार एवं रिश्वत आदि के मामले बार-बार उजागर होते रहें, जहाँ बड़े-बड़े नेता व प्रतिष्ठित व्यापारी उनमें लिप्त हों और जहाँ सरकारी अधिकारी भ्रष्ट साधनों के कारण अपनी आय के साधनों से कई गुना अधिक सम्पति अर्जित करते हों, वह देश यदि रसातल की ओर जाने लगे तो किसी को भी आश्चर्य नहीं होगा। चाहे हर्षद मेहता कांड हो या सी.आर. बी. दीवाला कांड, बैंक घोटाले हों या हवाला घोटाले, तहलका द्वारा गुप्त रहस्यों का पर्दाफाश हो या प्रतिभूति घोटाले, पूर्व संचार मंत्री के घर पर सी. बी.आई. के छापे हों या पैट्रोल-पम्पों के आवंटन में धांधली, चारा घोटाला हो या तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री पर दोषारोपण, सांसद रिश्वत कांड हो या फिर बोफोर्स नियमों का उल्लंघन ये तो कुछ मुट्ठी भर दृष्टांत मात्र है, समुद्र में तैरते बर्फ खण्ड का मार्ग ऊपरी सिरा है यह, पूरे देश की पड़ताल करें तो लगेगा कि राष्ट्र के शरीर में भ्रष्टाचार का यह कैंसर काफी फैल चुका है। इससे सभी देशभक्त नागरिकों का चिंतित होना स्वाभाविक है। इतना सब कुछ होते हुए भी संतोष इस बात का है कि देश के करोड़ों लोग अभी भी इन विषाणुओं से मुक्त हैं। वे गरीब रहते हुए भी ईमानदारी का पालन करने में कभी नहीं चूकते। हमारी राष्ट्रीयता उन्हीं के बलबूते पर सलामत है। मैच फिक्सिंग की वारदातों के बावजूद अधिकांश खिलाड़ियों में देशभक्ति की भावनाएं हैं। भारतीय संस्कृति हमें आपाधापी से, भ्रष्ट संसाधनों द्वारा धनार्जन से तथा अनैतिक आचरणों के विरुद्ध सावधान करती रहती है। वह हमारी अंतरात्मा को जगाती है ताकि हम अमंगल के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ें। आज जब विकसित देश पेटेण्ट प्रणाली, मुक्त व्यापार व्यवस्था, उदारीकरण, गेट समझौते, जी-7 समझौते, यूरो मुद्रा प्रणाली आदि के माध्यम से विकासशील देशों के बाजारों पर कब्जा करने में लगे हों तो ऐसी स्थिति में हमें अत्यन्त सजग होकर देश के अर्थतंत्र को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। इसमें जरा सी भी उपेक्षा आत्मघाती सिद्ध होगी।

और अंत में भारतीय सांस्कृतिक धारा अक्षुण्ण है, सनातन है, सर्वग्राह्य है अतः हमेशा प्रासंगिक रहने वाली है। हमारी राष्ट्रीयता इसी धुरी पर परिभ्रमण करती है इसलिए उसमें विचलन की संभावना नहीं है। यदि होती तो भारतीय संस्कृति और हमारी राष्ट्रीयता सहस्रों वर्षों तक कायम नहीं रहती। हमने भारत को सदैव देव भूमि माना व इसकी मिट्टी को चंदन की प्रतिष्ठा दी। गंगा-यमुना की पवित्रधारा से अभिसिंचित हमारा देश फिर से विश्व में पुरातन प्रतिष्ठा प्राप्त करे, ऐसी कामना करना स्वाभाविक है तथा हर भारतीय का पुनीत कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस धरातल पर खरा उतरे।

''कैलाश कुंज''
फार्ट डिस्पेंसरी के पास,
पापीता हाऊस के सामने
बीकानेर – 334001 (राजस्थान)

साम्प्रदायिक सौहार्द

कृष्णचन्द्र टवाणी

साम्प्रदायिक सौहार्द का अर्थ क्या है सर्वप्रथम हमें यह जानना चाहिए। सम्प्रदाय से साम्प्रदायिक शब्द बना है। विभिन्न मतावलम्बियों तथा धर्मों के समूह से ही सम्प्रदाय बनता है और सौहार्द से तात्पर्य परस्पर प्रेम द्वारा समाज में सामंजस्य बनाकर वातावरण को सुखद बनाना है। आज हमारे देश में अनेक सम्प्रदाय हैं। जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि प्रमुख हैं। इन सम्प्रदायों की भी अनेक शाखायें हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय अपने-अपने धर्मगुरुओं तथा नेताओं के विचारों के अनुसार कई भागों में विभक्त हो रहा है। किन्तु हमारा देश एक है, हम राष्ट्र की एक ईकाई हैं एक कवि ने कहा है

हम बंगाली हम पंजाबी गुजराती मद्रासी हैं।

लेकिन इन सबसे पहले केवल भारत वासी हैं।।

हम नहीं दिगंबर, श्वेतांबर तेरापंथी स्थानकवासी।

हम एक पंथ के अनुयायी हम एक देश के वासी।।

जैसे ब्रह्म एक है उसके नाम अनेक हैं। कोई उसे परमात्मा तो कोई खुदा, गॉड, वाहे गुरु, राम, कृष्ण, महावीर आदि नाम से पुकारता है। उसकी उपासना के विभिन्न साधन हैं तथा उसकी प्रार्थना अलग-अलग ढंग से की जाती है, किन्तु सभी का लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है।

आज हमारा देश नाजुक दौर से गुजर रहा है अनेक समस्याएं हैं। कदम-कदम पर इंसान भयभीत हो रहा है। आतंकवाद के कारण जीना दूभर हो गया है। अपनी जीवन नौका कैसे पार करें जब जल में भंवर ही भंवर हो तो किसका सहारा लें। आज भारतीय संस्कृति की मौलिक विचार धारा तथा सिद्धांत लुप्त होते जा रहे हैं। हमारे देश की एक श्रेष्ठ संस्कृति है, एक श्रेष्ठ विचारधारा है। मान्यता है सृष्टि के प्रत्येक जीव मात्र में ईश्वर का अंध विद्यमान है। इसीलिए तो यहाँ गौ को गौमाता मानकर तथा नाग को नाग देवता मानकर श्रद्धा से पूजा जाता है। वृक्षों की भी यहाँ पूजा की जाती है। इस प्रकार की श्रेष्ठ परम्पराओं का निर्वाह करने का एक ही उद्देश्य है कि प्रत्येक प्राणी से प्यार करो, हमारे संतों तथा ऋषियों ने हमें यही शिक्षा प्रदान की है। संत एकनाथ महाराज काशी से गंगाजल लेकर रामेश्वरम यात्रा करते हुए पहुँचते हैं। मार्ग में प्यास से तड़पते हुए गंदर्भ को गंगाजल पिलाकर उसकी जान बचा देते हैं। वो इसी को पुण्य कर्म और धर्म समझते हैं। संत नरसी मेहता ''वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाने रे'' भजन में समाज की पीड़ा समझाने का मार्ग दर्शाते हैं। स्वामी राम कृष्ण परमहंस ने तो ''नर सेवा नारायण सेवा'' कहकर प्रत्येक मानव मात्र में ईश्वर को देखने का संदेश दिया है। भगवान महावीर ने जीओ और जीने दो का सूत्र देकर अहिंसा को ही परमोधर्म बताया है।

उपर्युक्त पृष्ठ भूमि में जब हम आज हमारे देश की स्थिति देखते हैं तो हमारा हृदय विर्दीण हो जाता है। राष्ट्र कवि मथलीशरण गुप्त ने कहा था

हम कौन थे क्या हो गये क्या होंगे अभी।

आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।।

महात्मा गांधी ने कहा था

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
हैं सब आपस में भाई-भाई।

आज देश का नेतृत्व करने वाले नेता, संत महात्मा अपने स्वार्थ के लिए समाज को विभक्त कर रहे हैं। राजनैतिक दल अपने दलगत स्वार्थ के लिए, जातीय नेता अपनी जाति के स्वार्थ के लिए आग में घी डालने का कार्य कर रहे हैं। देखते-देखते हमारा करोड़ों का संगठित समाज टुकड़ों-टुकड़ों में बिखर रहा हैं कहते हैं संगठन में शक्ति है। किन्तु संगठन का नामों निशान कहीं दिखाई नहीं देता है। आज तो स्थिति यह है कि प्रत्येक परिवार में भी विभाजन हो रहा है। संयुक्त परिवार की प्रथा भी समाप्त हो रही है। जरा विचार कीजिए समाज में तथा हमारे पारिवारिक जीवन में जो सौहार्द व प्रेम की भावना होनी चाहिए वह आज कितने समाज और परिवार में दिखाई देती है। आज प्रत्येक परिवार एवं समाज में लड़ाई-झगड़े क्यों हो रहे हैं? जांत-पांत के भाव को मिटाना सहज सरल कार्य नहीं है। परन्तु सभी जातियों को जोड़ने का कार्य केवल साम्प्रदायिक सौहार्द से ही संभव है। इसी भाव को प्रभावी रूप से हमें प्रस्थापित करना चाहिए यही आज की महती आवश्यकता है तथा इसी का हमें तन-मन-धन से प्रचार-प्रसार करना चाहिए। अपनी जाति/सम्प्रदाय की भावना की **छोटी रेखा** न मिटाते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द की **बड़ी रेखा** का निर्माण करना यही सकारात्मक प्रयास समस्या का निराकरण कर सकता है। सभी संतों तथा ग्रंथों ने साम्प्रदायिक सौहार्द को ही प्रतिपादित किया है। तो

फिर क्यों हम आपस में एक-दूसरे सम्प्रदाय की निंदा स्तुति करते हैं। यदि हमें साम्प्रदायिक सौहार्द का स्वप्न साकार करना है तो अपने अंतर मन को महान बनाना होगा। सेवा, त्याग, प्रेम को अपना कर ही हम साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना को प्रबल कर सकते हैं। साम्प्रदायिक वैमनस्यता का निराकरण करना हमारे लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए सभी सामाजिक संगठनों, नेताओं, संतों, महात्माओं, समाज सुधारकों, प्रबुद्ध व्यक्तियों को मिलकर समाधान हेतु सामूहिक प्रयास करने होंगे। प्रत्येक परिवार में समरसता तथा समाज में एकता के बिना साम्प्रदायिक सौहार्द का स्थापित होना असंभव है। राष्ट्र में शांति, प्रेम एवं उत्थान का वातावरण तभी संभव होगा जब हमारे मन में **''सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय''** का भाव उत्पन्न होगा तथा व्यक्ति **''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद, दुखभाग्भवेत''** की भावना को जीवन में अपनायेगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम सब यह महसूस करें कि भारत विभिन्न जाति, सम्प्रदाय, संस्कृति तथा परम्परा वाला देश अवश्य है। किन्तु हमारा अस्तित्व तभी तक कायम रह सकेगा, जब तक हम सब एक हैं। राष्ट्रीय एकता ही साम्प्रदायिक सौहार्द का सबसे बड़ा सशक्त साधन है। साम्प्रदायिक सौहार्द तभी संभव है जबकि समाज में भेदभाव, पक्षपात, पूर्वाग्रह, दुराग्रह आदि समाप्त हो जावे तथा मनुष्य-मनुष्य में अंतर मिट जावे।

इन्हीं सब मानवीय स्वभावगत विद्रूपताओं को संवारने के लिए अणुव्रत आंदोलन प्रयासरत है। इसके अंतर्गत व्यक्ति निर्माण की दिशा में प्रयास किया जाता है। साम्प्रदायिक सौहार्द एक लम्बी प्रक्रिया है इस पर केवल भाषणों से काम नहीं चल सकता। जब तक जीवन में इसको अंगीकार नहीं किया जा सकता, तब तक समभाव सद्भाव और सौहार्द का वातावरण उत्पन्न नहीं हो सकता।

आज समाज में प्रत्येक व्यक्ति तनावग्रस्त है, वह किसी न किसी समस्या में उलझा हुआ है, भौतिकता की अंधी दौड़ में लिप्त है, सद्भावना व प्रेम का ह्रास हो रहा है। ऐसी स्थिति में साम्प्रदायिक सौहार्द कैसे संभव है? इस पर हम सभी को चिंतन-मनन करना चाहिए। भारतीय संस्कृति सदाचार, अध्यात्म को अपनाकर ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। अतः आइये हम सब पारस्परिक प्रेम व सद्भावना के साथ अध्यात्म की ओर अग्रसर होंवे तथा सबसे पहले अपने परिवार, मौहल्ले तथा समाज को साम्प्रदायिक सौहार्द रूपी पुष्पों की सुगंध से निर्मल, पवित्र व स्वच्छ बनावें।

प्रधान संपादक : 'अध्यात्म अमृत'
मदनगंज–किशनगढ़ 305801 (राज.)

अपेक्षा है राष्ट्रीय चेतना की

मुनि चैतन्यकुमार 'अमन'

राष्ट्र के विघटन और निर्माण के लिए जिम्मेदार केवल राजनीतिक दल ही नहीं होता बल्कि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक होता है। व्यक्ति से समाज तथा समाज से राष्ट्र का नव निर्माण होता है। जब व्यक्ति-व्यक्ति का निर्माण हो जाता है तो राष्ट्र का निर्माण स्वतः होता है उसके लिए अलग से प्रयत्न की अपेक्षा ही नहीं रहेगी। भारत जैसे महान लोकतांत्रिक राष्ट्र में राजनेताओं की बाढ़ आ रही है किन्तु राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याण की भावना वाले राष्ट्र के नेताओं की कमी होती जा रही है। सचमुच आज भारत को राजनेताओं की नहीं, राष्ट्र नेताओं की सख्त जरूरत है। सच्चा राष्ट्र नेता वह होता है जिसके मानस पर राष्ट्र गौरव का स्वाभिमान है तथा जो धर्म और अध्यात्म के साथ जुड़कर रहता है। राजनीति का प्राण तत्व है धर्म। यद्यपि राजनीति में धर्म का प्रयोग नहीं होना चाहिए लेकिन राजनीति पर धर्म का अंकुश अवश्य होना चाहिए। चेतना और शण के अभाव में शरीर में सड़ान्ध फूटती है उसी प्रकार धर्म के अंकुश के बिना राजनीति कूटनीति बन जाएगी। महान राजर्षि श्री भर्तृहरि ने अपने नीतिशतक में स्पष्ट लिखा है कि ''बारांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा'' अर्थात् राजा की नीति-राजनीति बारांगना की तरह अनेक रूपों वाली होती है। आज भारत को ऐसे विविध रूपों वाले राजनेताओं की नहीं बल्कि ऐसे राष्ट्र नेताओं की अपेक्षा है जिसकी कथनी एवं करनी में एकरूपता है।

सुशिक्षित पत्रकार जगत् ऐसे राष्ट्र नेताओं की पहचान कराने में तथा राष्ट्र को नया स्वरूप प्रदान करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। पत्रकार की लेखनी इतनी सशक्त और सटीक होती है कि वह चाहे जिस व्यक्ति, दल या समाज की धारा को आसानी से मोड़ दे सकता है। राष्ट्र को हिमालयीन ऊंचाइयां भी प्रदान कर सकता है तो पतन की गहरी खाई में भी धकेलना उसके लिए कलम का खेल है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी बहुधा कहा करते थे कि राष्ट्र की दो बड़ी शक्तियां हैं एक है शिक्षक वर्ग और दूसरी है पत्रकार वर्ग। इन दोनों से ही राष्ट्र में नैतिक क्रान्ति हो सकती है। नैतिक क्रान्ति के लिए आवश्यकता है व्यक्ति-व्यक्ति राष्ट्र के एक मात्र नैतिक आन्दोलन अणुव्रत के साथ जुड़े, अणुव्रत की भावनाओं को समझे और उसे जीवनगत करे, जिससे राष्ट्र में नैतिकता, प्रामाणिकता, आध्यात्मिकता की चेतना जागे। भारत सही मार्ग दर्शन प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याणकारी बन सके एवं तरक्की के नव द्वारों को उद्घाटित कर विश्व में ध्रुवतारे की तरह चमक सके।

बिन पानी सब सून

जसविंदर शर्मा

'यहाँ तक आते-आते सूख जाती हैं सभी नदियां, हमें मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।' कवि ने राजनैतिक भेदभाव और सामाजिक असमानताओं की तुलना नदियों की बदलती हुई जल-धाराओं से की है। एक स्थान पर ठहरा हुआ जल सड़ती हुई अर्थव्यवस्था का प्रतीक है। जल हमारी प्यास बुझाता है, हमें ताजगी देता है, हमें साफ सुथरा बनाता है मगर यही पानी एक जगह ठहर जाए तो सड़ने लगता है। जल चक्रवान रहे तभी प्रतिशोधित होता रहता है। रमता जोगी और बहता पानी ही शोभा पाते हैं। जल परिर्वतन का शाश्वत नाम है।

आदमी ने समूचा सौर मंडल खंगाल डाला, ग्रह-उपग्रहों को जांचा परखा, चांद पर उतरा, उसने मंगल पर अनेकों यान भेजे मगर कहीं उसे भी जल की एक छोटी-सी धारा बहती नजर नहीं आई। यह सब कर चुकने के बाद उसने यही निष्कर्ष निकाला कि जल है तो जीवन है। बिन पानी सब सून। केवल पृथ्वी ही एकमात्र खुशकिस्मत ग्रह है जहाँ इतनी मात्रा में जल उपलब्ध है।

मनुष्य दूसरे ग्रहों पर तो जल खोज रहा है मगर अपनी धरती पर उपलब्ध विशाल जल-भंडार को वह कितनी तेजी और लापरवाही से प्रदूषित कर रहा है। जिस गति से मनुष्य नदियों, झीलों और सागरों में कचरा फेंक रहा है उस हिसाब से जल्दी ही ये सब जल के भंडार गंदगी की दलदल बन जाएंगे।

प्रतिदिन लगभग बीस लाख टन कचरा व अपशिष्ट पदार्थ नदियों और समुद्रों में फेंका जाता है और इससे पच्चीस लाख लोग प्रदूषित जल से पैदा होने वाले रोगों के कारण मरते हैं। मरने वाले वन्य प्राणियों और पक्षियों की संख्या तो करोड़ों में जाती है। यू.एन.ओ. की रिर्पोट में कहा गया है कि अगर जल प्रदूषण की यही गति रही तो 2050 तक पीने का लगभग 20 हजार क्यूबिक किलोमीटर पानी कचरे की भेंट चढ़ जाएगा। इस जल प्रदूषण के लिए जिम्मेवार है हमारी अज्ञानता, लोगों की लापरवाही तथा देश की सरकारों की इस मुद्दे के प्रति उदासीनता।

ये कैसी विकट स्थिति है। सब तरफ पानी है मगर पीने के लिए साफ जल की एक बूंद उपलब्ध नहीं है। ये किसने हमारे जलाशयों में जहर घोल दिया है। नल पर खड़े लोग लड़ रहे हैं। जल के लिए जिले आपस में लड़ रहे हैं, प्रांत दांत पीस रहे हैं, कहीं जल सम्बधी मामला सुप्रीम कोर्ट तक जा पहुँचा है। देशों में नदियों के जल के बंटवारे को लेकर तनाव बढ़ रहे हैं। कहीं यह विश्वयुद्ध की तैयारी तो नहीं हो रही। गौर से देखें तो सूरतेहाल यही है। धरती पर मीठे पानी का जखीरा बढ़ती हुई आबादी, लापरवाही और कुप्रबन्धन के कारण खत्म हो रहा है। आदमी अंतरिक्ष में सुख ढूंढ रहा है मगर धरती पर उसे साफ पानी उपलब्ध नहीं है।

जल रहेगा तो जीवन खुशहाल रहेगा। गांधी जी ने कहा था कि कुदरत के पास हमारी आवश्यकता के लिए तो बहुत है मगर हमारे लालच के आगे कुदरत भी विवश है। इन्सान पानी को बहुत लापरवाही से खर्च कर रहा है। फव्वारे के नीचे घंटों नहाता है तथा पीने योग्य पानी से गाड़ियों की जमकर धुलाई करता है। शहरों के जंगल उगते जा रहे हैं। जल का सरंक्षण और सुप्रबन्धन हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

जल सृजन अथवा विध्वंस का प्रतीक है। बरसात हमारे दामन में समा जाए तो ठीक रहता है मगर जब इन्द्र देवता का कहर बढ़ जाए तो चारों ओर हाहाकार मच जाता है। आदमी आलस का मारा जल-प्रबन्धन नहीं करता। जंगल साफ कर रहा है। हर तरफ कारखाने खोल रहा है। शहरों का बड़ी तेजी से विस्तार हो रहा है। हरियाली कहीं नहीं हैं। ऐसे में हवा में उड़ता हुआ बादल भी भटक जाता है।

बादल गरजते हैं तो किसान की छाती में ठंडक पड़ती है मगर बरसात जब अविराम गिरने लगती है तो किसान का कलेजा दहशत से कांप उठता है। बाढ़ चारों तरफ विशाल सर्वनाश करती हुई खेतिहरों के सपनों पर बुहार लगा जाती है। गरीबी का कुचक्र रपटता रहता है। सामाजिक अव्यवस्था और राजनैतिक शोषण कितने घरों के चिराग गुल करती है, इस की गिनती करनी मुश्किल है।

जल की अतिवृष्टि भी उतनी ही त्रासद और विनाशकारी है जितनी कि उसकी अनावृष्टि। दोनों के बीच एक संतुलन रहे तो विकास का चक्र ठीक चलता है। प्रकृति बहुत बार असंयत हो उठती है। मानव अपने विवेक से जल का सुप्रबन्धन करके धरती पर स्वर्ग ला सकता है मगर राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता से उसने अपनी जाति के लिए मुश्किलें और बढ़ाई ही हैं। नेता अपने स्वार्थों के लिए लोगों के हितों को दांव पर लगाते हैं। सियासी करवटें नदियों के बहावों की तरह कब कौन-सा मोड़ ले लें कोई नहीं जानता।

जल संकट सम्बधी आंकड़े कितने ही भयावह क्यों न हों, अब हमें चौंकाते नहीं क्योंकि हम अपने समय के साथ जीते हैं तथा भविष्य की समस्याएं हमने आने वाली पीढ़ियों के लिए रख छोड़ी हैं। देश के बड़े भू-भाग में गर्मी की पदचाप के साथ ही भीषण सूखे की पदचाप सुनाई देने लगती है। कभी वर्षा होने में जरा-सा विलम्ब हुआ नहीं कि पूरे देश में सूखे की हाहाकार मच जाती है।

जल के कारण पैदा होने वाले तनाव को टालने, पर्यावरण को विनाश से बचाने तथा मनुष्य को स्वस्थ और विकासशील बनाने के लिए हमें समुचित और कारगर जल प्रबंधन करना होगा। हम अपनी विरासत में प्यास छोड़ जाएंगे तो मानवता के हत्यारे कहलाएंगे। जल के प्रयोग में मितव्ययता बरती जानी चाहिए तथा इसका दुरुपयोग रुकना चाहिए। तभी हमारी हरी-भरी धरती बंजर मरुस्थल बनने से बच पाएगी तथा हमारी नदियां वैदिक काल की सरस्वती नदी की तरह विलुप्त नहीं होंगी।

5/2 डी, रेल विहार, मंसा देवी,
पंचकुला –134109 (हरियाणा)

बोतलबंद पानी

स्वामी वाहिद काज़मी

मेरे यहाँ (अम्बाला छावनी में) हलवाई बाजार में चाट बेचने वाले एक दुकानदार के यहाँ सात स्वाद व सुवास वाले गोल-गप्पे मिलते हैं। यह कोई बात नहीं, बात तो यह है कि उसने अपने बोर्ड पर अंकित किया है हमारे यहाँ गोलगप्पों के लिए मिनरल वाटर प्रयोग किया जाता है। वह दुकान ही क्या, आज तो चाहे रेलवे स्टेशन हों, बस अड्डे हों, बड़े होटल हों, ढाबे हों या साधारण रेस्तरां, हर तरफ़ बोतलबंद मिनरल वाटर की बहार है और विक्रेताओं की पौ बारह! बुरा न लगे तो कहूँ कि इनके पुरखों ने भी कभी नहीं जाना होगा कि वास्तव में मिनरल वाटर क्या और कैसा होता है! वे ज़माने अब कहाँ जब नगर हों या गांव, सार्वजनिक स्थानों पर, रेलवे स्टेशन, बस अड्डों पर ठंडे पानी से भरे मटके रखे रहते थे। अब तो बोतलबंद पानी या शीतल पेय बेचने वालों की सारी कोशिश यही रहती है कि किसी को साधारण पानी मिल ही न सके।

भू-जल स्तर दिनोंदिन नीचे गिरता जा रहा है तिस पर रासायनिक उर्वरकों, औद्योगिक एवं घरेलू कचरे के रिसाव से पानी अशुद्ध होता जा रहा है। इसी तिल को ताड़ बनाकर बोतलबंद पानी और जल-शोधक छोटे-बड़े उपकरणों व संयत्रों का व्यापार करने वाली देशी-विदेशी कम्पनियां आम जनता को काल्पनिक हौआ खड़ा करके मानसिक रूप से भयभीत बनाने में लगी हैं। दिमागों में यह भरा जा रहा है कि नलों, पंपों आदि से सप्लाई होता पानी प्रदूषित एवं हानिकारक है। लेकिन जब बोतलबंद पानी का परीक्षण सरकारी या गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा किया जाता है तब असलियत सामने आती है कि वह पानी भी शत-प्रतिशत शुद्ध नहीं होता। बस एक झूठी मानसिक संतुष्टि रहती है कि हम साधारण अशुद्ध पानी नहीं बोतलबंद शुद्ध पानी पी रहे हैं।

कम ही लोग जानते होंगे कि इन बोतलों को बनाने में ऐसे हानिकारक रसायनों का प्रयोग किया जाता है, जिनसे अपच, (क़ब्ज़) वमन (उलटियां लगना) अतिसार (दस्त व पेचिश) आदि रोग ही नहीं, नपुंसकता का भी खतरा रहता है! कितने ही अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि बोतलबंद पानी और साधारण पेयजल में कोई फ़र्क नहीं होता। किन्तु बाजार के बड़े-बड़े धंधेबाजों ने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दी हैं कि हम साधारण सुलभ पेयजल को छोड़कर बोतलबंद पानी की ओर लपके चले जाते हैं।

बात इतनी ही नहीं है। जल शोधन के बड़े संयत्र हों या घरेलू मशीनें यह दोष दोनों में समान रूप से है कि जहाँ देशभर में पानी की कमी है वहाँ ये मशीनें जल शुद्धिकरण रूपी प्रक्रिया में 50 से 75 प्रतिशत पानी व्यर्थ बहा देती हैं। यहाँ यह भी जान लीजिए कि प्रकृति ने हमारा शरीर बनाया है इसमें इतनी प्रतिरोधक क्षमता भी भरी है कि सामान्य पानी में पाये जाने वाले जीवाणुओं को अपने आप नष्ट कर देती है। बोतलबंद पानी और मशीन द्वारा संशोधित जल पीने से हमें बख्शी गई वह प्राकृतिक प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पड़ जाती है मिट्टी के बर्तन में एक सबसे बड़ा गुण यह है कि वह पानी की अनेक अशुद्धियां दूर कर देता है। मटकों, ठिलियों में पानी रखना और पीना हमारे बुजुर्गों का जाहिलपन या पिछड़ापन नहीं था। मिट्टी के मटके, ढिलिया, घड़े में रखे पानी में मिट्टी की जो सोंधी महक होती है, बोतलबंद पानी के बाप में भी वह पैदा नहीं की जा सकती।

साधारण पानी को शुद्ध करने का दावा करते संयंत्र या घरेलू मशीनें जल-संशोधन के अमूमन दो तरीके उपयोग करती हैं। एक यू.वी. और दूसरी आर.ओ.। दोनों तरीकों की अपनी-अपनी कमियां हैं। सबसे बुरी बात यह कि इससे पानी में घुले कई आवश्यक (प्राकृतिक) तत्व नष्ट हो जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन इसका अनुमोदन नहीं करता। मगर जोरदार विज्ञापनबाजी और घनघोर प्रचार का कमाल है कि अधिकतर शहरों व घरों में वही 'शुद्ध पेयजल' पहुँच रहा है।

अब एक और बात। पाँच-छह सदस्यों वाले सामान्य परिवार में 20 से 30 लीटर पानी प्रतिदिन पिया जाता है। बोतलबंद पानी के हिसाब से उसकी कीमत दो से तीन सौ रुपये तक बैठती है। इसी स्थिति का लाभ उठा रही है घरेलू जल-शोधक मशीनें बनाने वाली कम्पनियां। एक मशीन की कीमत बारह से पंद्रह हजार तक होती है। यानी इतना पैसा खर्च करने पर भी गारंटी नहीं कि इनसे शुद्ध हुआ पानी वास्तव में शुद्ध है भी या नहीं!

कुल मिलाकर यह कि अनाप-शनाप पैसा भी खर्च करें और अपने देहतंत्र को हानि भी पहुँचाएं। कितना बढ़िया और समझदारी भरा सौदा है। है न! मगर हमारी 'समझदानी' इतनी लंबी चौड़ी और गहरी है कि उसमें आँखें खोलने वाली सच्चाइयां समाती ही नहीं हैं।

10, राज होटल, पुल चमेली, अम्बाला छावनी – 133001 (हरियाणा)

यशलिप्सा की पीड़ा

अशोक सहजानन्द

वातवरण में जब किसी रोग का वायरस फैलता है तो सभी लोग उसके शिकार नहीं होते। जो कमजोर होते हैं, रोगाणुओं से लड़ने की जिनकी प्रतिरोधक क्षमता क्षीण हो जाती है, वे ही उसके शिकार होते हैं। यह एक सर्व स्वीकृत नियम है। आज के बदलते समाज में भी तरह-तरह के वायरस फैले हुए हैं भ्रष्टाचार, सत्ता-लोलुपता, आडम्बर-प्रदर्शन और धर्म का व्यापारीकरण। भारत में प्रचलित प्रायः सभी धर्मों के (अपवाद स्वरूप कुछ को छोड़कर) अनुयायी उपरोक्त वायरसों के शिकार हो अपने-अपने धर्म को अप्रासंगिक बनाने की चेष्टा में लगे हुए हैं। यों धर्म की जड़े मजबूत होती हैं, पर कहीं न कहीं उन्हें आघात तो पहुँचता ही है।

20 वीं सदी ने 21 वीं सदी को कुछ अच्छे-बुरे उपहारों के साथ सूचना-क्रांति का भी एक अच्छा उपहार दिया है। लेकिन धार्मिक क्षेत्र में इसका उपयोग व्यक्तिगत-प्रचार और स्वार्थ सिद्धि के लिए हो रहा है। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 20 वीं सदी के पाँचवें दशक में एक संत के सम्मान समारोह में एक बात कही "व्यक्ति घर का मोह, संपत्ति का मोह, संबंधों का मोह तोड़ सकता है लेकिन यशलिप्सा का मोह तो बड़े-बड़े संतों से भी नहीं छूटता।

महर्षि पतंजलि ने योग को चित्तवृत्तियों का नियंत्रण कहा है। चित्त को नियंत्रण में रखने के लिए उन्होंने जो उपाय/साधन बतलाये हैं, उनमें अपरिग्रह भी एक है। सांसारिक व्यक्ति का अपरिग्रही बनना जरा कठिन है, लेकिन संन्यास धारण करने वाले लोगों के लिए यह अनिवार्य माना गया है। आज भी अनेक अपरिग्रही संत मिल जाएंगे जो प्रचार से दूर ही नहीं, स्व-प्रचार का भी सख्ती से प्रतिरोध करते हुए आत्म-कल्याण के साथ-साथ जन-कल्याण में भी लगे हुए हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से आज वही साधु-संत समाज में प्रतिष्ठित, लोकप्रिय एवं समादृत है जो अपरिग्रही नहीं, परिग्रही हैं। ऐसे संत भी हैं जो गृहस्थ हैं और पारिवारिक मायामोह में पड़े ही नहीं हैं, पारिवारिक उत्कर्ष में लगे हुए हैं। कभी-कभी ऐसा लगता है कि संत बनना भी एक पेशा बन गया है, जो भोग-विलास उपलब्ध कराने के साथ-साथ समाज में महिमामंडित भी कराता है। चरण-स्पर्श के लिए आतुर भीड़ ही उनके अहं की पुष्टि करती है। ऐसे अनेक संत इस युग में हुए हैं जो अपने पीछे एक अच्छी-खासी इंडस्ट्री छोड़ गए हैं और जैसा कि हर इंडस्ट्री एवं उद्योग में होता है, इस नव-उद्योग में भी आपसी कांट-छांट, गलाकाट प्रतियोगिता और पहले दर्जे का पतन दिनोंदिन बढ़ रहा है।

साधु-संत अपने आप में उद्योग नहीं बन जाते। उन्हें भी समाज का वही वर्ग उद्योग बना देता है जो धनाढ्य है, जो व्यापार करता है, कारखाने चलाता है। आज के उद्योग-व्यापार के उत्कर्ष के लिए अनिवार्य हो गये सारे हथकंडे अपनाता है। हालांकि इन हथकंडों के सूत्रपात में भी उसी की भूमिका प्रमुख रहती है। आप अनेक धर्मों के महिमामंडित साधु-संतों के पीछे ऐसे ही लोगों की जमात पाएंगे।

ऐसे लोग अपने कर्मचारियों को वाजिब तरक्की नहीं देंगे, अपने उत्पादों में मिलावट करेंगे,, काले धन की समानांतर अर्थव्यवस्था चलाएंगे और साथ ही धर्म-संरक्षक भी बने रहेंगे। किसी साधु-विशेष के महिमामंडन में उसकी सारी ताकत लग जाएगी। पूछा जा सकता है कि इससे उन्हें क्या लाभ? जानने वाले जानते हैं कि ऐसे लोग अष्टबाहु यानी ऑक्टोपस की तरह होते हैं। जितना बड़ा साधु, वह सत्तासीन व्यक्तियों तक पहुँचने का उतना ही प्रबल-सफल माध्यम/संत को, साधु को एक सेतु बना दिया है ऐसे लोगों ने। एक ऐसा सेतु जो मजबूत तो है ही, उनके अपने हेतुओं की पूर्ति में सहायक भी है। इसमें हेतु व्यक्तिगत भोग से लेकर सत्ताभोग और अपार धन एकत्रित करने की तृष्णा की पुष्टि तक हो सकते हैं।

आम आदमी नानाविध कारणों से दुखी है। अभाव, जीवन के मानदंडों में निरंतर बढ़ती खाई, अपनी आशाओं और आकांक्षाओं पर तुषारघात की मनःस्थिति में वह धर्म की शरण में जाना चाहता है पर वहाँ उसे मिलता है आडम्बर, स्वार्थ प्रेरित तामझाम। वह चमत्कृत होता है, उसका दुःखी मन संतोष पाता है। वह आत्म-विभोर हो उस गुरु की सर्वस्व समर्पण की मानसिकता की भूमि में पहुँच जाता है। उसके दुःख का भी शोषण हो रहा है, वह यह नहीं जानता। कुछ समय बाद जब उस गुरु से उसका मोह भंग होता है तो वह धर्म से विमुख हो जाता है।

धर्म से विमुखता कितनी घातक होती है, यह उसे पता नहीं होता। धर्म चाहे वह कोई हो, अपने समाज की धुरी होता है। सदियों से वह धुरी बना हुआ है। समय-समय पर उसमें विकृतियां भी आती हैं, तथापि किसी भी धर्म के मूल सिद्धांत इतने मजबूत और गहरी जड़ें जमाए होते हैं कि वे इन विकृतियों के खिलाफ एक नई प्रतिक्रिया को जन्म देते हैं। यह प्रक्रिया धर्म को शुद्ध करती है। लेकिन कालांतर में यह प्रतिक्रिया स्वयं उन दोषों का शिकार हो जाती है जिनके खिलाफ उसका जन्म हुआ था। किसी भी धर्म या समाज के इतिहास पर नजर डालिए, उसमें आपको यही तथ्य नजर आएगा।

प्रधान संपादक : 'सहज आनंद' (त्रैमासिक)
239, दरीबाकलां, दिल्ली–110006

सिसकते सामाजिक सरोकार

सुषमा जैन

राजनीति का तात्पर्य येन-केन-प्रकारेण संपदा संग्रह करना नहीं बल्कि आवश्यकताओं एवं सुख-सुविधाओं पर लगाम लगाते हुए अपने सद्संकल्पों और सद्भावनाओं के बल पर अधिक से अधिक ऐसे जनकल्याणकारी कार्यों को करना है जिससे जनता भयरहित और द्वेषमुक्त होकर राहत महसूस कर सके। परन्तु आज जिस प्रकार राजनीतिक नफे-नुकसान के फ्रेम में गढ़ लिए गये कुतर्कों की कतार से दब गई और नंगई राजनीति को जन्म देने की कवायद हो रही है, जिस प्रकार स्वयं को राष्ट्रवादी और विचारनिष्ठ नेता मानने वाले लोग ही तुष्टीकरण के भूखे प्रेत को रबड़ी खिलाकर उसे दिन-प्रतिदिन खूंखार बनाते जा रहे हैं, और जिस प्रकार एक के बाद एक आवश्यक वस्तुओं के दाम बढ़ाकर लोकतंत्र को तानाशाही में बदलने के प्रयास हो रहे हैं, उसे देखकर मुझे यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि विश्व के सबसे मजबूत लोकतंत्र माने जाने वाले भारतीय राजनीतिक क्षितिज से सामाजिक न्याय और नैतिकता का सूर्य तेजी से अस्तांचल की ओर बढ़ता जा रहा है।

अवसरवादियों की चारागाह, अपराधियों की पनाहगाह और नोट कमाने का जरिया बनती जा रही राजनीति से समता, सम्पन्नता और स्वराज जैसे गुण छिटक कर दूर जा पड़े हैं और उसके स्थान पर हिंसा, छल, फरेब, जुगाड़, सिफारिश, घूस अपहरण, गबन, घोटाले जैसे विकृत-विध्वंसक तत्वों में लिपटी राजनीति का कुरूप चेहरा उभरता दिखाई दे रहा है, जनतांत्रिक संस्थाएं ध्वस्त होती दिख रही हैं। सभी दल राजनीति की चौसर पर अपने-अपने दाँव खेल कर अलगाववादी अस्मिताओं का पोषण कर रहे हैं। कोई मुस्लिम पत्ता खेल रहा है तो कोई हिन्दुत्व का कार्ड और कोई क्षेत्रीय अहसासों की बाजी लगाकर राजनीतिक गुमनामी से बाहर निकलने की कोशिश में हजारों वर्षों से चली आ रही सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिता को तार-तार कर रहा है। इन्हें जनता के दुःख-दर्द से कुछ लेना-देना नहीं हैं बस जुगाड़ फिट कर किसी भी तरह सत्ता हासिल करना ही इनका मुख्य ध्येय है। दल-बदल विरोधी कानून में छिद्र का फायदा उठा एक निर्दलीय विधायक सुबह को इस्तीफा देता है, दोपहर को सत्तारूढ़ पार्टी अपना संख्या बल मजबूत करने के लिए उसे लपक लेती है और शाम को उसकी शान में पलक-पांवड़े बिछाकर उसे मंत्री बना देती है। इतना ही नहीं लोकसभा चुनाव हार गये महारथी भी बुद्धिजीवी-समाजसेवी बनकर किसी न किसी कोटे (पिछे के रास्ते) से पार कर राज्यसभा में पहुँचा दिये जाते हैं। जितनी लूट अब मची है शायद अंग्रेजों के जमाने में भी नहीं रही होगी।

आये दिन सीमापार से आतंकी घुसपैठ की खबरें आती रहती हैं, परन्तु नेतागण है कि 'अब की बार मार के देख' वाली नीति अपनाए हुए हैं। मणिपुर का अवरूद्ध सड़क साठ दिनों बाद जाकर खुली, दैनिक आवश्यक वस्तुओं के अभाव में जनता तड़पती रही। किसी ने कोई सुध नहीं ली। पिछले छः माह में नक्सली लगभग बीस बार बंद का आयोजन कर चुके हैं, मगर गुंडाराज के आगे सब गौण है। सरकारें जान-बूझकर बहशी, दरिंदे, खूंखार नक्सलियों पर कार्यवाही करने में इसलिए आनाकानी कर रही है क्योंकि ये चुनाव के समय वोटरों को धमकाने और उनसे वोट दिलाने के काम जो आते हैं। यह

चारों ओर फैले जातीय संघर्ष, निर्दयता की पराकाष्ठा और प्रशासन-राजनीति की अकर्मण्यता क्या नैतिकता है? हिसार और जीन्द जिलों की सीमा से लगे मिर्चपुर गांव में मात्र कुत्ता भोंकने पर एक दलित और उसकी विकलांग बेटी को उनके घर में बन्द करके जिंदा जला देना और मृतकों का दो दिन तक संस्कार न होने देना, शासन प्रशासन की चुप्पी क्या नैतिकता थी। नेता ऐशोआराम भरी जिंदगी जीते रहें और गरीब की झोंपड़ी में जलने वाली कुप्पी में तेल भी न हो क्या यही है नैतिकता। गरीब के पास ओढ़ने को फटी चादर भी न हो और नेता वोटों की मालाएं ओढ़ते फिरें क्या यही है देश की आजादी का अर्थ अपने ही लोग घर की बहु-बेटियों को कत्ल करते रहें और कोई उफ तक न करे क्या यही है नैतिकता? यदि यही सब नैतिकता है तो फिर अनैतिकता क्या होगी?

कहाँ की नैतिकता है कि नक्सली बर्बरता की सीमा लांघ मौत का प्लेटफॉर्म बन चुकी धरती पर लगातार मासूमों के खून की नदियां बहाते रहे और राजनेता चुप्पी साध लें? आखिर कब तक निहत्थे मासूमों और सुरक्षा बलों को कटवाया जाता रहेगा? कब तक दमन और हिंसक प्रतिरोध का खूनी खेल खेला जाता रहेगा? पिछले तीन माह में ही अनेक निर्दोषों सहित सैकड़ों जवान इन रक्त-पिपासु नक्सलियों के हाथों मौत के घाट उतारे जा चुके हैं 29 जून 2010 को छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले में ड्यूटी से पैदल लौट रही सी.आर.पी.एफ. की टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया, जिसमें 27 जवान मारे गये और 7 बुरी तरह घायल हो गये। पहले 6 अप्रैल को दंतेवाड़ा में इसी प्रकार घात लगाकर हमला किया गया था जिसमें 76 जवान एक साथ मारे गये थे। इसके बाद 8 मई को बीजापुर जिले में सुरक्षा बलों की बुलेट-प्रूफ गाड़ी बम से उड़ा दी गई जिसमें सी.आर.पी.एफ. के 8 जवान काल के गाल में समा गये। परन्तु शासन-प्रशासन मूक दर्शक बना रहा जिसका परिणाम एक और वीभत्स हादसे के रूप में सामने आया जब 17 मई को नक्सलियों ने दंतेवाड़ा के पास एक यात्री बस को बारूद सुरंग से उड़ा दिया। जिनमें 14 एस.पी.ओ. सहित 35 लोगों को मौत लील गई। नेताओं के कानों पर तब भी जूं नहीं रेंगी, शायद किसी बड़े कत्लेआम का इंतजार था। आखिर उनकी मनोकामना पूरी हुई जब झाड़-ग्राम में रेल पटरी उड़ा दी गई और मुंबई जा रही ज्ञानेश्वरी एक्सप्रेस से ट्रेन के करीब 150 यात्री 28 मई को अकाल मृत्यु के ग्रास बन गये।

क्या कभी सोचा है कि एक व्यक्ति की मृत्यु से कितने लोगों का करुण क्रंदन होता है जब एक साथ इतने लोगों का कत्ले आम होगा तो देश में कितनी चीख-पुकार मच रही होगी। यह दर्द वे ही जानते-समझते हैं जिन्होंने अपने खोये हैं, जो अनाथ होकर दर-बदर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दिये गये हैं और जिनकी आँखों में जिन्दगी भर के आंसू और सीने में जमाने भर का दर्द भर दिया गया है। आज जबकि नैतिकता के घनत्व को सहेजने की सबसे अधिक आवश्यकता थी उसे सरेआम तार-तार किया जा रहा है। साम्प्रदायिक विद्वेषी और विश्वासघाती नेताओं के संरक्षण में अलगाववादी खुला खेल खेल रहे हैं। पश्चिम बंगाल का लालगढ़ खून से लाल है, सिंगूर सुलग कर सिसक रहा है, नंदीग्राम पर नियंत्रण नहीं और कश्मीर जीवन के लिए कसमसाने के लिए विवश है।

लोगों को भय और भूख से तड़पाकर अपने कार्यकाल को उपलब्धि भरा, शानदार और ऐतिहासिक होने का ढिंढोरा पीटना कौन-सी नैतिकता है? महंगाई से जर्जर होते समाज को बाजार भरोसे छोड़ देना कौन-सा सुशासन है? खुद एयर कंडीशन में पड़े रहें और जनता महंगाई के अग्निकुण्ड की तपिश में तपती रहे, क्या यही नैतिकता है। जनता से बड़े-बड़े वायदे कर सत्ता में आते ही उन्हें विकास के नाम पर ठेंगा दिखा देना क्या नैतिकता है। 12वीं कक्षा में विज्ञान कॉमर्स एक साथ पढ़ाने का ढकोसला कर 6 से 14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का कानून पास हो जाने के बावजूद भी कोई हलचल न होना क्या नैतिकता है? चारों ओर फैले जातीय संघर्ष, निर्दयता की पराकाष्ठा और प्रशासन-राजनीति की अकर्मण्यता क्या नैतिकता है? हिसार और जीन्द जिलों की सीमा से लगे मिर्चपुर गांव में मात्र कुत्ता भोंकने पर एक दलित और उसकी विकलांग बेटी को उनके घर में बन्द करके जिंदा जला देना और मृतकों का दो दिन तक संस्कार न होने देना, शासन प्रशासन की चुप्पी क्या नैतिकता थी। नेता ऐशोआराम भरी जिंदगी जीते रहें और गरीब की झोंपड़ी में जलने वाली कुप्पी में तेल भी न हो क्या यही है नैतिकता। गरीब के पास ओढ़ने को फटी चादर भी न हो और नेता वोटों की मालाएं ओढ़ते फिरें क्या यही है देश की आजादी का अर्थ अपने ही लोग घर की बहू-बेटियों को कत्ल करते रहें और कोई उफ तक न करे क्या यही है नैतिकता? यदि यही सब नैतिकता है तो फिर अनैतिकता क्या होगी?

न्यू कृष्णानगर, जैन बाग, वीरनगर
सहारनपुर – 247001 (उ.प्र.)

....अब कचरे की भी होगी लूट

आशीष वशिष्ठ

शीर्षक पढ़कर आपको लग रहा होगा कि क्या कहा व लिखा जा रहा है। और हकीकत भी यही है कि कचरे की लूट होगी इस बात को पचा पाना आज तारीख में कोई आसान बात नही है। लेकिन जिस तादाद में देश में कचरे के ढेर बढ़ते जा रहे हैं उसी के समांतार कचरे से निपटने के लिए भी उपाय भी सोचे जा रहे है। कचरा प्रबंधन वर्तमान में सबसे अधिक चिंता व शोध का विषय है। दुनिया भर के वैज्ञानिक, पर्यावरणविद, सामाजिक कार्यकर्ता और पर्यावरण प्रेमी कचरा प्रबंधन के विभिन्न उपाय ढूंढने में व्यस्त है। कचरा प्रबंधन की कोई सुदृढ़ योजना फिलहाल हमारे पास नहीं है अभी इस संबंध में हो रहे शोध भी अपने प्रांरभिक चरण में है। बाजार में उपलब्ध विदेशी व देशी तकनीकों को अपना कुछ छोटे मोटे नुस्खे अमल में भी लाए जा रहे हैं। जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं जिससे भविष्य के लिए संभावनाएं जगती हैं। जिस तेजी इस दिशा में शोध हो रहा है उससे तो ऐसा ही लगता है कि आने वाले समय में हमारे हाथों में कचरे के विशाल अंबार से निपटने का मजबूत सूत्र होगा। और जब हम कचरे को सही उपयोग करना सीख जाएंगे या हमें ये पता चल जाएगा कि हम जिस चीज को बेकार व कूड़ा समझ कर यूं ही फेंक रहे है उसकी बाजार में व्यावसायिक मूल्य है उस दिन हम घर से बाहर कचरा फेंकने से पहले एक बार जरूर सोचेंगे और अगर किसी को कचरे दे गए भी तो उसके बदले पैसा वसूलना नहीं भूलेंगे। आज ये बात मजाक लग सकती है लेकिन वो समय भी बहुत जल्द आने वाला है जब देश में सोने चांदी की जगह कचरे की लूट होगी और कचरे को बहुमूल्य समझा जाएगा।

नोएडा स्थित ईकोवेस्ट मैनेजमेंट कम्पनी नोएडा में करीब 18 हजार घरों की गंदगी समेटती है। एकत्र किए गए कचरे को खाद में तब्दील करके उसे खुले बाजार में बेचकर कमाई करती है। घरों की गंदगी के अलावा अब उनके ग्राहकों में कुछ व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को कूड़ा करकट भी शामिल हो गया है। ईकोवेस्ट के जनक व प्रबंध निदेशक मानिक थापर बताते हैं कि सेंटर स्टेज मॉल और हल्दीराम के अलावा हम कुछ छोटे-छोटे रेस्टोरेंट का कूड़ा भी जमा करते हैं। कमर्शियल वेस्ट के अलावा जल्द ही हम बायो मेडिकल वेस्ट की तरफ जाएंगे। इस दिशा में असम में कुछ काम आगे बढ़ा है। लेकिन नोएडा में पिछले कुछ दिनों में उन घरों की तादाद कम हुई है जहाँ से ईकोवाइस वेस्ट कंपनी कचरा इकट्ठा करती थी। थापर इसकी एक दिलचस्प वजह बताते हैं, 'लोगों ने कूड़ा उठाने के लिए हमसे ही पैसे मांगने शुरू कर दिए थे। इसलिए हमने कुछ घर छोड़ दिए, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि काम थम गया है। अब हमारी व्यावसायिक सूची बढ़ती जा रही है। विस्तार के नए मोर्चे खुल रहे हैं। थापर के काम से प्रभावित होकर दिल्ली के तत्कालीन उपराज्यपाल तेजेन्द्र खन्ना ने उन्हें एमसीडी की सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट कमेटी का सलाहकार बनाया है। थापर के मुताबिक दिल्ली में गार्बेज मैनेजमेंट की खातिर कुछ प्रोजेक्ट पाइप लाइन में हैं जिन पर जल्द कुछ फाइनल होने वाला है। ईकोवेस्ट कंपनी आने वाले समय में आगरा, जयपुर और केरल में भी यही काम करने वाली है। ईकोवेस्ट के अलावा कुछ समाजसेवी संस्थाएं व अन्य कंपनिया भी कूड़े से खाद बनाने का काम नोएडा व आसपास के इलाकों में कर रही है।

घरों में हमेशा बेकार समझे जाने वाले सब्जियों के छिलके व फल-पत्तियों का भी अब कारगर इस्तेमाल किया जा सकता है। इन अपशिष्ट पदार्थों से घरेलू गैस बनायी जा सकती है। इस दिशा में लखनऊ विश्वविद्यालय के अक्षय ऊर्जा पाठयक्रम की छात्रा ने शोध कर गतिशील बायोगैस संयंत्र बनाया है, जिसे कुछ समय बाद बाजार में उतारने की तैयारी चल रही है। पाठयक्रम की समन्वयक डॉ. ऊषा वाजपेयी के मुताबिक घरेलू अपशिष्ट को बायो गैस संयंत्र में डालने पर उसमें एनारोविक बैक्टीरिया उत्पन्न होते हैं। इससे मीथेन गैस का निर्माण होता हे। उन्होंने इस गैस के निर्माण में किसी भी तरह के नुकसान व दुर्गन्ध की आशंका से इनकार किया है।

प्लास्टिक कचरा पर्यावरण को प्रदूषित करने में सबसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है, किंतु चेन्नई स्थित तेलाम्मल इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्रों ने कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओं के बाद प्लास्टिक कचरे से पेट्रोल प्राप्त करने का दावा किया है। उनके अनुसार जब प्लास्टिक के कचरे को 400 डिग्री सेन्टीग्रेट तक गर्म किया जाता है तो आसवन द्वारा उससे कच्चा माल यानी तेल प्राप्त होता है। उसी प्रकार नागपुर में रायसीना इंजीनियरिंग कॉलेज के रसायन विभाग में चमत्कारी सफलता प्राप्त हुई है। यहाँ के प्रयोगकर्त्ताओं ने एक किलो प्लास्टिक कचरे से लगभग पौने लीटर पेट्रोल निकाल कर इंडियन ऑयल कॉरोपोरेशन के वैज्ञानिकों को सकते में डाल दिया। इसके लिए उन्होंने प्लास्टिक को कोयला और अब तक गुप्त रखे रासायनिक पदार्थ के साथ गर्म किया। इसी शृंखला में महाराष्ट्र सरकार और जड़गांवकर यूनिट, वेस्ट प्लास्टिक मैनजमेंट एण्ड रिसर्च कम्पनी द्वारा संयुक्त रूप से मुंबई और नागपुर में एक परियोजना की

शुरूआत की गयी है जिसमें प्लास्टिक के कचरे से हाइड्रोकार्बन बनाया जायेगा।

अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रीत्व काल में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में वर्ष 1998 में कचरे से बिजली बनाने का संयंत्र लगाया गया था। अपशिष्ट से विद्युत उत्पादन की इस परियोजना के अनुसार बूम (बिल्ड ओर ऑपरेट मेन्टेन) के आधार पर ठोस अपशिष्टों (कूड़े) से प्रतिदिन 5 मेगावाट विद्युत उत्पादन व 135 टन बायोफर्टिलाइजर उत्पादित करने वाली इस परियोजना की स्थापना व संयंत्र संचालन के लिए नगर निगम ने एशिया बायो-एनर्जी लिमिटेड से अनुबंध किया था लेकिन सरकारी कार्यावाहियों व प्रशासनिक फेर में पड़कर वाजपेयी जी की महत्वाकांक्षी योजना सफल नहीं हो पाई। अगर कूड़े से बिजली बनाने की योजना सफल हो जाती तो विद्युत उत्पादन एवं फर्टिलाइजलर से प्रतिवर्ष 60 लाख की आय होनी थी वहीं केन्द्र से भी प्रोत्साहन धनराशि के रूप में 75 लाख रुपये प्राप्त होते। एशिया बायो-एनर्जी के योजना छोड़कर जाने के बाद अन्य निजी संस्था आरसेल व मुम्बई की एक अन्य संस्था प्लांट टेक ओवर करने के लिए आगे आयी। नगर निगम से जैविक कूड़ा मुहैया न करा पाने पर इस योजना से अपने हाथ खींच लिये।

वर्तमान में लखनऊ व आगरा में कूड़े की समस्या से निजात पाने के लिए कम्पोस्ट खाद बनाने का कारखाना स्थापित किया जायेगा। शहरी विकास मंत्रालय ने लखनऊ व आगरा में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट के लिए तैयार की गयी 80.23 करोड़ की दो अलग अलग परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान कर दी है। लखनऊ के लिए 47.23 करोड़ रूपये व आगरा के लिए 33 करोड़ की परियोजना को मंजूरी मिली है। इसके तहत निजी कंपनी के कर्मचारी मोहल्ला एवं कॉलोनीवार कूड़ा एकत्र करेंगे और फिर उसे ढके हुए वाहनों के जरिये ले जायेंगे। गलियों से इकट्ठा होने वाले कूड़े को रखने के लिए भी दो तरह के बड़े कूड़ेदान चिह्नित स्थानों पर रख जायेंगे। जबकि गैर जैविक पदार्थों वाले कूड़े से निचली जमीन की पटाई की जायेगी। जवाहरलाल नेहरू नगरीय नवीकरण मिशन के तहत उक्त परियोजना मंजूर की गयी है। इसके मुताबिक कूड़ा उठाने से लेकर उसे निर्धारित स्थान पर ले जाने का काम चूंकि गैर सरकारी संस्था को सौंपा जा रहा है। इसलिए परियोजना के मुताबिक प्रत्येक गृह स्वामी की आय के हिसाब से पाँच रुपये से लेकर पचास रुपये तक मासिक शुल्क वसूल किया जायेगा। लखनऊ में कम्पोस्ट बनाने का कारखाना हरदोई रोड पर बायो-एनर्जी प्लांट के पास तथा आगरा में यह शाहदरा के नजदीक उपलब्ध जमीन पर स्थापित किया जायेगा। कूड़ा डम्पिंग ग्राउण्ड के लिए लखनऊ नगर निगम ने हरदोई रोड स्थित बरावनकलां गांव में 121 एकड़ जमीन को चिह्नित किया है।

गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्त्रोत मंत्रालय देश में कूड़े-कचरे से ऊर्जा उत्पादन परियोजनाओं को बढ़ावा दे रहा है। यह मंत्रालय प्रदर्शनियां लगाकर लोगों को जैव पदार्थों से ज्यादा से ज्यादा मात्रा में मीथेन बनाने की प्रक्रिया दिखाता है। इन प्रदर्शनियों का एक अन्य उद्देश्य विभिन्न प्रकार के कूड़े कचरे से ऊर्जा बनाने के लिए विविध प्रौद्योगिकियों का भी प्रदर्शन करना है जिससे बिजली का उत्पादन हो सके। पंजाब में लुधियाना के पास हीबोवाल स्थित कूड़े कचरे से ऊर्जा उत्पादन संयंत्र एक ऐसा ही प्रयोग है। वहां पशुओं के गोबर से एक मेगावाट बिजली और जैविक खाद तैयार होता है। मंत्रालय द्वारा स्थापित इस संयंत्र को पंजाब ऊर्जा विकास एजेंसी चला रहा है। यह ढाई एकड़ में फैला हुआ है। इसके परिसर में 500 गोशालाएं प्रतिदिन 2500 टन गोबर इस संयंत्र को उपलब्ध कराती हैं। अपनी जरूरतों को पूरा करने के बाद बची हुई बिजली राज्य विद्युत ग्रिड को उपलब्ध करा दी जाती है। बिजली बनाने के अलावा संयंत्र प्रतिदिन 50 टन जैविक खाद भी तैयार करता है। 13 करोड़ रूपये की लागत से बना यह संयंत्र दिसंबर 2004 में शुरू किया गया था। राज्य विद्युत बोर्ड ने बिजली के जो शुल्क निर्धारित किया है उसके अनुसार यह संयंत्र आर्थिक रूप से उपयोगी सिद्व हुआ है। खाद के रूप में गोबर के इस्तेमाल से यह आय भी अर्जित कर रहा है। इस संयंत्र का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे ग्रीन हाऊस गैस बहुत कम निकलती है। संयंत्र से ताप कम निकलने के कारण वातावरण गर्म नहीं होता। संयंत्र ने लगभग 100 लोगों को रोजगार दिया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूड़की समय-समय पर संस्थान के कार्यों की निगरानी करता रहता है।

मध्य प्रदेश की सतपुड़ा पहाड़ियों में बसे कसई गांव में गैसीफायर और जेनरेटर लगाकर हर रोज 20 किलोवाट बिजली पैदा की जा रही है। घरों में ही नहीं, गली में, स्कूल में, आटा चक्की और ठंडे दूध गोदामों के लिए भी बिजली मिल रही है। पानी का पंप भी चलाया जा रहा है। यहाँ अपारंपरिक ऊर्जा मंत्रालय की मदद से 16 लाख रूपये में दो बायोमास गैसीफायर और एक सामुदायिक बायोगैस प्लांट लगाया गया है। हर परिवार से हर महीने 70 रूपये नकद और 50 रूपये की घास फूस और डंडियां, इस तरह 120 रूपये का अंशदान लिया गया। बायोमास गैसीफायर की क्षमता 10-10 किलोवाट की है। बिजली मिलने पर कसई गांव में दूरदर्शन और रेडियो का ज्ञानरंजन (इनफोटेनमेंट) लहराने लगा है। एक गांव की आवश्यकता 10 हैक्टेयर जमीन में उगी झाडियों और अन्य पौधो तथा कृषि छीजन से पूरी की जा सकती है। अपने आप उग आनेवाले बेहया, आग, गाजर घास, जलकुंभी और अन्य खरपतवार इत्यादि सुखाकर बायोमास ऊर्जा के काम में लाये जा सकते हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में 60 करोड़ टन कृषि छीजन पैदा होती है। इससे 79000 मेगावाट बिजली पैदा की जा सकती है। इस क्षेत्र में अब निजी कंपनियां भी आने लगी हैं। कर्नाटक के मांडिया

जिले के 48 गांवों के 120000 परिवारों को बायोमास ऊर्जा से पैदा बिजली देना शुरू कर दिया गया है। इसका साढ़े चार मेगावाट का बिजलीघर बायोमास से बिजली बनाने का भारत का सबसे बड़ा संयंत्र है। आज भी 60 प्रतिशत देहाती घरों में रोशनी के लिए मिट्टी का तेल जलाया जाता है। 18 करोड़ टन के करीब बायोमास (लकड़ी और टहनियां) चूल्हों में झोंक दिया जाता है। दोनों में धुआं पैदा करते हैं। हर साल दुनिया में घरों में होने वाले वायु प्रदूषण से लगभग 16 लाख मौतें होती हैं। बायोमास ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत विश्व को इस विडंबना से मुक्ति दिला सकते हैं।

विदेशों में कचरे के उपयोग से बड़े-बड़े उद्योग लगाए जा रहे हैं। पुराने रबर, पानी की खाली बोतले, कांच, कागज, कपड़ा, प्लास्टिक, फल सब्जी के छिलके उपयेग में लाए जा रहे हैं। विदेशों में रबर के कचरे से निपटने के लिए रबर को गला कर रबर शीट को तैयार किया जाता है। बाद में इसी रबर शीट से देश भर की सड़कों को लेमिनेट किया जाता है। हमारे देश में भी लाखों करोड़ों दुपहिया व चार पहिया वाहनों की भरमार है। साथ ही रबर के पुराने टायरों का विशाल कचरा हमारे यहाँ उपलब्ध हैं और जिस दिन कंपनियां इस दिशा में काम करने लगेंगीं। उस दिन कचरे से कमाई तो होगी ही वहीं कचरे के प्रबंध भी मुफ्त हो जाएगा।

अभी हाल ही में दिल्ली में कूड़ा प्रबंधन की जिम्मेदारी एससीडी ने प्राईवेट कंपनी को सौंपने का फैंसला लिया है। बड़ी कंपनियों के मैदान में आ जाने से कूड़ा बीनने वालों की रोजी रोटी का सवाल उठ खड़ा हुआ है। इसका सीधा असर राष्ट्रीय राजधानी में दो लाख कूड़ा बीनने वालों की जीविका पर पड़ेगा। कंपनियां कूड़ा प्रबंधन करेंगी जिससे इनका रोजगार छिन सकता है। हैजार्ड सेन्टर के निदेशक डूनू रॉय ने बताया कि शहर में हर रोज करीब आठ हजार टन कूड़ा निकलता है जो वर्ष 2020 तक 20 या 22 हजार टन हो जाएगा। शहर के दो लाख कूड़ा बीनने वाले हर दिन लगभग 20 से 25 फीसदी तक गंदगी बटोर लेते हैं। यदि निजी कंपनियां इस व्यवसाय में उतरती हैं तो इन गरीबों का क्या होगा? इनके लिए काम करने वाली गैर-सरकारी संस्था बाल विकास धरा के अध्यक्ष देवेन्द्र कुमार बराल ने नाराजगी जताते हुए कहा कि इन निर्बलों की मदद करने के बजाय निजी कंपनियां इनकी रोजी-रोटी छीनना चाहती हैं। दरअसल सवाल कूड़ा बीनने का नहीं है असलियत यह है कि कूड़ा अपने आप में कमाई व ऊर्जा का बड़ा स्त्रोत है। यह बात सरकार को भी समझ आ चुकी है इसलिए धीरे धीरे ही सही लगभग हर बड़े शहर में कचरा प्रबंधन के लिए प्राईवेट कंपनियों में होड़ मची है। कचरे में इन कंपनियों को भविष्य नजर आने लगा है।

स्वतंत्र पत्रकार, लखनऊ (उ.प्र.)

राष्ट्र चिन्तन

- देश के कई हिस्सों में नक्सलियों के खिलाफ अभियान में जहां सफलताएं हाथ लगी हैं, वहीं पश्चिम बंगाल व छत्तीसगढ़ में करारे झटके भी लगे हैं। हम बखूबी अवगत हैं कि माओवादी हथियारों के बल पर सत्ता हासिल करने के मंसूबे पाले हुए हैं। हम उन्हें सफल नहीं होने देंगे।

  पी. चिदंबरम, *गृह मंत्री*

- देश में इस वर्ष बहुत बढ़िया फसल होगी। इस समय धान की रोपाई चल रही है और कई राज्यों में अच्छी बारिश होने की रिपोर्टें मिली हैं, इसलिए इस साल अनाज की बहुत अच्छी पैदावार होने की उम्मीद है। पंजाब व हरियाणा में आई बाढ़ के कारण वहां समस्या है लेकिन वह कुछ ही इलाकों तक सीमित है। उनके हिसाब से वहां की स्थिति ज्यादा गंभीर नहीं है। इस वर्ष तिलहन और दालों की पैदावार पिछले दो वर्ष के मुकाबले ज्यादा होने के आसार हैं। मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार गत एक जुलाई तक 46 लाख हेक्टेयर में धान की रोपाई हो चुकी है, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार 47 लाख 37 हजार हेक्टेयर में गन्ना, 43 लाख 68 हजार हेक्टेयर में कपास, 28 लाख 66 हजार हेक्टेयर में तिलहन की बुआई हुई है यह भी पिछले वर्ष की तुलना में अधिक है।

  शरद पवार, *कृषि मंत्री*

- नक्सली तत्त्व हमारे ही समाज के अंग हैं, यद्यपि उन्हें हिंसा का रास्ता चुनने के लिए भटका दिया है। केवल सुरक्षा बलों के माध्यम से अभियान चलाने से दूरी और बढ़ती है। यदि इस समस्या का जमीनी स्तर पर सही समाधान नहीं किया गया तो समस्या और तीव्र गति से फैलेगी। इसलिए विकास तथा बल प्रयोग करने में सही संतुलन अपनाने की जरूरत है। केन्द्र की ओर से राज्य को विकास के लिए पर्याप्त मदद न मिलने के बावजूद राज्य ने नक्सली क्षेत्रों का विकास किया, जिस कारण नक्सली घटनाओं में कमी आई है। केन्द्र को भी विकास कार्यों के लिए पर्याप्त सहायता देनी चाहिए।

  नीतीशकुमार, *मंत्री : बिहार राज्य*

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है–नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हों और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
विशेष अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग**
अणुव्रत योगक्षेमी	**प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग**

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2.	श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3.	श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4.	श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5.	श्री कमलेश भादानी	तिरूपुर	6.	श्री मगन जैन	तुषरा

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2.	श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा
3.	श्री जसराज बुरड़	जसोल	4.	श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर
5.	श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता	6.	श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव
7.	श्री रूपचंद सुराना	गुवाहाटी	8.	श्री मूलचंद पारख (वैरायटी हॉल)	ऊंटी

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

1.	श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2.	श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3.	श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4.	श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5.	श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6.	श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7.	श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा	8.	श्रीमती भारती मुरलीधर कांठेड़	दिल्ली
9.	श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	उदयपुर	10.	श्री सुबोध कोठारी	गुवाहाटी
11.	श्री जयसिंह कुंडलिया	सिलीगुडी	11.	श्री राजेन्द्र सेठिया	गंगाशहर
12.	श्री सी.एल. सरावगी	झांसी			

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

श्वास रोग और प्रेक्षा चिकित्सा :2:

मुनि किशनलाल

उपरोक्त (इससे पूर्व अंक में प्रकाशित) प्रयोगों का आसनों द्वारा प्रायोगिक अभ्यास इस प्रकार है

1. पश्चिमोत्तानासन

विधिः

1. श्वास भरते हुए दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाएं।
2. श्वास छोड़ते हुए दोनों हाथों से पैर के अंगूठे को पकड़ें और नाक घुटने पर लगाएं।
3. श्वास भरते हुए दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाएं।
4. श्वास छोड़ते हुए हाथ नीचे लाएं।

लाभः

1. पेट का भार कम होता है।
2. मेरुदण्ड लचीला होता है।
3. मधुमेह में लाभदायक है।
4. कब्ज एवं स्वप्न दोष दूर होते हैं।

2. भुजंगासन

सीने और पेट के बल भूमि पर लेटें। मस्तक जमीन से लगाएं। पैर के अंगूठे भूमि पर स्पर्श करते हुए परस्पर सटे रहेंगे। दोनों हाथों की हथेलियां बगल की पसलियों से एक-एक फुट दूर रहेंगी, कोहनियां ऊपर की ओर उठी रहेंगी।

विधिः

1. श्वास भरते हुए गर्दन को ऊपर उठाएं, आसमान की ओर देखें।
2. इसी स्थिति में फुफकार के साथ श्वास को मुंह से बाहर निकालें।
3. श्वास को भरते हुए सीने और गर्दन को पूरा ऊपर उठाएं। नाभि तक का भाग ऊपर उठ जायेगा। गर्दन को जितना पीछे ले जा सकते हैं, ले जाएं, ऊपर आसमान की ओर देखें। क्षमतानुसार श्वास रोकें।
4. फिर फुफकार के साथ श्वास को मुंह से निकालें। मस्तक को भूमि से लगाएं और पूर्व स्थिति में आ जाएं।

नोट भुजंगासन को तीन प्रकार से किया जाता है। पहली स्थिति में हथेलियां पसलियों से एक-एक फुट की दूरी पर, दूसरी स्थिति में आधा फुट और तीसरी स्थिति में पसलियों से सटाकर रखते हैं।

लाभः

1. सीना मजबूत होता है।
2. कब्ज दूर होती है, पाचन-तंत्र पुष्ट बनता है।
3. क्रोध दूर होता है। स्मृति का विकास होता है।
4. गर्दन और पीठ का दर्द दूर होता है।

3. मत्स्यासन

विधिः

1. पीठ के बल लेटकर पद्मासन लगाएं।

2. दोनों हथेलियां कंधे के पास रखें। श्वास भरते हुए कमर को उठाएं, गर्दन को मोड़ें, दोनों हाथों से पैर के अंगूठों को पकड़ें। (श्वास सामान्य रहेगा)
3. हाथ का सहारा लेते हुए गर्दन को सीधा करें।
4. श्वास भरते हुए पद्मासन खोलें। शरीर को शिथिल छोड़ें।

लाभः

1. गर्दन, सीना, हाथ-पैर व कमर की नाड़ियों के दोष दूर होते हैं।
2. आँख, कान, टॉन्सिल, सिर दर्द से मुक्ति मिलती है।
3. सीना चौड़ा होता है। शारीरिक स्फूर्ति और स्थिरता बढ़ती है।
4. मन शुद्ध बनता है। ब्रह्मचर्य की साधना में सहायक बनता है।

4. हृदयस्तंभासन

विधिः

1. पीठ के बल लेटें, श्वास छोड़ते हुए दोनों हाथों को सिर की ओर ले जाएं पैरों को सीधा रखें।
2. श्वास भरते हुए, हाथों और पैरों को ऊपर उठाएं 45 डिग्री का कोण बनाएं, दृष्टि को हृदय पर केन्द्रित करें। केवल पीठ भूमि पर रहेगी।
3. श्वास छोड़ते हुए धीरे-धीरे हाथ और पैर भूमि पर ले जाएं।
4. दोनों हाथ शरीर के पास ले आएं, पैर खोलें, विश्राम करें।

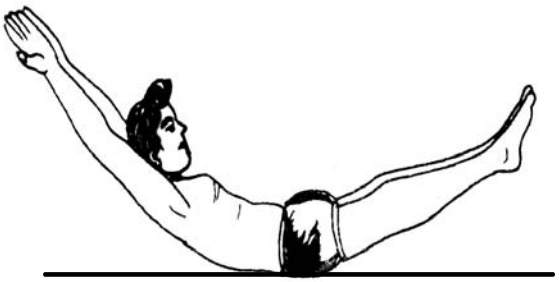

लाभः

1. हृदय की शक्ति का विकास होता है।
2. पीठ के दोष दूर होते हैं। पाचन-तंत्र पुष्ट होता है।
3. हृदय में रक्त प्रवाह सुचारू रूप से होता है।
4. तनाव दूर होता है।

5. नौकासन

विधिः

1. आसन पर पेट के बल लेटें।
2. हाथों को मस्तक की ओर आगे फैलाएं।
3. श्वास भरते हुए पैर और हाथ को तानते हुए ऊपर उठाएं। केवल पेट का हिस्सा जमीन को स्पर्श करता है। शरीर नौका के आकार में आ जाता है।
4. श्वास छोड़ते हुए पूर्व स्थिति में आएं।

लाभः

1. हाथ व पैर की मांसपेशियां सुदृढ़ बनती है।
2. मेरुदण्ड के दोष दूर होते हैं।
3. आलस्य दूर होता है।
4. स्फूर्ति का विकास होता है।

6. सीने और फेफड़ों की क्रियाएं

विधिः

श्वास को भरें। हाथों को शेर के पंजे की तरह सामने की ओर झटके के साथ रेचन करते हुए फैलाएं। हाथों को पूरक करते हुए सीने की तरफ ऐसे लाएं जैसे कि पूरी ताकत के साथ कोई रस्सा खींच रहे हों। फिर हाथों को सीने से कंधे तक फैलाएं। तीन बार करें।

लाभः

सीने और फेफड़ों की शक्ति बढ़ती है।

क्रमशः

मेहनत-मजदूरी को मजबूर

डॉ. अनामिका प्रकाश

बाल-श्रमिकों के नाम पर परिभाषित पाँच से चौदह वर्ष की उम्र के ये बच्चे अपने अरमानों का गला घोंटकर, भविष्य दांव पर लगाकर पेट भरने के लिए मेहनत-मजदूरी को मजबूर हैं। दिलचस्प बात यह है कि जैसे-जैसे राष्ट्र (विकासशीलता) तरक्की की डगर पर बढ़ रहा है, उसी गति से बाल-श्रमिकों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। आज दुनिया में बाल-श्रमिकों की अधिकतम दर अफ्रीका में है। इसके बाद एशिया और लातिनी अमेरिका की बारी आती है। मगर श्रम-शक्ति में बच्चों की अधिकतम संख्या भारत में है। स्थिति यह है कि यहाँ बाल-श्रमिकों की संख्या कई छोटे-छोटे देशों की जनसंख्या के बराबर है।

दरअसल, भारत में बच्चों की जितनी उपेक्षा हुई है, उतनी किसी और वर्ग की नहीं हुई। विकास की राष्ट्रीय नीति तैयार करते समय मानव संसाधनों, खासतौर पर बच्चों के विकास के नाम पर मात्र खानापूर्ति ही की जाती है। समाज के तकरीबन सभी बच्चे अमानवीय जीवन जीने को मजबूर हैं। जिस उम्र में उन्हें शारीरिक और मानसिक विकास के लिए आवश्यक सुविधाएं मिलनी चाहिए, उस उम्र में वे खानों, कल-कारखानों, खेत-खलिहानों, जहरीले रसायनों और धुआं उगलती चिमनियों के बीच कड़ी मेहनत करते रहते हैं।

श्रम मंत्रालय के एक सर्वेक्षण के अनुसार औसतन भारत के हर तीसरे परिवार में एक बाल-श्रमिक होता है। दूसरे शब्दों में पाँच से चौदह वर्ष की आयु का हर चौथा बच्चा बाल-मजदूर है। इसी तरह सेंटर फॉर कन्सर्न ऑफ चाइल्ड लेबर ने भारत में बाल-श्रमिकों की संख्या करीब दस करोड़ होने का अनुमान लगाया है। यूनीसेफ की रिपोर्ट के मुताबिक विश्व में अशिक्षितों और बाल-श्रमिकों का सबसे बड़ा देश भारत ही है। एक तथ्य यह भी काबिलेगौर है कि जहाँ पश्चिम बंगाल में बाल-श्रमिकों की संख्या पाँच लाख है, वहीं उत्तर प्रदेश में यह आंकड़ा एक करोड़ दस लाख से अधिक का है। उत्तर प्रदेश में कुल श्रमशक्ति का 45 फीसदी बाल- श्रमिक है। वर्तमान में विभिन्न खतरनाक उद्योगों में काम करने वाले बाल-मजदूरों की संख्या बीस लाख के करीब है। भारत में कुल 132 जिले ऐसे हैं, जिनमें खतरनाक उद्योगों में बाल-मजदूर कार्यरत हैं। बिहार, आंध्रप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली में नब्बे प्रतिशत बाल-श्रमिक कार्य करते हैं। बाल-मजदूरों से संबंधित ये आंकड़े आधुनिकता, प्रगतिशीलता तथा विकास के बड़े-बड़े दावों पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं, लेकिन बावजूद इसके इस कड़वी सच्चाई से हमारे नीति-नियंता लगातार आँखें चुराते रहे हैं। यहाँ पर इस समस्या के समाधान के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं तो बनाई जाती हैं, लेकिन अभी तक कोई ठोस उपलब्धि हासिल नहीं हो पाई है।

ऐसा क्यों है कि सुबह-सुबह जब आधे बच्चे उज्ज्वल भविष्य की तलाश में स्कूल जा रहे होते हैं, उसी समय आधे बच्चे अपने और परिवार का पेट भरने के लिए विभिन्न स्थानों पर काम करने जाते हैं। चौंकाने वाले तथ्य तो यह हैं कि बालश्रम की समस्या पर विकसित देशों ने एक सीमा तक काबू पा लिया है, लेकिन विकासशील राष्ट्र लगातार इससे जूझ रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार यह भावना प्रबल हो रही है कि श्रम के लिए बच्चों का उपयोग करना सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से उचित नहीं है। इसी के तहत अमेरिका और यूरोपीय राष्ट्रों में उन सभी वस्तुओं के बहिष्कार की लहर चल रही है, जिनके उत्पादन में बालश्रम का उपयोग किया गया होता है। अमेरिका में डेमोक्रेट सीनेटर टॉम हरकिन ने कुछ समय पहले सीनेट में एक बिल प्रस्तुत किया था, जिसमें उन सभी वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई थी, जिनके उत्पादन में 15 वर्ष से कम आयु के लोगों का श्रम लगा हो। 'हरकिन बिल' में यह सुनिश्चित करने के लिए सलाह दी गई थी कि वे कैसे बालश्रम का उपयोग करने से बच सकते हैं।

लगातार सम्मेलनों और सेमिनारों में बाल-श्रमिकों का मुद्दा उठने के बावजूद भारतीय सरकारें इस तरफ से क्यों आँखें मूंदे रखती हैं? बाल-श्रमिकों की तमाम समस्याओं और उनसे जुड़ी परिस्थितियों को जानते-बूझते हुए भी उन पर काबू क्यों नहीं पा सकीं, ये कई ऐसे महत्त्वपूर्ण सवाल हैं, जो सरकारों की नेक नीयती पर संदेह पैदा करते हैं। भारत में बाल-श्रमिकों पर अभी तक जो शोध किए गए हैं, उनसे यह निष्कर्ष निकला कि जिस प्रांत में साक्षरता दर जितनी अधिक थी, वहाँ पर बाल-श्रमिकों की संख्या उतनी ही कम थी। इसका उदाहरण केरल है, जहाँ साक्षरता की दर अधिक है, इसलिए कामकाजी बच्चों की संख्या सबसे कम 1.08 फीसदी है। वहीं मध्यप्रदेश तथा कर्नाटक राज्यों में बच्चों के विद्यालय व्यय की दर अधिक है, तो उनकी काम में भागीदारी का प्रतिशत 7.90 तथा 7.64 है।

लेकिन, यहाँ तो तस्वीर ही उल्टी है भारत में व्यवस्था कुछ इस तरह की बना दी गई है कि कम-से-कम लोग शिक्षित हों, वहीं मां-बाप के शिक्षित न होने, उनके आर्थिक संसाधनों से कमजोर होने तथा संकुचित और लापरवाह होने के कारण यह समस्या बढ़ी है। इन कारणों के चलते वे बच्चों की शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं देते। फलस्वरूप बच्चे स्कूल नहीं जा पाते और बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं। माता-पिता भी परिस्थितियों के हाथों मजबूर हो शिक्षा के बदले उन्हें काम पर लगा देते हैं। वे समझते हैं कि घर बैठाने या पुनः

स्कूल भेजने से बेहतर है, आय का स्रोत बढ़ा दें। फिर यहीं से शुरू होता है बच्चों का दमन, शोषण और उत्पीड़न। बाल-मजदूरी के कारण बच्चों का नैसर्गिक शारीरिक व मानसिक विकास नहीं हो पाता। इससे उनकी मौजूदा क्षमता तो कम होती ही जाती है, उनकी भावी संतानों पर भी विपरीत असर पड़ता है। इसे इस तरह समझ सकते हैं उद्योगों में काम करने वाले बाल-श्रमिक इतने थक जाते हैं कि वे कमाई के साथ पढ़ाई नहीं कर सकते। परिणामस्वरूप शिक्षा और प्रशिक्षण के अभाव में उनके मानसिक विकास की गति धीमी हो जाती है। बौद्धिक कमी के बने रहने के आगे चलकर उनकी आय की क्षमता कम हो जाती है। अशिक्षित रहने के कारण ये जिंदगी भर केवल मजदूरी ही करते रहते हैं। इसके चलते इनका जीवन स्तर लगातार गिरता चला जाता है। इसके अलावा कुपोषण, अधिक जनसंख्या जैसी समस्याएं जो केवल शिक्षा के द्वारा दूर हो सकती है, उन पर ये काबू नहीं कर पाते। खतरनाक उद्योगों में काम करने वाले बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अल्प वयस्क होने के कारण नियोक्ता तथा वरिष्ठ सहयोगी इनको प्रताड़ित भी करते हैं। बाल-श्रमिकों को रखने से नियोक्ताओं का भी फायदा रहता है। वे मनमानी अवधि तक भय और प्रताड़ना के सहारे इनसे काम लेते हैं। उन्हें बाल-श्रमिकों से कोई भय भी नहीं होता।

बाल-श्रमिकों को शोषण रोकने के लिए सरकारी स्तर पर कानून तो बनाए गए हैं, किन्तु उनके क्रियान्वयन में शिथिलता के चलते उद्देश्य पूरे नहीं हुए। बाल मजदूरी के संबंध में सबसे पहले 1938 में ब्रिटिश सरकार ने बाल मजदूरी अधिनियम बनाया। 1946 में अभ्रक खान कानून, 1951 में चाय, कॉफी, रबड़ के बागानों में कार्यरत श्रमिकों के संरक्षण से जुड़ा अधिनियम, 1952 में खान कानून, 1959 में अश्र नियोजन अधिनियम, 1960 में बाल अधिनियम, 1976 में बंधुआ मुक्ति अधिनियम कानून बनाए गए। इसके बाद भी कई कानून बनाए गए हैं, लेकिन इनके बारे में पूर्व मुख्य न्यायधीश का यह कथन विचारणीय है ''बाल-श्रमिकों से संबद्ध अधिकतर कानून कागजों तक ही सीमित हैं और उनका क्रियान्वयन लगभग शून्य है। इन उद्योगों में बाल-श्रमिकों की मौजूदगी ही इन कानूनों का मखौल उड़ाती है।

ये कानून तब तक निरर्थक साबित होते रहेंगे, जब तक कि सभी नागरिक बच्चों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण नहीं अपनाए जाएंगे। मुनाफाखोर और दिखावे के कानून बचपन नहीं लौटा सकते। इसके लिए अभिभावकों में चेतना जागृत करने की जरूरत तो है ही, साथ ही नियोजकों से भी सामान्य मानवीय कर्त्तव्यों की आशा की जानी चाहिए। बालकों को स्नेह, प्रेम, मनोरंजन, पोषण के अधिकार के साथ क्षमता के साथ आगे बढ़ने का अवसर दिये जाने की जरूरत है। अगर इस तरफ ध्यान नहीं दिया गया, तो राष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण समाज पहले ही बेकार हो चुका होगा, फिर विकास, प्रगति मानवाधिकार, लोकतंत्र की बात बेमानी ही रहेगी।

'विभावरी' जी–9, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा, झांसी–284003 (उ.प्र.)

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- महंगाई के इस दौर में भारतीय कंपनियों ने ऐसी तकनीक विकसित कर ली है कि अब मधुमेह की जांच सिर्फ दो रुपये में हो जायेगी। केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने दो दिन पूर्व ही देश में 30 साल की उम्र पार कर चुके लोगों का शुगर टेस्ट कराने की योजना को मंजूरी दी है। अगले दो सालों में 100 जिलों में सात करोड़ लोगों का शुगर टेस्ट होगा। भारत की पांच कंपनियां कम कीमत पर मधुमेह जांच किट देने को तैयार हैं और इनमें से एक कंपनी दो रुपये में मधुमेह जांच किट की आपूर्ति हेतु तैयार है।

- नई दिल्ली काउंसिल फॉर साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार सक्सेना की लौकी का जूस पीने से मौत हो गई। जूस पीने के बाद वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुशील सक्सेना व उसकी पत्नी को खून की उल्टी और दस्त हुई थी, चंद घंटों बाद ही डॉ. सुशील की मौत हो गयी। इस प्रकार के हादसों से बचने के लिए कुछ उपाय

  जूस बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सब्जियां आर्गेनिक हों, उनमें पेस्टीसाइड्स का प्रयोग न किया गया हो।

  मुरझाई सब्जियों को जूस में डालने से बिलकुल परहेज करें।

  जूस बनाने से पहले सभी सब्जियों को अच्छी तरह से साफ पानी से धोकर अवश्य पोंछ लें।

  सब्जियों का ताजा जूस निकाल कर ही पिएं और पिलाएं।

  डिब्बाबंद या कैन वाले जूस को हमेशा फ्रिज में बंद करके रखें।

  किसी भी हालत में फ्रिज में जूस तीन दिन से ज्यादा न रखें।

  उपर्युक्त नियमों का पालन कर कुछ हद तक ऐसे हादसों से बचा जा सकता है।

उलझे सवाल

कृष्ण कुमार वर्मा

पूरे शहर में यह बात जंगल में लगी आग की तरह फैल गई कि शर्माजी के घर में तेंदुआ घुस आया है। तेन्दुआ बड़े मजे से बाथरूम में लेटा है।

शर्माजी सेक्टर-12 के डी ब्लॉक में रहते हैं। आज उनके घर के आगे तांता लगा है। लोग आ रहे हैं और जा रहे हैं तरह-तरह की बातें कर रहे हैं। कोई कहता है कि अब यह ब्लॉक रहने लायक नहीं रह गया। बताओ खूंखार जानवर घरों में घुसने लगे। धीरे-धीरे भीड़ छंटने लगी। इक्के-दुक्के लोग रह गये। शर्माजी इधर-उधर परेशान घूम रहे थे। जब बहुत परेशान हो गये तो बाथरूम की खिड़की से झांककर बोले ऐ! तेन्दुए के बच्चे तुमने समझ क्या रखा है, जाते क्यों नहीं? क्या यह तुम्हारे बाप का घर है? शर्माजी की बात सुनकर तेन्दुए ने अपनी पूंछ हिलाई, जीभ घुमाई, मुँह साफ किया फिर बोला "जी हाँ यह घर हमारे बाप का है, दादा-परदादा का है। तुम क्या जानते हो इस जगह के बारे में कल से रहने लगे और बन गये मालिक।" थोड़ा टहलते हुए तेन्दुए ने बताया कि आज से 20 वर्ष पहले यहाँ पूरा जंगल था। मेरे पिताजी यहीं पैदा हुए, जहाँ तुम्हारा ड्राइंग रूम है वहीं पर मेरा जन्म हुआ हम तीन भाई-बहन इस खुले आंगन में कुलांचे भरते थे, शिकार करते थे और धूप सेंकते थे। मेरा एक भाई चिड़ियाघर वालों के हाथ लग गया वह वहाँ सड़ रहा है। बहन का कुछ पता नहीं? जब से बिछुड़ी है पता नहीं कहाँ किस हालात में होगी? परन्तु यह जगह तो मैंने आवास विकास परिषद से खरीदी है अब इस पर मेरा मालिकाना हक है। शर्माजी ने तर्क प्रस्तुत किया। शर्माजी की बात सुनकर तेन्दुआ हँसते हुए बोला खरीदी! मालिकाना हक। अरे इस पृथ्वी पर हमारा भी तो कुछ हक है। हम जंगली पशु कहाँ जायें? प्रजनन कहाँ करें? घूमें कहाँ? शर्माजी थोड़ा नरम होते हुए बोले हम मनुष्य किसी के साथ अन्याय नहीं करते, हमने अलग प्रखण्ड बनाए जहाँ जानवर सुरक्षित रह सकते हैं। हिरनों के लिए अलग, शेरों के लिए अलग, भेड़ों के लिए अलग।

माना कि अभ्याखण्ड हैं, लोग पशु प्रेमी भी हैं, वन अधिनियम भी हैं किन्तु क्या अभ्याखण्ड वह हिरन देंगे जिनके बच्चे जन्म लेते ही भागने लगते थे? क्या चीतों में वह तेजी रहेगी कि वह 120 किमी. की रफ्तार से भाग सकें। नहीं ना मनुष्य तो हमारी नस्ल ही बदल देगा प्राकृतिक तो कुछ रहेगा ही नहीं और फिर पछताएगा भी। तेन्दुए ने नहले पर दहला मारा। अभी बातें चल ही रही थीं कि शर्माजी की 10 बरस की बेटी भी शर्माजी के पास आ खड़ी हुई। तेन्दुए ने जीभ घुमाई और बोला कि अब बातें बहुत हुईं अब मुझे भूख लग गई है, मेरे लिए कुछ नाश्ते का इंतजाम करो। बेटी को देख शर्माजी डर गए। बोले क्या-क्या, नाश्ता! हाँ भाई हाँ, पहले तो तुम्हारे बाथरूम में नहाऊँगा फिर नाश्ता करूँगा किन्तु डरो मत मैं बाजार का मंगाया भी खा लूंगा पेट तो भरना ही है। तेन्दुए ने चुटकी ली।

बड़े ढीठ हो तुम ऐसे नहीं जाओगे, लगता है बन्दूक निकालनी होगी फिर वन विभाग वालों को बुलाना पड़ेगा। करो-करो जो जी में आए करो यदि मुझे मारोगे तो तुम्हें सजा होगी और यदि वन विभाग वाले आएंगे तो वह भी मेरी ही बात कहेंगे।

कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, तभी शर्माजी के कन्धे पर किसी ने हाथ रख दिया, वह एक वन अधिकारी थे। तेन्दुआ कहाँ है? शर्माजी ने अंगुली से इशारा करके बताया वहाँ है। वन अधिकारी तेन्दुए को ले जा रहे थे, किन्तु शर्माजी तेन्दुए के प्रश्नों के उत्तरों में उलझे थे उनके पास आज भी तेन्दुए के प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं। क्या आपके पास है? यदि हों तो उन्हें जरूर भेजिए। नहीं तो अगले अंक में कोई जानवर या पक्षी फिर कोई सवाल कर देगा।

एल–97, सेक्टर–12, प्रताप विहार, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201007

जब तक मनुष्य पुरुषार्थी नहीं बनेगा, नैतिक और चरित्रवान नहीं बनेगा, तब तक आजादी अधूरी रहेगी।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

।। मंगल कामनाएं ।।

तेरापंथ के यशस्वी आचार्य • महान तपस्वी • अणुव्रत अनुशास्ता • युवा मनीषी • आगम ज्ञाता • संयम अनुशास्ता • सरलता व विनम्रता की प्रतिमूर्ति श्रद्धास्पद् आचार्य महाश्रमण को

शत-शत नमन

समाज भूषण स्व. मोतीलाल एच. रांका
परिवार की ओर से अणुव्रत अनुशास्ता परम्परा को नमन एवं
आचार्य महाश्रमण के शुभ भविष्य की मंगल कामनाएं

:: श्रद्धा-प्रणत ::

निर्मल एम. रांका
नरेन्द्र एम. रांका
उर्मिला जयन्तीलाल पारख

कुलदीप • महिपाल • विनय • पंकज • चेतन • राहुल • गगन • ज्योत्सना रांका
(बगड़ीनगर - कोयम्बटूर)

MAHAJAN ENTERPRISES 659, Oppankara Street, **COIMBATORE**-641001 M : 09443250152

'संयमः खलु जीवनम्' के जीवन प्रतीक अध्यात्म जगत के युवा मनीषी

आचार्य महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता पदाभिवंदना

पर

अणुव्रत महासमिति परिवार की हार्दिक बधाई एवं श्रीचरणों में शत्-शत् नमन

डॉ. महेन्द्र कर्णावट	*(संरक्षक)*	निर्मल एम. रांका	*(अध्यक्ष)*
विजयराज सुराणा	*(महामंत्री)*	लोकमान्य गोलछा	*(उपाध्यक्ष)*
जुगराज नाहर	*(उपाध्यक्ष)*	अर्जुनलाल बाफना	*(उपाध्यक्ष)*
बाबूलाल गोलछा	*(संयुक्त मंत्री)*	सिद्धार्थ शर्मा	*(संयुक्तमंत्री)*
रतनलाल सुराणा	*(अर्थमंत्री)*	डॉ. बी.एन. पांडेय	*(उपमंत्री)*
राज गुनेचा	*(शिक्षा मंत्री)*	डालचंद कोठारी	*(संगठन मंत्री)*
एम. गौतम बोहरा	*(संगठन मंत्री)*	जवेरीलाल संकलेचा	*(संगठन मंत्री)*
भूपेन्द्र मूथा	*(संगठन मंत्री)*	ललित गर्ग	*(प्रचार मंत्री)*
मुरली कांठेड़	दिल्ली	बाबूलाल दूगड़	दिल्ली

अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली

आचार्य महाप्रज्ञ की 91वी जन्मजयंती

मनुष्य स्वयं को देखने का अभ्यास करे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 10 जुलाई। मनुष्य दूसरों को देखता है हमारी आंखें दूसरों को देखने के लिए अभ्यस्थ हो गई हैं, स्वयं को देखने के लिए दर्पण की आवश्यकता होती है। मनुष्य स्वयं को देखने का अभ्यास करे। बौद्ध साहित्य के महान ग्रंथ धम्मपद का उल्लेख करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि धम्मपद बहुत ही आध्यात्मिक ग्रंथ प्रतीत होता है। धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक रूप में यह प्रेरणा आचार्य महाप्रज्ञ ने दी। उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ के 91वें जन्मोत्सव 'प्रज्ञा दिवस' पर व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने कहा– आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे यह प्रेरणा दी कि गीता पर प्रवचन दो, मैंने उसे शिरोधार्य कर उसके साथ धम्मपद को और जोड़ दिया। प्रेक्षाध्यान का सिद्धांत है अपने आपको देखने का अभ्यास करो, आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने से अपने को देखने की बात कही, अनेकों लोगों को उन्होंने संबोध दिया, उनमें मैत्री, माधुर्य, प्रेम का दर्शन होता है। अनुकंपा का मतलब दया की चेतना का बंध होता है। अनुकंपा से सुख मिलता है, अनुकंपा है तो सम्यकत्व का एक लक्षण आ जाता है। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ में दया, अनुकंपा की भावना थी वे हर व्यक्ति के दुःख को सुनते, दुःख को दूर करने का प्रयास करते, जिसमें अनुकंपा होती है वह दूसरों के दुःख को दूर करने का प्रयास करता है। उनमें ज्ञान का विकास था, उनका काफी हिस्सा ज्ञान की आराधना में बिता, उनकी ज्यादा लग्न ज्ञान की आराधना में रहती वे स्वयं भी ज्ञान की आराधना करते और दूसरों को भी ज्ञान की आराधना करवाते। आचार्य महाश्रमण ने कहा– मैं शुरू से ही उनके साथ ज्ञान आराधना में जुड़ा, ज्ञान शिक्षा के साथ प्रबंधन में मुझे जोड़ा था। उन्होंने 7 वर्षों की अहिंसा यात्रा की उनका स्नेह का भाव सामने आता, वे अपेक्षानुसार सबको समय देते।

इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा में रहने वाली साध्वी शुभप्रभा को शासन सेवी, मुनि राजेन्द्र कुमार को शासन सेवी संबोधन से संबोधित किया। व्यवहार कुशल, साहित्य प्रतिभा, चिंतन शक्ति का उल्लेख करते हुए मुनि धनंजय कुमार को 'शासन गौरव' संबोधन से संबोधित किया।

महापथिक का लोकार्पण

10 जुलाई, आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की 91वीं जन्म जयंती पर केबीडी फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित 'अहिंसा पथ के महापथिक' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। सुरेन्द्र दुगड़, कमल दुगड़ ने पुस्तक की जानकारी देते हुए अपने विचार रखे। इस अवसर पर बंगाल से समागत सांसद सोमेन्द्रनाथ मित्र, सुदीप बन्दोपाध्याय, राजस्थान पर्यटन मंत्री राजेन्द्रसिंह गुडा, बीकानेर के महाराजा रविराजसिंह राठौड़ एव राजस्थान पत्रिका के संपादक गुलाब कोठरी मुख्य रूप से उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ की आत्मकथा

मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ की आत्म कथा 'यात्रा एक अकिंचन की' शीर्षक से उनकी 91वीं जन्म जयंती पर आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित 'प्रज्ञा दिवस' पर विमोचन किया गया। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा एवं मुनि धनंजय कुमार के प्रयासों से जैन विश्व भारती प्रकाशन विभाग के द्वारा पाठकों के सम्मुख पेश की गई, कृति का लोकार्पण राजस्थान पत्रिका के संपादक गुलाब कोठारी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने आचार्य महाश्रमण को भेंट की।

इससे पूर्व डायमंड बुक्स दिल्ली द्वारा साधना यश पत्रिका आचार्य महाप्रज्ञ की 91वीं जन्म जयंती पर विशेषांक प्रकाशित किया गया। पत्रिका के संपादक शशिकांत सदैव, राजेश जैन 'चेतन' अरविन्द गोठी, नरेश शांडिल्य, इन्द्र बैंगानी ने उपस्थित होकर पूज्यवरों को भेंट की, उल्लेखनीय है कि 'साधना यश' मासिक पत्रिका की सवा लाख प्रतियां प्रकाशित होती है। इस अवसर पर अंग्रेजी में प्रकाशित 'विज्ञान अध्यात्मक की ओर' पुस्तक का विमोचन किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, उपाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया, स्वागताध्यक्ष बिमलकुमार नाहटा, स्थानीय सभा अध्यक्ष अशोक नाहटा ने आए हुए विशिष्ट अतिथियों को साहित्य भेंट कर स्वागत किया, महामंत्री रतन दूगड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म जयंती के अवशिष्ट कार्यक्रम में साध्वी अमृतकुमारी, साध्वी उज्ज्वलरेखा ने समूह गीत द्वारा अपनी भावनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दुगड़, कोषाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

तीन दिवसीय संगोष्ठी

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रभारी प्रशिक्षकों की संगोष्ठी के दूसरे दिन फतेहपुर के अहिंसा प्रशिक्षक उपस्थित होकर आचार्य महाश्रमण के दर्शन किये। आचार्य महाश्रमण ने राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के संयोजक भीखमतचन्द नखत के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि भीखमचन्द नखत अपना अधिक समय गुरुकुलवास में, सेवा में लगाते हैं, यहां से ये अनेक जगहों की यात्रा करते रहते हैं, उन्होंने यह भी कहा कि एक तरह से संघीय परिवार है। अणुव्रत की बात इनके दिमाग में आ गई और ये चुम्बक की तरह आकृष्ट हो गये, अनेक लोगों को अणुव्रत के कार्यों से जोड़कर सेवा का कार्य कर रहे हैं।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि मुख्यतः कार्यकर्ता अपना प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं, कार्यकर्त्ता अपने–अपने क्षेत्रों में लग्न से काम कर रहे हैं, बहुत से ऐसे क्षेत्र–छत्तीसगढ़ आदि ऐसी जगहों पर अहिंसा प्रशिक्षण कार्य चल रहा है, नक्सलवाद के क्षेत्र में भी हैं अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य चल रहा है। फतेहपुर के अहिंसा प्रशिक्षण का कार्य करने वाले शतिस शांडिल्य ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

तीन दिवसीय संगोष्ठी

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के प्रभारी प्रशिक्षकों की संगोष्ठी आज संपन्न हुई। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा देशभर से आए चालीस प्रशिक्षकों ने आचार्य महाश्रमण से पावन पाथेय प्राप्त किया।

10 जुलाई से 12 जुलाई तक चली इस संगोष्ठी में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने प्रशिक्षकों के काम की जानकारी प्राप्त कर अच्छा कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने तीनों दिन प्रशिक्षाणार्थियों को नई चेतना उत्साह एवं प्रवाह कुशलता के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष एवं संयोजक भीखमचन्द नखत ने अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यों की जानकारी देते हुए बताया कि ध्यान, योग, आसन प्राणायाम के साथ दस विद्यालयों में अहिंसा प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें रोजगार प्रशिक्षण, अहिंसा जीवन शैली जीने का प्रशिक्षण के साथ वैकल्पिक चिकित्सा, मुद्राओं द्वारा एक्युप्रेशर करवाया जाता है।

देशभर से आए प्राशिक्षकों ने अपने–अपने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रतिदिन किये जाने वाले कार्यों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर डॉ. हीरालाल श्रीमाली, शैलश कुमार विशेष रूप से उपस्थित थे।

अध्यात्म से होता है मंगल का अवतरण

धुलाबाड़ी (नेपाल)। पदयात्रा के क्रम में साध्वी निर्वाणश्री नेपाल की धरा पर पहुँची। नेपालवासियों में अध्यात्म के प्रति विशेष अभिरुचि है। साध्वीश्री ने स्वागत समारोह को संबोधित करते हुए कहा अध्यात्म से व्यक्ति के जीवन में मंगल का अवतरण होता है। अध्यात्म किसी व्यक्ति विशेष की बपौती नहीं है। उसका अभ्यास किसी भी देश और काल में किया जा सकता है। अहिंसा, संयम और तपमय धर्म ही मंगल का अवतरण करने वाला है। आज जन-जीवन में इन मूल्यों की प्रतिष्ठा जैसे-जैसे कम हो रही है उसी गति से समस्याओं का जाल बढ़ता जा रहा है। धर्म का आसन संप्रदाय से ऊपर है।

साध्वी योगक्षेमप्रभा ने कहा अध्यात्म व्यक्ति के जीवन में नई ताजगी देता है। जैसे रसायन का पान कर व्यक्ति अपने आप में विशेष ऊर्जा एवं स्फूर्ति का अनुभव करता है उसी प्रकार अध्यात्म के प्रयोग व्यक्ति के जीवन में नई शक्ति का संचार करते हैं। सभाध्यक्ष इन्दरचंद बोथरा ने साध्वीश्री का भावभरा स्वागत करते हुए साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। स्थानीय युवक परिषद् के मंत्री प्रदीप बैंगानी ने साध्वीश्री के प्रवास में अधिक से अधिक लाभ उठाने की बात कही। धुलाबाड़ी महिला मंडल की ओर से वसुंधरा बोथरा ने साध्वीश्री का अभिनंदन किया। इस अवसर पर अनेक भाई-बहनों ने साध्वीवृंद की अगवानी की।

केन्द्रीय मंत्री से मुनिश्री की वार्ता

नई दिल्ली, 5 जुलाई। आचार्य महाश्रमण संतत्व के मूर्त्त रूप हैं। मुझे उनके दर्शन का सौभाग्य नजदीक से मिला है। मैंने उनकी झाबुआ जिले की पदयात्रा में भाग लिया है। उनकी प्रवचन शैली सहज-सरल व दिल को छूने वाली है। ये विचार केन्द्रीय जनजाति कार्यमंत्री कांतिलाल भुरिया ने मुनि सुधाकर से चर्चा करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने मुनिश्री से आचार्य महाश्रमण के पदाभिषेक का संवाद सुनकर आचार्य महाश्रमण के प्रति मंगलभावना प्रकट की। मुनि सुधाकर ने अणुव्रत आंदोलन द्वारा चलाये जा रहे पानी बचाओ, बिजली बचाओ अभियान की जानकारी दी। मीडिया प्रभारी शीतल बरड़िया ने केन्द्रीय मंत्री को साहित्य एवं पानी बचाओ, बिजली बचाओ, पर्यावरण बचाओ के स्टीकर भेंट किए।

इन्हीं दिनों मुनिश्री का उत्तरांचल के मुख्यमंत्री रमेश पोखरनीया निशंक से भी मिलना हुआ। मुनिश्री ने उन्हें अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा मैं आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण से मिला हूँ। अणुव्रत आंदोलन का कार्य उपयोगी व समाजोत्थान के लिए जरूरी है। इस अवसर पर श्यामलाल जैन, कमल बैंगानी, प्रेक्षा प्रशिक्षक रमेश कांडपाल, दिल्ली प्रदेश समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली उपस्थित थे।

छायादार वृक्षों को हरा-भरा रखें

तिरूपुर। आज न कलाकारों की कमी है न साहित्यकारों की। किसी भी संगठन में हमें अच्छे से अच्छा वक्ता मिल सकता है, अच्छे से अच्छा लेखक व अच्छे से अच्छा गायक भी मिल सकता है। लेकिन कमी है तो विनम्रता की, आचारवान व्यक्तियों की। ये विचार साध्वी कीर्तिलता ने तिरूपुर में आयोजित युवक-युवती सम्मेलन को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

साध्वीश्री ने आगे कहा पवित्रता, व्यसनमुक्तता, सकारात्मकता और धार्मिकता ये चार स्तंभ हैं जीवन रूपी इमारत को अक्षुण्ण रखने के लिए। संघ को छायादार वृक्ष की उपमा देते हुए साध्वीश्री ने कहा हमारा परम दायित्व है कि इस छायादार वृक्ष को हरा भरा रखना। इसके लिए जरूरी है हमें नींव का पत्थर बनना होगा। अब समय आ गया है आचार्य महाश्रमण को दक्षिण की धरा पर बुलाने का।

साध्वी शांतिलता ने कहा डिमांड के साथ प्रोडक्शन की भी जरूरत होती है। सिर्फ मांग होती रहेगी और उत्पादन नहीं होगा तो वह कभी भी संघ आगे नहीं बढ़ पायेगा। अतः जरूरी है मांग के साथ पूर्ति को भी ध्यान में रखा जाय। साध्वी श्रेष्ठप्रभा ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। साध्वी पूनमप्रभा ने बुद्धि का ताला खोलो प्रतियोगिता करवाई।

कार्यशाला के प्रथम सत्र का शुभारंभ युवक-युवतियों के सामूहिक संगान से हुआ। द्वितीय सत्र में युवक परिषद् रमेश पटावरी ने पूज्यवरों के महत्वपूर्ण अवदानों की चर्चा की। हम गौरव के अधिकारी तभी होंगे जब संघ को हम अपना घर समझेंगे। महिला मंडल की नीलम सेठिया ने छोटी-छोटी बातों को प्रायोगिक रूप में बताया। हम अपने रिश्तों को छत की तरह ठोस बनाएं। पंखे की तरह बार-बार बदलने वाला कभी शान्ति का जीवन नहीं जी सकता। आभार ज्ञापन शोभा बैद ने एवं संचालन निर्मल पारख व अलका भंडारी ने किया।

मंजू लोढ़ा की पुस्तक का विमोचन

मुंबई, 3 जुलाई। मालबार हिल के विधायक मंगल प्रभात लोढ़ा की धर्मपत्नी मंजू लोढ़ा की नवीनतम पुस्तक 'यादें....' का विमोचन उनके पिता समाजसेवी किशोरमल लूंकड़ एवं सासू मां प्रेम कंवर लोढ़ा के हाथों संपन्न हुआ। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस दलवीर भंडारी और साहित्यकार नंदलाल पाठक मुख्य अतिथि थे।

लेखिका, कवयित्री एवं समाजसेविका मंजू लोढ़ा की पोती आयरा के जन्मदिवस पर प्रकाशित इस नवीनतम पुस्तक में तीन खंड हैं। पहले खंड में उनके जीवन के संस्मरण, दूसरे में बोधकथाएं और तीसरे में त्यौहारों एवं समसामयिक विषयों पर उनके लिखे लेखों का संकलन हैं। मंजू लोढ़ा ने अपनी यह पुस्तक अपने ससुर पूर्व सांसद गुमानमल लोढ़ा को समर्पित की है। मंजू लोढ़ा की इससे पहले भी तीन पुस्तकें, 'मन की लहरें' शीर्षक से कविता संग्रह, बोध-कथाओं की पुस्तक 'प्रेरणा' और धार्मिक नजरिए पर 'जैन धर्म - हमारा पावन पंथ' प्रकाशित हो चुकी हैं। होटल ताज में संपन्न इस विमोचन समारोह में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े कार्यकर्ता एवं कई गणमान्य हस्तियां उपस्थित थीं।

अणुव्रत मासिक संगोष्ठी

दिल्ली, 28 जून। साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में कृष्णानगर में संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। अणुव्रत महासमिति के अर्थमंत्री रतनलाल सुराना ने संगोष्ठी के विषय ''युगीन समस्याओं का समाधान संयममय जीवन शैली'' पर प्रकाश डालते हुए संयम की परिभाषा की जानकारी देते हुए कहा हर कार्यक्षेत्र में अपनी एक सीमा तय कर लें कि इससे बाहर नहीं जाना है। अणुव्रत महासमिति के संयुक्तमंत्री बाबूलाल गोलछा ने कहा आज से 50 वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत को शुरू किया जब न बिजली-पानी की समस्या थी न आतंकवाद। यदि प्रारंभ से ही संयम पर जोर दिया जाता तो आज हालात ये न होते।

साध्वी ऋजुयशा ने सुमधुर गीत का संगान किया। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने कहा दैनिक जीवन शैली हो आर्थिक, घरेलू क्षेत्र हो या आतंकवाद; सब जगह संयम की आवश्यकता है। पानी, बिजली एवं पर्यावरण बचाओ यह बीड़ा दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति ने उठाया है।

साध्वी यशोधरा ने कहा हमें संयम का अंकन करना होगा एवं 'निज पर शासन फिर अनुशासन' स्वयं जीवन जीकर ही दूसरों को बोध दिया जा सकता है। गुरुदेव तुलसी ने एक बहुत अच्छा मंत्र दिया है 'संयमः खलु जीवनम्' हमारा जीवन संयममय हो। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विभाग कार्यवाहक पुरुषोत्तम दाधीच ने कहा संयम धारण करने से पहले हमें यह सोचना चाहिए कि हमें भगवान ने मनुष्य क्यों बनाया? पशु क्यों नहीं? क्योंकि मनुष्य में सोचने व समझने की शक्ति है वह धर्म कर सकता है। फिर भी आज हम देख रहे हैं भारत में 26 करोड़ से भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा के नीचे हैं। हम सब संयमित जीवन जीएं तो अमीरी व गरीबी की भेदरेखा को पाटा जा सकता है। पुरुषोत्तमजी का साहित्य द्वारा सम्मान गौतम डूंगरवाल ने किया। आभार ज्ञापन विमल गुनेचा ने एवं संचालन राज गुनेचा ने किया।

फतहसागर पाल पर वर्षा के लिए दुग्धाभिषेक

उदयपुर, 6 जुलाई। उदयपुर सेवा समिति और अणुव्रत समिति उदयपुर ने संभाग में अच्छी वर्षा की कामना के लिए फतहसागर की पाल पर पालेश्वर महादेव का दुग्धाभिषेक पंडित सियाराम के सान्निध्य में मंत्रोच्चार एवं भजन कीर्तन के साथ हुआ। समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया की उपस्थिति में जेतराम, भेरूलाल डांगी पार्टी ने इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए भजन-कीर्तन का आयोजन किया।

इस अवसर पर मनमोहन राज सिंघवी, राजेन्द्र सेन, अरविन्द चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, पुरुषोत्तम जोशी, सुरेश सियाल, कैलाश सोनी, जयकिशन चौबे, योगेश गहलोत, अशोक राठोड़, रोशन सोनी, रूपशंकर पालीवाल, गिरधारी लाल सोनी सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

अशान्ति का कारण बढ़ती हुई असहिष्णुता

श्रीडूंगरगढ़, 5 जुलाई। अशान्ति का कारण है बढ़ती हुई असहिष्णुता। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक हर क्षेत्र में सहनशीलता का भाव घट रहा है। इससे आपसी सौहार्द, स्नेह, सामंजस्य और सद्भाव समाप्त हो रहा है। एक-दूसरे को सहन करना कठिन हो रहा है। जीवन की सफलता का जो महत्वपूर्ण सूत्र है सहिष्णुता, उसको भूलते जा रहे हैं, जिससे अशान्ति का साम्राज्य बढ़ रहा है। ये विचार मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने जैन भवन आड़सर में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। मुनिश्री ने आगे कहा अशांत विश्व को शान्ति का संदेश देने वाले आचार्य महाप्रज्ञ कहा करते थे कि व्यक्ति के जीवन में अहिंसा, करुणा, संयम, सहिष्णुता की चेतना का जागरण होना चाहिए जिससे धर्म की उत्पत्ति, विकास और स्थापना की जा सके। किन्तु जहाँ क्रोध और लोभ का साम्राज्य है वहाँ धर्म का विनाश ही होगा। अतः धर्म के विनाश को रोकने के लिए संयम और विवेक चेतना का जागरण आवश्यक है।

साहित्यकार रामगोपाल राही का सम्मान

भोपाल। अणुव्रत लेखक साहित्यकार रामगोपाल राही वरिष्ठ साहित्यकार हैं, साथ ही बाल साहित्य के भी रचनाधर्मी हैं। गत माह बाल कल्याण व बाल साहित्य शोध केन्द्र भोपाल में केन्द्र के द्वितीय वार्षिक उत्सव के अवसर पर उनका सम्मान किया गया। बाल साहित्यकार सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश की स्कूली शिक्षा मंत्री अर्चना चिटनीस तथा अध्यक्ष कैलाश जोशी संसद सदस्य एव भूतपूर्व मंत्री मध्यप्रदेश के हाथों उनका सम्मान हुआ।

मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना वार्षिक कार्यक्रम

दिल्ली, 9 जुलाई। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा संचालित मेधावी छात्र प्रोत्साहन परियोजना का पाँचवां मुख्य कार्यक्रम व सम्मान समारोह, आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 21-22 अगस्त 2010 को सरदारशहर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर चयनित छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक, रजत पदक व छात्रवृत्तियां प्रदान की जायेगी। कार्यशाला के साथ आकर्षक पुरस्कार भी रखे गये हैं। यह जानकारी देते हुए सदस्य सचिव हरीश जैन ने पंजीकृत मेधावी छात्र-छात्राओं से कार्यक्रम में भाग लेने का अनुरोध किया है। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं. 9999981521 व 9873355763 पर संपर्क करें।

आयोजक :

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा, कोलकाता

अध्यात्म एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व के अद्भुत संगत थे आचार्य महाप्रज्ञ

नई दिल्ली, 13 जुलाई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का 91वां जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में अणुव्रत भवन में मुनि ताराचंद, आगम मनीषी मुनि महेन्द्रकुमार, मुनि सुमतिकुमार, साध्वी यशोधरा के सान्निध्य में दिल्ली सभा के तत्वावधान में मनाया गया। साथ ही मुनि महेन्द्रकुमार के दिल्ली पदापर्ण पर अभिनंदन समारोह भी रखा गया। शुभारंभ साध्वीवृन्द द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् संगान से हुआ। सभा दिल्ली के अध्यक्ष के. के. जैन, सरोज जैन, अशोक संचेती, स्वामी धर्मानदं, अणुव्रत न्यास से के.एल. जैन 'पटावरी' युजीसी चेयरमेन नरेश जैन, प्रख्यात साहित्यकार वैदप्रताप वैदिक ने युगप्रधान आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन पर अपने विचारों की प्रस्तुति दी एवं मुनि महेन्द्रकुमार के दिल्ली आगमन पर स्वागत किया।

इस अवसर पर डांयमंड बुक्स द्वारा प्रकाशित पत्रिका साधना पथ का जुलाई विशेषांक आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित था, का विमोचन भी मुनिवृंद व साध्वीश्री के कर कमलों द्वारा हुआ। डायमंड बुक्स के चेयरमेन नरेन्द्र वर्मा ने पत्रिका लोकार्पण हेतु भेंट की। इन्द्र बैगानी ने पत्रिका के सन्दर्भ में एवं डायमंड बुक्स द्वारा प्रकाशित आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य की जानकारी प्रस्तुत की। नरेन्द्र वर्मा ने भी अपने विचार रखें। आचार्य महाप्रज्ञ की कृति ''कैसे हो सकता है शुभ भविष्य का निर्माण'' का भी प्रकाशन डायमंड बुक्स द्वारा किया गया इसका विमोचन भी हुआ। मुनि अमृतकुमार, मुनि अभिजित कुमार, मुनि देवार्यकुमार, साध्वी आनंदप्रभा, नचिकेता मुनि आदित्यकुमार, समण हंसप्रज्ञ, साध्वी ऋजुयशा ने आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित गितिकाओं का संगान किया। मुनि सुमतिकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर विचार रखे।

साध्वी यशोधरा ने कहा महाप्रज्ञ को उपमित करना असंभव है। आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक व्यक्तित्व का नाम था आचार्य महाप्रज्ञ। साध्वीश्री ने मुनि महेन्द्रकुमार के दिल्ली पधारने पर अभिवंदना की एवं साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीत का संगान किया। मुनि महेन्द्रकुमार ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने नो दशक के जीवन में जो कार्य किये आज व्यक्ति नो शतक में भी पूरा नही कर सकते। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिसा प्रशिक्षण आदि आयाम प्रस्तुत किये जो वर्तमान युग की बहुत बड़ी आवश्यकता है। ये आयाम उन्हें मानवता के मसीहा के रूप में प्रस्तुत करते हैं। मुनिश्री ने दिल्ली में विराजित मुनि ताराचंद, मुनि राकेशकुमार, साध्वी यशोधरा हेतु श्रद्धेय आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत मंगल संदेश का वाचन भी किया।

शासन गौरव मुनि ताराचंद ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने मानव जाति पर अपनी आलोकित प्रज्ञा से जो अमृत वर्षा की वह अविस्मरणीय है। उस महापुरुष के जन्म दिवस पर हम सभी संकल्पित होकर हम भी अपनी प्रज्ञा का जागरण करें। मुनिश्री ने मुनि महेन्द्रकुमार के दिल्ली आगमन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ के आचार्य पदारोहण के पश्चात प्रथम चातुर्मास आपका दिल्ली हेतु किसी विशेष प्रयोजन के तहत घोषित किया। वर्तमान में दिल्ली में चार स्थानों पर चातुर्मास हैं।

समारोह में धर्मसंघ के तेरह साधु-साध्वियों का एक साथ सगंम साथ ही प्रमोद भावना के ऐसे कुछ परिदृश्य जो श्रावक समाज को रोमांचित करने वाले थे। मनोज नाहर, जयसिंह दुगड़, मनीष बैद ने मुनिश्री द्वारा प्रस्तुत गीतों में अपने स्वरों की प्रभावक प्रस्तुति दी। सभा के अध्यक्ष के. के. जैन ने मुख्य अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया। आभार ज्ञापन एवं संचालन सभा के महामंत्री नरपत मालू ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मदिवस पर ४ दिवसीय कार्यक्रम

उदयपुर, 12 जुलाई। अणुव्रत समिति उदयपुर द्वारा अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के 91वें जन्मदिवस ''प्रज्ञा दिवस'' पर 4 दिवसीय कार्यक्रमों के तहत 8 जुलाई को महाराणा भूपाल चिकित्सालय में भर्ती रोगियों में खाद्य सामग्री वितरित की गयी। 9 जुलाई को प्रातः 9 बजे पंचवटी स्थित हीरो होंडा रायल शोरूम पर शब्बीर के. मुस्तफा के नेतृत्व में 51 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। 10 जुलाई को मुख्य समारोह विज्ञान समिति अशोक नगर में आयोजित हुआ। इस अवसर पर ''अचार्य महाप्रज्ञ अणुव्रत सेवा सम्मान'' का भी क्रम रहा। 11 जुलाई को प्रातः 9 बजे केन्द्रीय कारागार में वन विभाग के सहयोग से 101 फलदार वृक्षों का रोपण किया गया एवं पर्यावरण रोकथाम संगोष्ठी आयोजित हुई। सभी कार्यक्रमों में समिति के अध्यक्ष गणेश डागलिया एवं प्रचार-प्रसार मंत्री राजेन्द्र सेन का सराहनीय श्रम रहा।

जन्मधरा टमकोर में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मदिवस समारोह

टमकोर। समणी प्रतिभाप्रज्ञा के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का 91वां जन्मदिवस विविध आयामों के साथ बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया। सर्वप्रथम जन्मस्थल पर पहुँचकर विश्व शांति प्रार्थना की गयी। महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा भव्य प्रभात फेरी निकाली गयी। महाप्रज्ञ जन्मधरा टमकोर की गली-गली महाप्रज्ञ के वरदायी अवदानों के जयघोषों से गूंज उठी। महाप्रज्ञ जन्मस्थली में पहुँचकर सबने सामूहिक सद्भावना सभा में भाग लिया। तत्पश्चात् प्रज्ञा भवन में समणीजी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने कहा महाप्रज्ञ का जीवन ज्ञान-योग, ध्यान योग और कर्मयोग का संगम था। उनके जीवन को पढ़ना और समझना स्वयं के जीवन को उन्नत बनाने का उपाय है। उनकी जन्म जयंती को रचनात्मक रूप देने के लिए आज हमने 'महात्मा महाप्रज्ञ' पुस्तक पर आधारित विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अनेक प्रतियोगियों ने कठिन परिश्रम करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया। पवन प्रजापत का ग्रुप प्रथम स्थान पर रहा। विकास सामी एवं मनीष धेरतरवाल का क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान रहा। ईशान खान ने पुस्तक स्वाध्याय के पश्चात् आचार्य महाप्रज्ञ पर प्रेरक कविता का संगान किया। क्विज प्रतियोगिता का संचालन समणी सुमेधाप्रज्ञा ने किया। महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल द्वारा प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। जन्मधरा के आबाल वृद्धों ने अपने लाडले सपूत को याद किया।

भूल-सुधार

अणुव्रत पाक्षिक 1-15 जुलाई, 2010 अंक के कवर पृष्ठ 2 पर फोटो नं. 1 के नीचे बैंगलोर में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह में समण सिद्धप्रज्ञ के स्थान पर मुनि जिनेशकुमार पढ़े। भूलवश मुनि जिनेशकुमार के बजाय समण सिद्धप्रज्ञ छप गया। *संपादक*

www.terapanthinfo.com

आचार्य तुलसी का 14वां महाप्रयाण दिवस

आचार्य तुलसी जीवन निर्माता एवं सृजन शिल्पी थे

कोलकाता

स्थानीय सभा के तत्वावधान में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 14वां महाप्रयाण दिवस प्रिटोरिया स्ट्रीट में मनाया गया। टॉलीगंज ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने ''तुलसी अष्टकम्'' का संगान किया। साध्वी कनकश्री ने गुरुदेव की पावन स्मृति करते हुए कहा आचार्य तुलसी का व्यक्तित्व अथाह प्राण ऊर्जा का पुंज था। वे सृजन शिल्पी थे, जीवन निर्माता थे। साध्वीश्री ने उनकी अपूर्व शक्ति, अपूर्व भक्ति और अपूर्व प्रशासनिक क्षमता का विश्लेषण करते हुए कहा गुरुदेव के प्रबल पुरुषार्थ में अपूर्व शक्ति प्रकट होती थी। उनकी भक्ति अपूर्व थी, उसकी निष्पत्ति है आगम-संपादन का महान अनुष्ठान। उनकी अनुशासना विलक्षण थी, जिससे संघ ने प्रगति के शिखरों का स्पर्श किया। आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण और साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जैसे विरल व्यक्तित्वों का निर्माण कोई तुलसी जैसे गुरु ही कर सकते हैं।

साध्वी मधुलता ने कहा स्मृति अतीत की होती है। आचार्य तुलसी अपने विचारों के रूप में, कर्तृत्व के रूप में आज भी हमारे प्रत्यक्ष हैं। वे कालजयी हैं, कालातीत हैं। इस अवसर पर साध्वी मधुलेखा ने भी अपने विचार रखे। साध्वीवृंद ने भावपूर्ण गीत का संगान कर आचार्य तुलसी को अपनी श्रद्धा समर्पित की। आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस पर 28-29 जून 2010 दो दिनों तक चला। प्रिटोरिया स्ट्रीट की बहनों ने गीत द्वारा अभ्यर्थना की। बनेचंद मालू, दिलीप मरोठी, कुलदीप मुणोत, जंवरीमल नाहटा, सूरज बरड़िया, कमला छाजेड़ ने प्रासंगिक विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन तरुण सेठिया व महावीर प्रताप दूगड़ ने किया।

शेरपुर

साध्वी शुभवती के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का महाप्रयाण दिवस मनाया गया। प्रातः 7 से 8 बजे तक 1 घंटा जप का आयोजन हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन हुआ। प्रारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। संयोजन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के निदेशक संजय भाई ने किया। नरेश गर्ग ने भाषण, बसंत धावा ने गीतिका, सुनीता गर्ग ने भाषण, ज्ञानशाला के बच्चों ने नाटक व गीतिका के माध्यम से गणाधिपति तुलसी को याद किया। इस अवसर पर साध्वी सम्पूर्णयशा, साध्वी संवरप्रभा, साध्वी शुभवती ने अपने श्रद्धासिक्त विचार रखे।

पड़िहारा

साध्वी मदनश्री के सान्निध्य में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की 14वीं वार्षिक पुण्यतिथि का कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ रंजना दूगड़ के गीत से हुआ। साध्वी मदनश्री ने कहा गुरुदेव तुलसी हमारे रोम-रोम में बसे हुए हैं। उनकी स्मृति हम हर पल, हर क्षण करते जाएं, उनके बताए उपदेशों को अपने जीवन में उतारें। साध्वी अमितरेखा ने अणुव्रत और विसर्जन का महत्व बताते हुए उस अलौकिक शक्ति पुंज की स्वरचित कविता के माध्यम से अभ्यर्थना की। साध्वी संघप्रभा ने कहा गुरुदेव तुलसी का जीवन अध्यात्म की प्रयोगशाला था, उन्होंने समय-समय पर प्रयोग करके अपने जीवन को इतना विशाल बनाया जिससे वे जन-जन के आचार्य बन गए। धर्मचंद गोल्छा, अमरचंद सुराणा, प्रभा सुराणा तथा रतनगढ़ महिला मंडल की मंत्री मंजू जैन ने गीत व संस्मरणों के माध्यम से अपने भावों की प्रस्तुति दी। संयोजन साध्वी संघप्रभा ने किया।

हाँसी

मुनि कुलदीपकुमार, साध्वी रामकुमारी, साध्वी विनयश्री एवं साध्वी विनयवती के सान्निध्य में सभा भवन में आचार्य तुलसी का 14वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। मुनि कुलदीपकुमार ने कहा आचार्य तुलसी का जीवन वरदान बनकर आया। जिससे संघ का खूब विकास हुआ। बालक तुलसी के दीक्षा के पूर्व की रोचक घटना सुनाई। साध्वी रामकुमारी ने कहा आचार्य तुलसी का दृष्टिकोण विस्तारवादी था। गंभीरता और सहनशीलता का गुण उनमें कूट-कूट कर भरा था। आचार्य तुलसी ने सभी सम्प्रदायों को जोड़ने का अनुपम कार्य किया। इस अवसर पर साध्वी शिवमाला ने आचार्य तुलसी के प्रभावशाली व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। साध्वी विनयप्रभा, साध्वी पावनप्रभा, साध्वी आत्मप्रभा, साध्वी सुविधिप्रभा, साध्वी आत्मयशा, साध्वी अर्हमप्रभा ने 'तुलसी का खजाना' गीत के माध्यम से अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, साम्प्रदायिक सौहार्द पर प्रकाश डाला। सभाध्यक्ष डालचंद जैन ने आचार्य तुलसी के जीवन पर प्रकाश डाला। पुलकित जैन ने गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मुकुलकुमार ने किया।

आसींद

मुनि सुरेशकुमार 'हरनावा' के सान्निध्य में तहसील मुख्यालय के एस.बी.बी.जे. बैंक चौक में आचार्य तुलसी का 14वां महाप्रयाण दिवस उल्लासपूर्वक मनाया गया। मुनि सुरेशकुमार 'हरनावा' ने आचार्य तुलसी को मानवता का मसीहा बताते हुए कहा गुरुदेव तुलसी उन लोगों में 'शुमार' नहीं थे जो मुंडेर के दीये की तरह हवा के हल्के झोंके से बुझ जायें, वे एक ऐसे चिराग थे जिसे आंधी और तूफान भी बुझा नहीं सकती। मुनिश्री ने राष्ट्रसंत के इतिहास के पन्नों को पलटते हुए रोमांचित करने वाले किस्से सुनाये। मुनिश्री ने इस मौके पर चंदेरी वाले की बड़ी याद सताती है गीत का संगान किया। कन्या मंडल आसींद ने तुलसी अष्टकम् का संगान किया।

इस अवसर पर मुनि सम्बोध कुमार, मुख्य वक्ता चांदमल सांड ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में कल्याणमल गोखरू, देवेन्द्र दूगड़, पूजा कांठेड़, कंचन कांठेड़, अनिल गोखरू, पंकज गोखरू, ज्योति दूगड़, लादूलाल दूगड़, सुभाष जैन, रवि रांका ने अपने भावपूर्ण विचारों से श्रद्धांजलि दी। स्वागत सोहनलाल कांठेड़ ने एवं आभार व्यक्त सभामंत्री तेजमल रांका ने किया। संचालन मुनि संबोधकुमार ने किया।

केलवा

मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्यतिथि पर सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा आचार्य तुलसी मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त मानवीय मूल्यों की रक्षा की। मुनि

www.terapanthinfo.com

मानवीय मूल्यों के सजग प्रहरी थे आचार्य तुलसी

आनन्दकुमार 'कालू' ने कहा आचार्य तुलसी ने संघ के नवम आचार्य पद पर आसीन थे। वे जैन परम्परा के यशस्वी, मनस्वी, वर्चस्वी, तेजस्वी आचार्य थे। आचार्य तुलसी उज्जवल नक्षत्र थे। उनका अवतरण अंधकार में प्रकाश का अवतरण था। वे अध्यात्म जगत के शिखर पुरुष थे। इस अवसर पर देवीलाल कोठारी, सुभाष कोठारी, गौरव कोठारी, किरण कोठारी, रतना कोठारी, रेखा सिंघवी, किरण कोठारी, सुमन नाहर, नीलू कोठारी, फूली बाई बोहरा, मोरी बाई इत्यादि ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर आधारित गीतिका, कविता के माध्यम से भावांजलि अर्पित की। संचालन मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने किया।

मणिनगर

आचार्य तुलसी का महाप्रयाण दिवस कांकरिया-मणिनगर सभा के तत्वावधान में साध्वी कनकरेखा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा समस्याओं के समाधान के रूप में अणुव्रत आज भी प्रासंगिक है। आचार्य तुलसी ऐसे धर्माचार्य थे, जिन्होंने धर्म के साथ राष्ट्रीय निर्माण पर जोर देते हुए नैतिक मूल्यों की स्थापना की। देश की आजादी के बाद देश में जो अराजकता फैली थी, उसको रोकने के लिए लगभग 60 हजार किलोमीटर अणुव्रत यात्रा की। इसके माध्यम से लोगों में हिंसा, भ्रूणहत्या, अनैतिक आचरण व निरापराधी पर आक्रमण नहीं करने एवं छोटे-छोटे संकल्पों के आधार पर मानवीय एकता में विश्वास रखने का संदेश दिया है। उनके अणुव्रत के नियमों को जीवन में उतारना चाहिए।

इससे पूर्व कांकरिया रेलवे यार्ड के सामने नवनिर्मित अणुव्रत सर्कल का लोकार्पण महापौर कानाजी ठाकुर ने किया। उन्होंने आचार्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि मानव कल्याण के लिए आचार्य तुलसी के सूत्रों को जीवन में उतारना चाहिए। इस सर्कल का निर्माण कार्य कन्हैयालाल झूमरमल दूगड़ ने कराया है।

इस अवसर पर अणुव्रत सर्कल से निकाली गई रैली में व्यसनमुक्ति, संयम ही जीवन है, निज पर शासन फिर अनुशासन के संदेश दिए। रैली वेद मंदिर पहुँच सभा में परिवर्तित हो गयी। यहाँ 'अणुव्रत का सपना - तुलसी का अपना' विषयक कार्यक्रम में बदल गयी। विशिष्ट अतिथि के रूप में अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर उपस्थित थे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में तुलसी भजन संध्या का आयोजन हुआ।

बरेटा

मुनि कमलकुमार ने आचार्य तुलसी की वार्षिक पुण्य तिथि पर कहा गुरुदेव तुलसी का जीवन अहिंसा, संयम और तप में रमा हुआ था। मात्र 11 वर्ष की अवस्था में दीक्षा लेकर 16 वर्ष की अवस्था में एक कुशल अध्यापक बन कर साधुओं को अध्यापन करवाना एक विलक्षण कार्य था। मात्र 22 वर्ष की अवस्था में विशाल धर्म पंथ का आचार्य बनना सभी के लिए आश्चर्य का विषय था। आचार्य तुलसी ने पूर्ण स्वस्थ अवस्था में आचार्य पद का विसर्जन कर एक स्वर्णिम इतिहास का सर्जन किया, जो कि आज की पदलिप्सा युग के लिए बोध पाठ बन गया।

कार्यक्रम में हर्षित जैन, प्रवीण जैन, राजन जैन, जगन्नाथ जैन, सुशील जैन, महेन्द्र जैन, मेघराज जैन, अमित जैन, भोजराज जैन, भूषण जैन, भगवानदास जैन, दर्शना जैन, कमला जैन, मीरा जैन, सोनाली जैन, उषा जैन, कविता जैन, कमलेश जैन, वीणा जैन, राजी जैन, कौशल्या देवी इत्यादि ने अपने विचार रखे। आचार्य श्री तुलसी महाप्रज्ञ सिलाई केन्द्र का शुभारंभ किया गया। इसका उद्घाटन भगवान दास जैन, मेघराज जैन, ज्ञानचंद जैन व तरसेम चन्द जैन ने किया। संचालन अशोक जैन ने किया।

रतनगढ़

देवचंद दूगड़ के निवास देवकुटीर में आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्य तिथि साध्वी राजीमती एवं अन्य साध्वियों के सान्निध्य में सभा, महिल मंडल के तत्वावधान में मनाई गयी। साध्वी राजीमती ने कहा आचार्य तुलसी ने अपने जीवन काल में इतने महान कार्य किये जिनकी सूची बनाना मुश्किल है। वे असाम्प्रदायिक धर्म के प्रवक्ता तथा प्रचारक थे। वे युगदृष्टा थे। उन्होंने युग को अणुव्रत के रूप में नया जीवन दर्शन दिया। नारी जागरण की दिशा में किये गये उनके कार्यों को अपूर्व कहा जा सकता है। उनके प्रवचन में जादू जैसा प्रभाव व आकर्षण था। साध्वी कानकंवर, साध्वी कुसुमप्रभा व साध्वी पुलकित यशा ने सामूहिक गीत का संगान किया। कार्यक्रम में रायचंद बैद, विजय सिंह आंचलिया, भीकमचंद दूगड़, हनुमानमल धारीवाल, विजयसिंह दूगड़, ताराचंद, माणकचंद दर्जी, महावीर प्रसाद, रूपचंद डागा, विनोद बैद, मोतीलाल भटेरा, अशोक बैद, हंसराज हीरावत उपस्थित रहे। संचालन साध्वी कुसुमप्रभा ने किया।

सूरत

साध्वी कंचनप्रभा के सान्निध्य में आचार्य तुलसी की पुण्यतिथि सभा के तत्वावधान में भटार रोड स्थित आशीर्वाद पैलेस में मनायी गयी। साध्वीश्री ने कहा आचार्य तुलसी एक विरल महापुरुष थे। आचार्य तुलसी ने आध्यात्मिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव का प्रयोग किया। उन्होंने धर्म को जीवन शैली के साथ जोड़कर अणुव्रत का सूत्र दिया। मुख्य अतिथि दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अश्विन भाई कापड़िया ने कहा कि आचार्य तुलसी संप्रदाय से परे संपूर्ण मानव जाति के धर्म गुरु थे। साध्वी मंजू रेखा ने भी विचार रखे। आचार्य तुलसी के संसारपक्षीय परिवार की ओर से विजय खटेड़ ने भावांजलि दी। सार्वजनिक ऐजुकेशन सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष दिलीप मारफतिया एवं शिक्षाविद् रमण भाई पटेल सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

रतनगढ़ में आयोजित व्यसनमुक्ति रैली का दृश्य

www.terapanthinfo.com

सर्वांगीण विकास का आधार है अहिंसा

बाढ़-बिहार। सृजन का सुनहरा संसार, स्नेह, करुणा, संवेदना की शीतल-मन्द समीर और विहंसता विश्व अहिंसा की देन है। सृष्टि के सर्वांगीण विकास का आधार है अहिंसा। आज भौतिकवाद, भोगवाद, पाखंडवाद और अंध श्रद्धावाद सृष्टि को नरक बनाने पर उतारु हैं। ऐसे में भगवान महावीर के विचार अहिंसावाद, कर्मवाद, अनेकांत और समतावाद ही सृष्टि को बचा सकता है। ये विचार अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र बाढ़ में आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करते हुए बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अंजेश कुमार ने व्यक्त किये। उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के अहिंसा दर्शन को स्थायी शांति का आधार और लोकतंत्र की रक्षा का अहम् आयाम माना।

विषय प्रवेश करते हुए अहिंसा प्रशिक्षक प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' ने अहिंसा के चार आधार सिद्धांत और इतिहास, हृदय परिवर्तन, जीवन शैली परिवर्तन तथा रोजगार प्रशिक्षण के विशिष्ट तत्वों का उल्लेख किया। गांधी-विनोबा के शांतिपूर्ण-सहअस्तित्व मूलक समाज संरक्षणा का आधार है अहिंसा प्रशिक्षण। डॉ. अशोक कुमार सिंह ने सारगर्भित विचार रखे। कार्यक्रम में रविरंजन कुमार, नीलम सिन्हा, मंजू कुमारी, शाहिन प्रवीण, गजाला प्रवीण सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने विचार रखे। स्वागत भाषण पुरुषोत्तम कुमार ने तथा आभार ज्ञापन अहिंसा प्रशिक्षक सुधीर कुमार गुलशन ने किया।

अहिंसा के संदर्भ में समझें त्याग का महत्व

जयपुर। साध्वी मर्यादाश्री व साध्वी फूलकुमारी के सान्निध्य में महिला मंडल के तत्वावधान में कन्या मंडल हेतु ''अहिंसा के संदर्भ में समझें त्याग का महत्व'' विषयक गोष्ठी का आयोजन हुआ। साध्वी फूलकुमारी ने कहा अहिंसा और त्याग को अपनाकर हमें अपने परिवार में रहकर कला युक्त जीवन जीना है। साथ ही कन्याओं ने भी अपने विचार रखे। दूसरे चरण में मुख्य अतिथि मनोचिकित्सक डॉ. प्रज्ञा देशपांडे से कन्याओं और महिलाओं ने समस्याओं संबंधित सवाल-जवाब किये। स्वागत भाषण सोनल नागौरी ने किया। आस्था बैद ने कहा संयमी व अहिंसक व्यक्ति कभी गलत काम नहीं कर सकता। अंशिका सेठिया ने कहा अशुभ प्रवृत्ति भी एक हिंसा है इसलिए हमें शुभ प्रवृत्ति का आचरण करना चाहिए। आचार्य तुलसी द्वारा दिये गये अणुव्रतों को अपनाकर त्याग करना सीख सकते हैं। अंत में मुख्य अतिथि का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन रिमझिम जैन ने एवं आभार ज्ञापन सुमन बोरड़ ने किया।

अणुव्रत विज्ञ, विशारत परीक्षा

शेरपुर। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर के अहिंसा प्रशिक्षक संजय भाई के नेतृत्व में टिब्बा एवं गुरबशपुरा में अणुव्रत विज्ञ एवं विशारद की परीक्षाएं हुई। संजय भाई ने कहा नैतिक शिक्षा का मूलभूत संबंध संस्कारों से है। नैतिक मूल्यों के विकास के लिए इस तरह की अणुव्रत परीक्षाओं का आयोजन अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र शेरपुर द्वारा प्रतिवर्ष होता है। टिब्बा में परमिन्द्र कौर एवं हरबंश कौर के सहयोग से परीक्षाएं ली गयी। गुरबशपुरा में कर्मजीत कौर, कालाबुला मंजीत कौर एवं दीपिका रानी ने परीक्षाओं में पर्यवेक्षक का कार्य किया। परीक्षा में सम्मिलित लोगों को प्रेरित करने हेतु प्रोत्साहन स्वरूप अणुव्रत प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाता है।

"आचार्य महाप्रज्ञ - अहिंसा के महापथिक"

सरदारशहर। आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को उजागर करने वाले ग्रंथ ''आचार्य महाप्रज्ञ - अहिंसा के महापथिक'' का विमोचन उनके 91वें जन्मदिवस पर सरदारशहर में आचार्य महाश्रमण के कर-कमलों से हुआ। आचार्य महाश्रमण ने कहा मैं इस ग्रंथ को स्वीकार करता हूँ, यह ग्रंथ सर्वोपयोगी हो। ग्रंथ का प्रकाशन के.बी.डी. फाउंडेशन कोलकाता ने किया। है। ग्रंथ की परिकल्पना, संपादन व संकलन कमल दूगड़ ने किया। इस ग्रंथ में आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य के चयनित अंशों के साथ ही देश भर के राजनीतिज्ञ, उद्योगजगत, अध्यात्म व साहित्यिक क्षेत्र से विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त सौ व्यक्तियों के आलेख भी समाहित हैं।

मुख्य अतिथि सांसद सोमेन मित्रा, विशिष्ट अतिथि राजस्थान के पर्यटन मंत्री राजेन्द्र गुड्डा, विशिष्ट अतिथि बीकानेर के महाराज रविराज सिंह राठौड़ उपस्थित थे।

कार्यक्रम में भूतपूर्व आई.पी.एस. आर.पी. सिंह, तुलसी दूगड़, ललित सिंघी, सुरेन्द्र बोरड़, हरि प्रसाद शर्मा, शंकर बागड़ी, विनोद बैद, राजकरण सिरोहिया, बाबूलाल सुराणा, राजेन्द्र दूगड़, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया, महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिंडालिया, अभातेयुप के अध्यक्ष गौतम डागा, प्रमोद नाहटा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अणुव्रत समिति गंगापुर की बैठक

गंगापुर। अणुव्रत समिति गंगापुर की एक बैठक संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण के मार्गदर्शन एवं प्रो. एम.के. रांका एवं बंशीलाल मंडोवरा की अध्यक्षता में देवरमण भवन में आयोजित हुई। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। समिति के मंत्री मदनलाल मंडोवरा ने गत बैठक की कार्यवाही का पठन, बंशीलाल मंडोवरा द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन हुआ।

गंगापुर रायपुर प्रखंड स्तर पर 'आतंकवाद एक समस्या और समाधान' विषयक निबंध प्रतियोगिता कक्षा 8 से 12 तक के छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित करने का निर्णय लिया गया। चयनित शिक्षक एवं प्रतिभावान छात्र-छात्राओं का सम्मान समारोह शिक्षक दिवस पर करने का निश्चिय किया गया। साथ ही अणुव्रत ग्राम मैलोनी की दीवारों पर श्लोगन लिखवाने एवं पूर्व में स्थापित अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग्स के नवीनीकरण का निर्णय लिया गया।

बैठक में देवेन्द्र कुमार हिरण, मांगीलाल शर्मा, प्रो. एम.के. रांका, बंशीलाल मंडोवरा, रमेश हिरण, मदनलाल मंडोवरा, डॉ. जयसिंह जेतमाल, हस्तीमल नोलखा, कालूराम जीनगर, बसंतीलाल हिरण, गंगा सिंह चौहान व भंवरलाल बलाई उपस्थित थे।

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाश्रमण : एक विरल सत्यान्वेषक

डॉ. बच्छराज दूगड़

आचार्य महाश्रमण : संक्षिप्त विवरण

जन्म	: 13 मई, 1962, सरदारशहर
माताश्री	: नेमा देवी
पिताश्री	: झूमरमल
दीक्षा	: मुनि सुमेरमल लाडनूं
आचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी	: 16 फरवरी 1986, उदयपुर मर्यादा महोत्सव
साझपति (ग्रुप लीडर)	: 14 मई 1986, ब्यावर में अक्षय तृतीया
महाश्रमण पद	: 9 सितंबर 1989, लाडनूं
आचार्य पद	: 9 मई 2010, सरदारशहर (11वें आचार्य)
दुर्लभ संयोग	: 12 वे वर्ष में दीक्षा, 24 वर्ष में अंतरंग सहयोगी, 36 वर्ष में युवाचार्य मनोनयन, 48 वें वर्ष की संपन्नता पर आचार्य पदाभिषेक

13 मई, 1962 को राजस्थान के एक कस्बे सरदारशहर में जन्मे आचार्य महाश्रमण एक सहज जिज्ञासु हैं। उनकी जिज्ञासुवृत्ति सत्य की उत्कट अभिलाषा लिए हुए है जो निरन्तर परत-दर-परत सत्य को अनावृत करती रहती है। उनके ज्ञान की गंभीरता का रहस्य भी यही है। अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और मानवीय चरित्र के उत्थान के लिए समर्पित आचार्य महाश्रमण आर्षवाणी के साथ अध्यात्म एवं नैतिकता, सामंजस्य एवं सौहार्द, शांति और सह- अस्तित्व जैसे मानवीय मूल्यों के प्रखर वक्ता हैं। युगीन समस्याओं के समाधायिक विचारक एवं ऋषिता के रूप में प्रतिष्ठित आचार्य महाश्रमण 1989 में महाश्रमण की उपाधि एवं 1997 में युवाचार्य पद से अलंकृत हुए।

आचार्य महाप्रज्ञ ने महाश्रमण मुनि मुदित को युवाचार्य पद देते हुए कहा था 'आज मैं सचमुच निश्चिंत हो गया हूँ।' आचार्य महाप्रज्ञ ने वि.सं. 2053 की दीपावली को लिखे उत्तराधिकार पत्र में यह उल्लेख किया था-'मुनि मुदित कुमार की अध्यात्मनिष्ठा और आचारनिष्ठा ने मेरे मन को प्रभावित किया है। उनकी विनम्रता भी आकृष्ट करती रही है।'

भारतीय परंपरा में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। आचार्य महाश्रमण का यह सौभाग्य भी है कि उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ जैसे साक्षातधर्मा पथप्रदर्शक प्राप्त हुए। वे आधुनिक युग के नचिकेता हैं जो अनावृत सत्य को जानने के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर गुरु-चरणों में तत्पर हैं। उनकी गुरुभक्ति अद्वितीय है। गुरु के मुंह से निकला हर शब्द, गुरु का हर इंगित उनके लिए ब्रह्मवाक्य है।

आचार्य महाश्रमण सत्य के अन्वेषक हैं। वस्तुतः एक धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण दायित्व का भार जिसके कंधे पर हो, उसकी सबसे बड़ी संपदा सत्य ही होती है। सत्यान्वेषक के लिए पहली शर्त है उद्दाम अनुसंधित्सा। आचार्य महाश्रमण ऐसे ही जिज्ञासु हैं। जिज्ञासा में उन्हें न कोई संकोच है और न वे अपनी जिज्ञासाओं की इतिश्री करते हैं। स्वाध्याय, प्रश्न-प्रतिप्रश्न, श्रवण और मनन द्वारा निरंतर परत-दर परत वे सत्य को अनावृत करते रहते हैं। सत्य को तर्क द्वारा जाना जाता है, किंतु सत्य पर स्थिर रहने की सामर्थ्य श्रद्धा ही प्रदान करती है। आचार्य महाश्रमण में इसे साक्षात् घटित होते देखा जा सकता है।

सत्य अथवा धर्म का ही दूसरा पर्याय ऋजुता है। स्वभाव में स्थित हुए बिना ऋजु नहीं बना जा सकता। आचार्य महाश्रमण अपनी सरलता के कारण सहज ही जनता के विश्वास-भाजन बने हैं। उनकी सरलता, उनकी आध्यात्मिक ऊंचाई को प्रतिध्वनित करती है। आचार्य महाश्रमण की प्रकृति अत्यन्त वात्सल्यपूर्ण है अहिंसा यात्रा 2004-05 के अनन्तर बाल वैरागी अंकित साथ थे। उम्र मात्र 9-10 वर्ष रही होगी। इस कच्ची उम्र में साथ-साथ यात्रा करना, अपने कार्य स्वयं निपटाना एक बच्चे के लिए अत्यन्त कठिन है।

आचार्य महाश्रमण एक सृजनशील साहित्यकार, अखण्ड परिव्राजक, कुषल समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। अहिंसा यात्रा के अनन्तर आपकी अमीमय वाणी ने लाखों ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित किया। धर्म के बारे में फैली मिथ्या धारणाओं, धार्मिक कर्म-काण्डों एवं अंधविश्वासों पर वे तीखे प्रहार करते हैं।

'चरैवेति-चरैवेति'- इस औपनिषद्दिक वाक्य को धारण कर वे लाखों-लाखों लोगों को नैतिक जीवन जीने एवं अहिंसात्मक जीवनशैली की प्रेरणा के लिए पदयात्राएं करते हैं। पदयात्राओं से उपजा अनुभव उनकी लेखनी को ऊर्जा देता है जिससे सृजित साहित्य अल्प विकसित चेतना वाले मनुष्यों के लिए विकास का आलम्बन बनता है।

सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं से वे गहरा सरोकार रखते हैं। महत्त्वपूर्ण यह है कि वे केवल समस्याओं की ही बात नहीं करते, उनके समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। शांत, मृदु एवं विनम्र व्यवहार से संवृत्त; आकांक्षा-स्पृहा से विरक्त; जीवन एवं जगत के अज्ञात रहस्यों को अनवरत खोजने में रत और अपनी अंतःप्रज्ञा से जनकल्याण के लिए समर्पित युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना न तो संभव है और न ही उचित। अभी तो सूर्योदय का प्रकाश है, दोपहर के प्रकाश का दर्शन अभी शेष है। भविष्य के गर्भ में छिपे इस देदीप्यमान व्यक्तित्व से तेरापंथ और जैन समाज ही नहीं, संपूर्ण मानवता को बड़ी आशाएं हैं।

जैन विश्व भारती, लाडनूं

www.terapanthinfo.com